जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

कोटा

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

फोनः- 2386031, 2386032 फैक्सः- 0744-2386033 वर्षः 50 संख्याः 173 प्रभात कोटा, मंगलवार 8 अप्रैल, 2025 कोटा/24/2012-14 पृष्ठ 8 मूल्य 2.50 रु.

8 व 9 अप्रेल को गुजरात में ए.आई.सी.सी. की बैठक है

अहम् सवाल है कि बैठक के बाद कांग्रेसाध्यक्ष खड़गे का भविष्य क्या होगा? क्योंकि, जब भी गुजरात में ए.आई.सी.सी. बैठक हुई है, उसके बाद कांग्रेसाध्यक्ष को विवादों के कारण हटना पड़ा है

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 7 अप्रैल। आठ और नौ अप्रैल को अहमदाबाद में एआईसीसी अधिवेशन होने जा रहा है, पर कांग्रेस पर नजदीक से नजर रखने वाले लोगों तथा विश्लेषकों के मन में एक सवाल खलबली पैदा कर रहा है कि इस एआईसीसी अधिवेशन के बाद, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे का भविष्य क्या होगा। यह गुजरात में आयोजित होने वाला छटा एआईसीसी अधिवेशन होगा। उल्लेखनीय है कि गुजरात में हुए विभिन्न एआईसीसी अधिवेशनों की अध्यक्षता करने वाले 5 कांग्रेस अध्यक्षों के प्रति समय उदार नहीं रहा है। या तो वे पार्टी छोड़ गये और उन्होंने अपनी स्वयं की नयी पार्टी बना ली या फिर उन्होंने स्वयं को कांग्रेस से अलग कर लिया।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना 28 दिसम्बर, 1885 को हुई थी।

इसका पहला अधिवेशन गुजरात के अहमदाबाद में 23-26 दिसम्बर 1902 को सुरेन्द्र नाथ बनर्जी की अध्यक्षता में हुआ था। बाद में, पार्टी के अंदर पैदा हुये मतभेदों तथा उनके खिलाफ पार्टी में हुई बगावत के कारण, उन्होंने पार्टी छोड़ दी थी तथा अपना नया संगठन बना लिया था।

इसके बाद, 26-27 दिसम्बर, 1907 को पार्टी का अधिवेशन सूरत में हुआ था, जिसकी अध्यक्षता कांग्रेस अध्यक्ष रास बिहारी बोस ने की थी। वे भी मतभेदों के कारण पार्टी छोड़ गये थे।

तीसरी बार, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अधिवेशन 27-28 दिसम्बर, 1921 को फिर से अहमदाबाद, गुजरात

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- गुजरात में ए.आई.सी.सी. की बैठक 1902 में हुई थी तथा बैठक के बाद अध्यक्ष सुरेन्द्र नाथ बनर्जी को हटना पड़ा था, उनके खिलाफ आंतरिक विद्रोह के कारण।
- दूसरी बार, 1907 में रास बिहारी बोस की अध्यक्षता में गुजरात में बैठक आयोजित हुई थी और उन्हें भी आंतरिक मतभेदों के कारण बैठक के बाद पार्टी छोड़नी पड़ी थी।
- तीसरी बार,1921 में ए.आई.सी.सी. की बैठक गुजरात में हकीम अजमल खां की अध्यक्षता में हुई थी, उनका भी वो ही हश्र हुआ था, बैठक में, जो पहले दो अध्यक्षों का हुआ था।
- चौथी बार, ए.आई.सी.सी. की बैठक 1938 में हुई, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की अध्यक्षता में। बोस ने गांधी जी के उम्मीदवार को पार्टी के आंतरिक चुनाव में हराया था तथा यह मतभेदों का बड़ा कारण बना और सुभाष बाबू को अध्यक्ष के पद से इस्तीफा देना पड़ा था।
- पाँचवी बार गुजरात में ए.आई.सी.सी. की बैठक नीलम संजीवा रेड्डी की अध्यक्षता में हुई तथा बैठक के बाद कांग्रेस में विभाजन हुआ और इस विभाजन के बाद नीलम संजीवा रेड्डी की संयुक्त कांग्रेस की अध्यक्षता तो खत्म होनी ही थी।
- अब छठी बार, गुजरात में ए.आई.सी.सी. की बैठक आयोजित की गई है। अतः स्वाभाविक सवाल है, इस बैठक के बाद, क्या कांग्रेस के अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे की पार्टी की अध्यक्षता सुरक्षित और बरकरार रहेगी तथा ऐतिहासिक परम्परा टूटेगी।

रसोई गैस महंगी हुई

नई दिल्ली, 07 अप्रैल। पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने सोमवार को घोषणा की कि सब्सिडी वाले और गैर-सब्सिडी वाले दोनों उपभोक्ताओं के लिए 14.2 किलोग्राम वाले एलपीजी सिलेंडर की कीमत में 50 रुपए प्रति सिलेंडर की बढ़ोतरी की गई है। यह बढ़ोतरी 8 अप्रैल से प्रभावी होगी। यह मूल्य वृद्धि प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना (पीएमयूवाई) के लाभार्थियों के साथ-साथ दूसरे उपभोक्ताओं पर भी लागू होगी।

केन्द्रीय मंत्री ने कहा, "पीएमयूवाई लाभार्थियों के लिए कीमत 500 रुपए से बढ़ कर 550 रुपए प्रति सिलेंडर हो जाएगी। दूसरे उपभोक्ताओं के लिए यह कीमत 803 रुपए से बढ़ कर 853 रुपए हो जाएगी। संशोधन नियमित अंतराल पर की जाने वाली समीक्षा के अधीन है, जो हर दो से तीन सप्ताह में होती है।"

- सरकार ने सब्सिडी वाले एवं वगैर सब्सिडी वाले एलपीजी सिलैण्डरों पर 50 रु. बढ़ाने की घोषणा की।

1 अप्रैल को तेल विपणन कंपनियों ने वाणिज्यिक एलपीजी सिलेंडर की कीमत कम कर दी थी।

19 किलोग्राम वाले वाणिज्यिक एलपीजी सिलेंडर की कीमत में 41 रुपए की कटौती की गई है। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में संशोधित खुदरा बिक्री मूल्य अब 1,762 रुपए प्रति सिलेंडर है।

भारत घरेलू खपत का लगभग 60 प्रतिशत एलपीजी आयात करता है। देश में एलपीजी की कीमत अंतरराष्ट्रीय बाजार से जुड़ी हुई है।

तीन महीने में तीसरी बार राहुल गांधी बिहार पहुँचे

वक्फ संशोधन विधेयक के पारित होने में नीतीश की भूमिका से, कांग्रेस का मानना है, मुस्लिम मतदाता नीतीश कुमार से रुष्ट हैं, तथा और दूर हो जाएंगे

-श्रीनंद झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 7 अप्रैल। जिन दो राज्यों में कांग्रेस तीन दशक पहले अपनी प्रभावी स्थिति खो चुकी है, उन राज्यों में पार्टी का पुनरोद्धार करने तथा उसे एक नया रुप देने के उद्देश्य से, राहुल गांधी और कांग्रेस नेतृत्व ने उन राज्यों पर अपनी नजरें जमा रखी हैं। इन राज्यों में से एक, भाजपा-शासित गुजरात, में कांग्रेस ने अपनी वर्किंग कमेटी की मीटिंग आयोजित करने का निर्णय लिया है। और दूसरा राज्य चुनावाधीन बिहार है, जहाँ राहुल गांधी पिछले तीन महीनों में आज तीसरी बार दौरे पर गये हैं।

वक्फ विधेयक पारित होने के बाद, विपक्षी गठबंधन बिहार के आगामी चुनावों में अपने अवसर के सपने सँजो रहा है। ज्ञातव्य है कि बिहार में मुस्लिम मतदाता, राज्य के कुल मतदाताओं के 17 प्रतिशत हैं।

जातिगत जनगणना तथा पिछड़ा वर्ग-समर्थन के अभियान को जारी रखते हुये, राहुल ने आज पटना में एक विचार गोष्ठी को सम्बोधित किया, जिसमें उन्होंने कांग्रेस की पूर्ववर्ती असफलताओं से सबक लेते हुये, पुरानी गलतियों को सुधारने की बात कही। उन्होंने कहा कि वे इस गलती को स्वीकार करने वाले पहले व्यक्ति होंगे कि पार्टी राज्य का बहुमुखी विकास करने में असफल रही तथा पार्टी ने दलित वर्गों के सशक्तीकरण के मामले में शिथिलता एवं लापरवाही बरती। राहुल ने कहा, "हमने अपेक्षित उत्साह से काम नहीं किया। लेकिन हम बिहार में हुई अपनी गलतियों से सबक ले रहे हैं तथा हम, अपने गठबंधन पार्टनरों के साथ आगे बढ़ेंगे, और एससी, एसटी, ओबीसी, ईबीसी एवं अल्पसंख्यकों के उत्थान के लिये काम करेंगे।" इससे पहले, राहुल "पलायन रोको, नौकरी दो" पद यात्रा में शामिल होने बेगूसराय गये थे। इस पद यात्रा का आयोजन पार्टी की युवा एवं विद्यार्थी शाखा ने किया था, ताकि बिहार की

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- कांग्रेस का सोच है, मुस्लिम मतदाता, जो बिहार में लगभग 17 प्रतिशत हैं, अब कांग्रेस की ओर आएगा, तथा जातिगत मतगणना तथा बैकवर्ड समर्थन सोच के कारण कांग्रेस बिहार में अच्छी स्थिति में रहेगी।
- इस सोच में कांग्रेस का इतना विश्वास है, कि राहुल गांधी अब सार्वजनिक रुप से स्वीकार करने लगे हैं, कि उनकी पार्टी बैकवर्ड जातियों के विकास के लिये पूर्ण जोश व उत्साह से काम करने में चूक गई थी।
- राहुल गांधी ने पटना में एक सिमपोज़ियम को सम्बोधित करते हुए पार्टी की पुरानी गलती स्वीकार की।
- बेगूसराय में, जो एनएसयूआई अध्यक्ष, कन्हैया का घर भी है, राहुल ने नारा दिया, "पलायन रोको, नौकरी दो", और उन्होंने बिहार का पुराना रोग, बेरोजगारी व "माइग्रेशन" (पलायन) को हाई-लाइट किया।

तेलंगाना के मु.मंत्री को भारी पड़ा, लोकप्रिय फिल्म एक्ट्रेस पर झूठा आरोप लगाना

रैवन्त रेड्डी ने दिया मिर्ज़ा पर आरोप लगाया कि उन्होंने ए.आई. जैनरेटेड फोटोग्राफ लगायीं, आंदोलन का "हौव्वा" दिखाने के लिए

-लक्ष्मण वैंकट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 7 अप्रैल। तेलंगाना के मुख्यमंत्री एक "चार्मर" हैं जल्दी ही लोगों को लुभा लेते हैं और मीडिया तथा अन्य कथानकों का अपने फायदे के लिए इस्तेमाल करने में माहिर हैं पर सैलिब्रिटीज़ पर कंचा गाचीबोवली जंगल पर फक न्यूज़ व एआई से बने वीडियो फैलाने का आरोप लगाकर उन्होंने खुद के लिए मुसीबत खड़ी कर ली है।

बेहद साहसी सेलिब्रिटीज़ में से एक दिया मिर्ज़ा, जो हैदराबाद से ही हैं, ने इस पर कड़ी प्रतिक्रिया दी और रैवन्त रेड्डी की इस बात के लिए कड़ी निंदा की क्योंकि इन्होंने उन पर झूठे एआई वीडियो व फोटो फैलाने का झूठा आरोप लगाया। दिया मिर्ज़ा ने 400 एकड़ वन भूमि, जिसे सरकार नीलाम करना चाहती है, से पेड़ काटने के खिलाफ आंदोलन कर रहे छात्रों के पक्ष में कुछ वीडियो व तस्वीरें पोस्ट की है। रेड्डी का आरोप है कि ये वीडियो व तस्वीरें एआई से तैयार हैं। फिल्म स्टार दिया मिर्ज़ा, जो संवेदनशील किरदारों और शानदार अभिनय के लिए जानी जाती है, ने अपने एक्स एकाउण्ट पर रैवन्त रेड्डी के आरोपों को "पूरी तरह से झूठ" करार दिया और कहा कि मैंने एआई जनरेटेड फोटो व वीडियो का इस्तेमाल नहीं किया है। उन्होंने कहा कि तेलंगाना के मुख्यमंत्री ने कल एक ट्वीट किया जिसमें कंचा गाचीबोवली के बारे में कुछ दावे किए उनमें एक था कि 400 एकड़ जमीन, जिसे सरकार बेचना चाहती है, की जैवविविधता को बचाने के विरोध प्रदर्शन कर रहे छात्रों के पक्ष में मैंने फेक एआई जनरेटेड फोटो व वीडियो पोस्ट किए हैं। यह एक गलत बयान है मैंने ऐसी एक भी तस्वीर या वीडियो पोस्ट नहीं किया है जो एआई से तैयार किया गया हो।

अभिनेत्री ने मीडिया और राज्य सरकार पर भी निशाना साधते हुए कहा, "मीडिया और तेलंगाना सरकार को ऐसे दावे करने से पहले अपने तथ्यों की जांच करनी चाहिए।"

सोशल मीडिया पर कंचा गाचीबोवली में पेड़ों को गिराने से

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- दिया मिर्ज़ा ने कड़ा विरोध किया कि मु.मंत्री को तथ्य जान लेने चाहिए, कोई आरोप लगाने से पहले।
- अन्य फिल्म हस्तियों, जैसे, जॉन अब्राहम, रवीना टण्डन ने भी दिया मिर्ज़ा का पूर्ण समर्थन किया।

पुनर्गठन व परिसीमन के बाद पंचायत चुनाव कार्यक्रम तय होगा

जयपुर, 7 अप्रैल। प्रदेश की 6759 पंचायतों के चुनाव स्थगित कर, निवर्तमान सरपंचों को प्रशासक बना दिए जाने के खिलाफ दायर याचिका में राज्य सरकार ने सोमवार को हाईकोर्ट में अतिरिक्त शपथ पत्र पेश किया है। वहीं, सोमवार को मामले का नंबर नहीं आने के कारण मुख्य न्यायाधीश एमएम श्रीवास्तव और जस्टिस आनंद शर्मा की बैंच में मामले की चल रही सुनवाई दो सप्ताह के लिए टल गई है।

राज्य सरकार की ओर से पेश शपथ पत्र में कहा गया कि पंचायतों और नगरपालिकाओं के पुनर्गठन व परिसीमन के लिए मार्च महीने में नोटिफिकेशन जारी कर दिया है। यह प्रक्रिया मई-जून महीने तक चलेगी और उसके बाद ही पंचायतों का चुनाव कार्यक्रम तय किया जाएगा। दरअसल, गिर्राज सिंह व अन्य की पीआईएल में पिछली सुनवाई पर खंडपीठ ने राज्य सरकार व चुनाव आयोग से पूछा था कि

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- राज्य सरकार ने हाई कोर्ट में अतिरिक्त शपथ पत्र पेश कर यह जानकारी दी।

स्टालिन तमिलनाडु का विधानसभा चुनाव, मोदी बनाम स्टालिन संघर्ष बनाने की पूरी कोशिश कर रहे हैं

ममता बनर्जी की भांति स्टालिन का भी तमिलनाडु के मीडिया पर पूरा कंट्रोल है तथा वो स्थानीय मीडिया का एजेण्डा निर्धारित कर रहे हैं

-लक्ष्मण वैंकट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 7 अप्रैल। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री और द्रमुक प्रमुख एम.के. स्टालिन ने खुद को सीधे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मुकाबले में खड़ा कर दिया है। वे खुद को ऐसे प्रस्तुत कर रहे हैं, मानो सीधे प्रधानमंत्री को चुनौती दे रहे हैं, जैसे प.बंगाल में ममता बनर्जी दे रही हैं, जहाँ अगले वर्ष चुनाव हो रहे हैं। उन्होंने तमिलनाडु के पबंन ब्रिज के उद्घाटन समारोह में भाग नहीं लिया। इस पुल का उद्घाटन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने किया था। इसके बाद अन्नामलाई के नेतृत्व में भाजपा नेताओं ने हगांमा शुरु कर दिया और आरोप लगाने लगे कि स्टालिन ने उद्घाटन समारोह में भाग न लेकर प्रधानमंत्री का अपमान किया है। यही नहीं, जब प्रधानमंत्री राज्य में आए तो स्टालिन ने उनका स्वागत तक नहीं किया। उनकी बजाय उपमुख्यमंत्री पी. त्यागराजन ने प्रधानमंत्री का स्वागत किया। मुख्यमंत्री स्टालिन जो भी करते है या कर रहे हैं, उसमें पूरी सोची समझी रणनीति होती है। वे पूरे विषय को खुद के और प्रधानमंत्री के मुकाबले में बदल देते हैं। स्टालिन ने आरोप लगाया कि प्रधानमंत्री ने काचातीवू द्वीप वापस लेने की तमिलनाडु की मांग की उपेक्षा की है। स्टालिन के शब्दों से ऐसा लगता है, जैसे यह समस्या मोदी सरकार की देन है। स्टालिन ने कहा कि केन्द्र सरकार और मोदी तमिल विरोधी हैं।

प्रसंगवश बता दें कि स्टालिन द्वारा उठाये गये अधिकांश मुद्दे भावनात्मक है, जिन्होंने प्रधानमंत्री तथा भाजपा को तमिल-विरोधी रूप में चित्रित करने में स्टालिन की मदद की है। इन मुद्दों में शामिल हैं- भाषा का मुद्दा, परिसीमन का मुद्दा, तमिलनाडु के विद्यार्थियों को नीट से छूट दिये जाने की तमिलनाडु की माँग को खरिज किया जाना और अब वक्फ विधेयक का पारित होना।

राज्य को शिक्षा-फंड जारी करने से केन्द्र के इनकार को भी द्रमुक तथा उसका प्रचार-तंत्र, तमिलनाडु के प्रति केन्द्र के सौतेले व्यवहार के एक और उदाहरण के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं। ज्ञातव्य है कि द्रमुक का प्रचार तंत्र, कम से कम तमिलनाडु में तो, भाजपा के प्रचार तंत्र से कम नहीं पड़ता, बल्कि उसे पछाड़ने की कुव्वत रखता है।

ठीक पश्चिम बंगाल की तरह, जहाँ स्थानीय मीडिया पर ममता बनर्जी तथा उनकी पार्टी की पूरी पकड़ है, तमिलनाडु में द्रमुक के अपने स्वयं के बहुत ताकतवर मीडिया ब्रान्ड हैं तथा द्रमुक की मीडिया-प्रबंधन रणनीति पूरी तरह अभेद्य है।

इस क्षेत्रीय दल के पास इस मामले में जो ताकत है, उसका उसके राष्ट्रीय पार्टनर, कांग्रेस में राष्ट्रीय स्तर पर अभाव साफ दिखाई देता है।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- मोदी बनाम स्टालिन का वातावरण बनाने के लिए उन्होंने स्थानीय मुद्दे, डीलिमिटेशन, नई शिक्षा नीति, नीट परीक्षा का विरोध आदि मुद्दे उठाए और अब प्र.मंत्री मोदी की तमिलनाडु यात्रा में भी वे न प्र.मंत्री का स्वागत करने हवाई अड्डे गये और न ही प्र.मंत्री के समारोह में शरीक हुए।
- वे तमिलनाडु के पुराने मुद्दों को भी, जैसे काचातीवू टापू के विवाद को, ऐसे प्रस्तुत कर रहे हैं, जैसे कि यह मोदी के सत्ता में आने से पैदा हुआ है।

'क्या कार्यवाही शुरु कराने के लिए हर बार एसपी को बुलायें'

जयपुर, 7 मार्च। राजस्थान हाईकोर्ट ने प्रदेश में लापता नाबालिगों की बरामदगी नहीं होने के मुद्दे पर गंभीर टिप्पणी की, उस समय डीजीपी भी मौजूद थे। अदालत ने कहा कि बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिकाओं में हम पहले थानाधिकारी को बुलाते हैं, लेकिन कोई ठोस कार्रवाई नहीं होती। वहीं, जैसे ही संबंधित एसपी को बुलाते हैं तो मामले में कार्रवाई शुरू हो जाती है। कई मामलों में तो लापता की बरामदगी भी हो जाती है। जस्टिस इन्द्रजीत सिंह और जस्टिस मुकेश राजपुरोहित ने यह टिप्पणी नाबालिग लापताओं के चार मामलों में सुनवाई करते हुए की।

सुनवाई के दौरान, डीजीपी यूआर साहू अदालत में पेश हुए। उनके साथ

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- हाई कोर्ट ने लापता नाबालिगों के चार मामलों में डीजीपी यू.आर. साहू को बुलाकर तीखी टिप्पणी की।

चीन, यूरोपियन यूनियन, कैनडा, मैक्सिको आदि सभी देश अमेरिका को सबक सिखाने के मूड में

यूरोपियन यूनियन, चीन, कैनडा, मैक्सिको ने अमेरिका से इन देशों को निर्यात होने वाले सामान पर भारी टैरिफ वृद्धि जड़ी

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 7 अप्रेल। ट्रंप की टैरिफ तथा ट्रेड की गलाघोंटू वाणिज्यिक व व्यापारिक नीतियों के कारण एक ग्लोबल इकोनॉमिक वॉर छिड़ गया है, जिसमें सभी प्रमुख अर्थव्यवस्थाएं नए अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप को सबक सिखाने के लिए सख्त कदम उठा रही हैं। टैरिफ (शुल्क) एक दोधारी तलवार की तरह है। यदि आप दूसरों पर शुल्क लगाते हैं तो वो भी आपके खिलाफ समान या और अधिक कठोर कदम उठा सकते हैं।

इसका परिणाम, बढ़ती महँगाई, घटता व्यापार, प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में मंदी, लोगों की आय में गिरावट और भारी बेरोजगारी हो सकता है।

ट्रंप द्वारा रैसिप्रोकल टैरिफ लगाने के बाद सोमवार को जब स्टॉक मार्केट खुले तो विश्व भर के स्टॉक बाज़ारों में भारी तबाही का मंजर देखने को मिला। स्टॉक मार्केट "बेयर मार्केट" की स्थिति में हैं, जिसका अर्थ है कि इस समय इन्वैस्टर अपना इन्वैस्टमैंट बेचकर नकदी रखना पसंद करेंगे, बजाय स्टॉक्स में पैसा लगाने के।

जापान का स्टॉक मार्केट, जो दुनिया के सबसे बड़े बाज़ारों में एक है, टैरिफ वॉर के कारण सोमवार को 8 प्रतिशत गिर गया। भारत के स्टॉक मार्केट में 2227 पॉइन्ट की गिरावट आई, जिसने 14 लाख करोड़ रूपए की शेयर वैल्यू को मिटा दिया। चीन का शेयर बाज़ार भी गिरा। यूरोपीय बाज़ार को 10 प्रतिशत की गिरावट के बाद 1.7 ट्रिलियन यूरो का नुकसान झेलना पड़ा।

बाजारों की इस उथल-पुथल के बीच, 29 देशों वाली यूरोपियन यूनियन (ई.यू.) ने ट्रंप के पिछले सप्ताह के शुल्कों के जवाब में अपने खुद के शुल्कों की घोषणा की। यूरोपीय संघ ने अमेरिका से आयात पर 28 बिलियन डॉलर के शुल्क लगाने का प्रस्ताव रखा। ई.यू. के व्यापार आयुक्त ने कहा कि ये शुल्क 9 अप्रैल से प्रभावी होंगे।

चीन, जो दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है और जिसे ट्रंप "नम्बर वन" दुश्मन मानते हैं, ने अमेरिका से आयात पर 34 प्रतिशत से अधिक शुल्क लगाने की घोषणा की है। अब चीन अमेरिका से आयात पर अपने शुल्कों को और बढ़ाने और दुर्लभ पृथ्वी तत्वों के निर्यात पर प्रतिबंध लगाने पर विचार कर रहा है।

अमेरिका के रैसिप्रोकल टैरिफ और अन्य टैक्स, जिसमें 10 प्रतिशत का बेसिक टैक्स भी शामिल है, के

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- यूरोपीय देशों ने 28 अरब डॉलर का आयात शुल्क लगाया।
- चीन ने 34 प्रतिशत का टैरिफ लगाया अमेरिकी सामान पर।
- ये देश, टैरिफ युद्ध में इसलिये उतरे कि अमेरिका के टैरिफ धमाकों से इन सभी देशों के स्टॉक एक्सचेंज में शेयर की कीमतों में गिरावट आई
- जापान के स्टॉक एक्सचेंज में 8 प्रतिशत की गिरावट आई, चीन के स्टॉक मार्केट में दस प्रतिशत टूट हुई। जैसा कि विदित ही है अमेरिका ने चीन के माल पर 54 प्रतिशत का टैरिफ लगाया है।
- जे.पी. मॉर्गन बैंक (अमेरिका) के अध्यक्ष जैमी डीमॉन ने शेयर होल्डर्स को संबोधित करते हुए कहा, अमेरिका की विशेष पोज़िशन थी, विश्व में, अपनी इकोनॉमी की ताकत, सेना के "पावर" और अपनी नैतिक मान्यताओं के कारण, जिसका मुख्य हिस्सा थी इकोनॉमी व राजनीति में स्वतंत्रता, पर, अब यह मान्यता खत्म हो रही है।

एकल पट्टा प्रकरण में अशोक पाठक को पक्षकार बनाने पर बहस जारी

जयपुर, 7 अप्रैल। राजस्थान हाईकोर्ट में सोमवार को पूर्व मंत्री शांति धारीवाल से जुड़े चर्चित एकल पट्टा मामले में सुप्रीम कोर्ट में याचिकाकर्ता रहे अशोक पाठक को पक्षकार बनाए जाने के मुद्दे पर बहस जारी रही। अदालत मामले में मंगलवार को सुनवाई करेगी।

मुख्य न्यायाधीश एमएम श्रीवास्तव की एकलपीठ के समक्ष पूर्व मंत्री धारीवाल के अधिवक्ता वीआर बाजवा ने पाठक को पक्षकार बनाए जाने पर आपत्ति जताई। बाजवा ने कहा कि अशोक पाठक मामले में न तो शिकायतकर्ता हैं और न ही उनके कोई हित प्रभावित हुए हैं। ऐसे में उनका इस केस से कोई संबंध नहीं है। जवाब में पाठक के अधिवक्ता आशीष कुमार सिंह

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- पूर्व मंत्री धारीवाल के अधिवक्ता ने पाठक को पक्षकार बनाने पर आपत्ति की।

विचार बिन्दु

हमारी आनंदपूर्ण बदकारियाँ ही हमारी उत्पीड़क चाबुक बन जाती हैं। –शेक्सपियर

ट्रंप टैरिफ का भारत पर प्रभाव

डोनाल्ड ट्रंप ने जब 20 जनवरी 2025 को राष्ट्रपति पद की शपथ ली थी, तभी यह स्पष्ट हो गया था कि उनके दूसरे कार्यकाल में कई बहुत दूरगामी प्रभाव वाले निर्णय लिए जाएंगे। इनमें से एक निर्णय जो कि अवैध प्रवासियों को अमेरिका से अपने-अपने देश में भेजने का था, उस पर तो कार्यवाही तत्काल ही प्रारंभ हो गई। इसका प्रभाव यह हुआ कि अमेरिका में रह रहे अवैध भारतीय प्रवासियो को हथकडी और बेड़ियों में जकड कर अमेरिकी सेना के हवाई जहाज से भारत भेजा गया।

इसके बाद ट्रंप ने दूसरी बड़ी घोषणा 2 अप्रैल, 2025 को, रेसिप्रोकल टैरिफ (पारस्परिक आयात शुल्क) लगाने के संबंध में की। ट्रंप ने विश्व के 60 देशों पर रेसिप्रोकल टैरिफ लागू करने की घोषणा की।

पाठकों के लिए समझना आवश्यक है कि टैरिफ का मतलब आयात शुल्क है। एक देश से, दूसरे देश में जब भी कोई वस्तुएं निर्यात की जाती हैं तो आयात करने वाला देश, आयातित वस्तुओं पर आयात शुल्क लगाता है। इसे निर्धारित करते समय यह ध्यान रखा जाता है कि आयात शुल्क इतना भी कम न हो कि देश में निर्मित होने वाली वस्तुओं से आयातित वस्तुएं बहुत सस्ती हो जाएं, ताकि स्थानीय उद्योग पर विपरीत प्रभाव न पड़े। यह इतना अधिक भी न हो कि आयातित वस्तु इतनी महंगी हो जाएं कि उन्हें कोई खरीद ही नहीं पाए। अमेरिका एक उपभोक्ता वादी देश है। अतः वहां कई देशों द्वारा उत्पादित वस्तुओं की बहुत खपत होती है। अमेरिका विश्व की एक नंबर की अर्थ व्यवस्था है और इसकी जी डी पी 27 ट्रिलियन डॉलर है, जो दुनिया की कुल जी डी पी का 26.11% है। इसकी तुलना में भारत की कुल जी डी पी 3.5 ट्रिलियन डॉलर है, जो वैश्विक जी डी पी का 3.36% है। प्रति व्यक्ति जी डी पी अमेरिका की 80700 डॉलर है जब कि भारत में यह केवल 2500 डॉलर है। अनेक देशों के उद्योग, उनके द्वारा निर्मित वस्तुओं के अमेरिका में उपभोग पर निर्भर हैं।

जहां तक भारत का संबंध है, भारत में अमेरिका से आयात होने वाली अधिकांश वस्तुओं पर 50 से 70% टैरिफ है। जबकि अमेरिका में भारत से जाने वाली अधिकांश वस्तुओं पर बहुत कम अर्थात 3 से 5% के बीच टैरिफ है। इस कारण अमरीकी उपभोक्ताओं को भारत में निर्मित वस्त्र, दवाइयां, रत्न आभूषण बहुत सस्ते उपलब्ध हो जाते हैं।

अब ट्रंप द्वारा टैरिफ में अचानक 26% वृद्धि करने से भारत में उत्पादित वस्तुओं की कीमत, अमेरिका में बहुत बढ़ जाएगी। यदि वहां के उपभोक्ता इतनी बड़ी क़ीमत पर क्रय नहीं करें, तो वहां के आयात कर्ता, भारत के निर्यातकों से वस्तुओं की कीमत कम करने के लिए कहेंगे। इसका मतलब यह होगा कि भारतीय उद्योग, यदि इतनी कम कीमत पर निर्यात करने में समर्थ नहीं होंगे, तो उन्हें अपनी उत्पादन क्षमता कम करनी होगी। परिणामस्वरूप, धीरे-धीरे उद्योग बंद होंगे और यहां काम करने वाले लोगों की संख्या में छंटनी होगी। इससे बड़ी मात्रा में बेरोजगारी बढ़ेगी और आर्थिक मंदी का दौर प्रारंभ होगा।

यह सर्वविदित तथ्य है कि वर्तमान समय, वैश्विक अंतर निर्भरता का है। वह जमाना अब नहीं रहा, जब कोई एक देश, पूरी दुनिया से कटकर अपने मन माने तौर से व्यापार कर सकता था। अपनी आर्थिक मजबूती का फायदा उठाते हुए, डोनाल्ड ट्रंप ने 'मेक अमेरिका ग्रेट अगेन' के अपने वादे को पूरा करने की दृष्टि से 'रेसिप्रोकल टैरिफ' का कदम उठाया है। वर्तमान में, अमेरिका में आने वाली अधिकांश वस्तुओं पर बहुत कम आयात शुल्क था, जिसके कारण प्रतिस्पर्धी दरों पर विश्व के बहुत से देश, अमेरिका में काम आने वाली वस्तुओं का उत्पादन अपने देश में करके, निर्यात कर सकते थे। इसके कारण संबंधित देशों में उद्योग पनपते थे और वहां के स्थानीय लोगों को रोजगार भी मिलता था।

2 अप्रैल 2025 को अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने विश्व के विभिन्न देशों से आयात होने वाले वस्तुओं पर 10 से लेकर 50% तक टैरिफ लगाने का निर्णय लिया। भारत के लिए यह टैरिफ 26% है, जबकि चीन पर यह 34% है। टैरिफ की नई दरें 9 अप्रैल 2025 से लागू हो जाएंगी।

जब से डोनाल्ड ट्रंप द्वारा रेसिप्रोकल टैरिफ की घोषणा की है, तब से पूरी दुनिया में तहलका मचा हुआ है। सभी क्षेत्रों में इसका व्यापक असर दिखाई भी देने लगा है। यह आश्चर्य की बात है कि भारत में इस रेसिप्रोकल टैरिफ के निर्णय पर जितना जितनी चर्चा होनी चाहिए थी, वह अभी तक नहीं हुई है। इसी दृष्टि से यह लेख पाठकों के समक्ष स्थिति स्पष्ट करने हेतु लिखा गया है। भारत में चर्चा अधिक न होने का शायद एक कारण यह रहा कि हमारे यहां की सरकार जनता को हिंदू-मुसलमान के विवादों में ही उलझाती रही, चाहे वह औरंगजेब की कब्र को खोदने का मामला हो, छत्रपति शिवाजी का हो, या रामनवमी और ईद का हो, सड़कों पर नमाज पढ़ने का हो, अथवा वक्फ संशोधन कानून का हो। पूरा समय, लगभग सभी मीडिया चैनलों में इन्हीं विषयों पर निरंतर चर्चा होती रही है। इस कारण, जिस विषय से पूरे देश के आर्थिक भविष्य पर प्रभाव पड़ सकता है या रोजगार पर बहुत प्रभाव पड़ सकता है, वह विषय लगभग मीडिया से बाहर ही रहा है।

हम इस लेख में यह जानने का प्रयास करेंगे कि भारत पर ट्रंप की टैरिफ नीति का क्या प्रभाव पड़ने की संभावना है?

सबसे पहले यदि हम शेयर मार्केट की बात करें तो यह अभी से गिरना प्रारंभ हो गया है और जो शेयर मार्केट 2 अप्रैल को लगभग 77000 पर था वह घटकर तीन-चार दिन के अंदर ही 74000 तक आ गया है। अनुमान है कि शेयर मार्केट में गिरावट के कारण शेयर धारकों को लगभग 10 लाख करोड रुपए का नुकसान अभी तक हो चुका है।

अमेरिका द्वारा आयात शुल्क बढ़ाने के कारण अमेरिकी नागरिकों के लिए सभी चीज अत्यंत महंगी हो जाएंगी एवं उसके कारण अमेरिकी नागरिकों का तीव्र विरोध जब ट्रंप के विरुद्ध होगा, तब संभव है उन्हें अपना निर्णय बदलना पड़े। इस प्रकार का घोर विरोध प्रारंभ हो चुका है और पूरे देश में ट्रंप के विरुद्ध प्रदर्शन हो रहे हैं।

भारतीयों की सबसे अधिक रुचि सोने के भाव में रहती है और फिलहाल तो इसमें मामूली गिरावट देखी गई है, किंतु अंततः अनुमान है कि इस नीति के कारण सोने के भाव प्रति 10 ग्राम के लिए लगभग एक लाख रुपए तक पहुंच सकता है, जो कि वर्तमान में 95000 रुपए है।

पाठकों के लिए यह जानना उपयुक्त होगा कि भारत के कुल निर्यात का लगभग 18% अमेरिका को होता है। इस निर्यात की कीमत लगभग 6 लाख 40 हजार करोड रुपए है। भारत द्वारा अमेरिका को निर्यात किए जाने वाली वस्तुओं में प्रमुख रत्न और आभूषण, इलेक्ट्रॉनिक मशीनरी, वस्त्र, फार्मास्यूटिकल उत्पाद, ऑटो पार्ट्स आदि हैं। इसके विपरीत, भारत में अमेरिका से होने वाला आयात लगभग 3.49 लाख करोड़ रुपए का है। इसका अर्थ यह है कि भारत से जितना निर्यात होता है, उससे लगभग तीन लाख करोड रुपए कम का आयात होता है। ट्रंप द्वारा फिलहाल सेमी कंडक्टर, एनर्जी उत्पाद, आई टी और फार्मास्यूटिकल के क्षेत्र को इस रेसिप्रोकल टैरिफ के दायरे से बाहर रखा गया है। यदि इसे भी शामिल कर लिया जाता तो न केवल यहां के फार्मा सेक्टर पर बहुत प्रभाव पड़ता, अपितु अमेरिका में भी सारी दवाइयां बहुत महंगी हो जातीं।

अमेरिका ने भारत पर 26% का आयात शुल्क अथवा टैरिफ लगाया है जबकि चीन से आयात होने वाली वस्तुओं पर 34% का शुल्क लगाया है। वहीं, ब्राजील, इंग्लैंड, सिंगापुर, ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों से होने वाली आयातित वस्तुओं पर 10% का ही शुल्क लगाया है। कई भारतीय नेता यह कहकर लोगों को भ्रमित करने का प्रयास कर रहे हैं कि चीन पर 34% का टैरिफ लगाया है जबकि भारत पर केवल 26% लगाया गया है। चीन और कुछ अन्य देशों ने जवाबी कार्यवाही करते हुए अमेरिका से आने वाली सामग्री पर टैरिफ बहुत बढ़ा दी है।

ट्रंप द्वारा टैरिफ बढ़ाने के पीछे यह तर्क दिया गया है कि जब बाहर से आने वाली वस्तुएं महंगी होंगी तब अमेरिका में इन वस्तुओं का अधिक उत्पादन होगा, जिसके फलस्वरूप अमेरिकी लोगों के लिए रोज़गार के अवसर बढ़ेंगे। ट्रंप के इस निर्णय के पीछे एक ही भावना दिखाई देती है - 'मेक अमेरिका ग्रेट अगेन'।

इसका वास्तविक प्रभाव तो 9 अप्रैल के बाद पड़ेगा किंतु इस घोषणा के बाद से ही बहुत उथल-पुथल और अनिश्चितता का दौर प्रारंभ हो गया है।

एप्पल फोन का निर्माण अधिकांशतया चीन, भारत और वियतनाम में होता है। क्योंकि चीन और वियतनाम में टैरिफ भारत से अधिक लगाया गया है, अतः भारत पर इसका अधिक असर होने की संभावना नहीं है, क्योंकि भारत से अमेरिका में जाने वाले फोन की कीमत इतनी अधिक नहीं बढ़ेगी जितनी चीन और वियतनाम में निर्मित फोन की कीमत बढ़ेगी।

भारत से विभिन्न प्रकार की मछलियों का निर्यात अमेरिका को होता है इसका कुल मूल्य लगभग 20000 करोड रुपए है। इनमें झींगा मछली (प्रॉन) प्रमुख है जिसका हिस्सा लगभग 90% है। ट्रंप टैरिफ के कारण इसमें बहुत कमी आएगी क्योंकि इस व्यवसाय में बढ़ाई गई टैरिफ का भार निर्यातकों को वहन करना पड़ेगा जो लगभग 600 करोड रुपए होता है। इसके विपरीत ब्राजील के लिए टैरिफ 10% ही है, अतः वहां से अमेरिका को आयात करने में सुविधा होगी। इसलिए, भारत का मछली व्यापार बुरी तरह प्रभावित होने की संभावना है। इस व्यापार में लगे हुए लोगों के रोजगार पर भी असर पड़ेगा।

अमेरिका द्वारा टैरिफ बढ़ाने के कारण भारत से अमेरिका को होने वाले स्टील के निर्यात में कमी आएगी। क्योंकि, अन्य देशों से भी स्टील का निर्यात अमेरिका को नहीं हो पाएगा, अतः अन्य देश अब भारत में स्टील को डंप करने की नीति अपनाएंगे। इसके कारण, भारत के स्टील उद्योग पर बहुत विपरीत प्रभाव पड़ने की संभावना है। इस उद्योग में लगे व्यक्तियों का रोजगार भी बहुत हद तक पूरी तरह प्रभावित होगा।

कुल मिलाकर हम कह सकते हैं कि विश्व एक मंदी के दौर की ओर अग्रसर हो रहा है। इसमें नौकरियां कम होगी और कीमतें बढ़ेंगी। इस मंदी के प्रभाव से भारत अपनी नीतियों में सुधार करके स्वयं को कितना बचा पाता है यह भविष्य के गर्भ में है।

ट्रंप द्वारा 1910 के बाद पहली बार इतना अधिक क्रांतिकारी टैरिफ संबंधी निर्णय किया गया है। रेसिप्रोकल टैरिफ को लागू करने की तिथि को ट्रंप 'लिबरेशन डे' के रूप में बता रहे हैं, वहीं कई अर्थशास्त्री इसे 'ट्रेड रिसेशन डे' या 'टैरिफ स्टूपिडिटी डे' के रूप में मनाने की बात कर रहे हैं।

ट्रंप टैरिफ के दुष्प्रभाव से बचने के लिए, फिलहाल तो निम्न दो ही विकल्प दिखाई देते हैं:-

1. अमेरिका द्वारा आयात शुल्क बढ़ाने के कारण अमेरिकी नागरिकों के लिए सभी चीज अत्यंत महंगी हो जाएंगी एवं उसके कारण अमेरिकी नागरिकों का तीव्र विरोध जब ट्रंप के विरुद्ध होगा, तब संभव है उन्हें अपना निर्णय बदलना पड़े। इस प्रकार का घोर विरोध प्रारंभ हो चुका है और पूरे देश में ट्रंप के विरुद्ध प्रदर्शन हो रहे हैं।

2. भारत और अमेरिका परस्पर द्विपक्षीय व्यापारिक समझौते करें और विभिन्न वस्तुओं के टैरिफ में आपसी सहमति के अनुसार संशोधन करें ताकि भारतीय उद्योग जगत पर इसका विपरीत प्रभाव न पड़े। प्रधानमंत्री मोदी को इस प्रक्रिया के लिए ट्रंप के साथ अपने कथित मित्रता पूर्ण संबंधों का पूरा उपयोग करना पड़ेगा।

3. वे प्रमुख देश जहां अमेरिका वस्तुओं का निर्यात अधिक होता है, वे भी अपने देश में अमेरिकी वस्तुओं के आयात पर प्रतिबंध लगाए अथवा टैरिफ को और बढ़ाए तो अमेरिकी निर्यात पर इसका विपरीत प्रभाव पड़ेगा। इस कारण अमेरिका में भी नौकरियां कम हो जाएंगी। इसके फल स्वरुप अमेरिका मंदी के दौर से गुजरेगा और वहां की जनता राष्ट्रपति के विरुद्ध हो जाएगी। जनता के दबाव के कारण ट्रंप को अपने निर्णय पर पुनर्विचार करने के लिए बाध्य होना पड़ेगा।

फिलहाल तो ऐसा लगता है कि ट्रंप के एक निर्णय ने विश्व की अर्थव्यवस्था को मंदी और अनिश्चितता के दौर में धकेल दिया है।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

ट्रंप के टैरिफ का तूफान

5 ट्रिलियन डॉलर अमेरिकी संपत्ति का नुकसान भारतीय अर्थव्यवस्था के बराबर

अब ज़रूरी है सतर्क रणनीति

सुनील दत्त गोयल

एक समय था जब दुनिया एक साझा नियमों और वैश्विक सहयोग के दौर से गुजर रही थी। वैश्वीकरण और मुक्त व्यापार के उस युग में ऐसा लगता था कि सभी देश मिलकर आगे बढ़ सकते हैं - एक 'विन-विन' सिस्टम, जहाँ हर किसी को फायदा हो। लेकिन अब वो दौर बीत चुका है। अमेरिका ने हाल ही में 'लिबरेशन डे' पर जिस तरह से नई टैरिफ नीति का ऐलान किया है, वह दुनिया की आर्थिक धारा को ही मोड़ता नज़र आ रहा है। अब यह स्पष्ट हो गया है कि नियमों पर आधारित वैश्विक व्यापार व्यवस्था का अंत हो चुका है - और हम एक नए, कहीं ज़्यादा अनिश्चित और ख़तरनाक युग में प्रवेश कर चुके हैं। चीन और अमेरिका के बीच चल रहा व्यापार युद्ध (Trade War) अब एक खतरनाक मोड़ पर पहुँच चुका है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा हाल ही में घोषित नए टैरिफ्स के बाद ना सिर्फ अमेरिकी बाजारों में हाहाकार मचा है, बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था की स्थिरता पर भी गंभीर सवाल उठ खड़े हुए हैं। इस बार अमेरिका और चीन के बीच आर्थिक टकराव ने जो रूप लिया है, उसका असर पूरी दुनिया पर दिख रहा है - खासतौर पर उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं और बहुराष्ट्रीय कंपनियों पर।

5 ट्रिलियन डॉलर का नुकसान: अमेरिकी संपत्ति का विनाश, भारत की GDP के बराबर

ट्रंप द्वारा चीन से आने वाले सेमीकंडक्टर और तकनीकी उत्पादों पर उच्च टैरिफ लगाने के ऐलान के बाद, वॉल स्ट्रीट में तेज़ गिरावट दर्ज की गई। अनुमान के अनुसार, अमेरिकी कंपनियों और निवेशकों को कुल मिलाकर लगभग 5 ट्रिलियन डॉलर (करीब 435 लाख करोड़) का नुकसान हुआ है। यह रकम भारत की पूरी अर्थव्यवस्था (GDP) के बराबर है, जो वैश्विक मंच पर एक तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था मानी जाती है।

यहां यह देखना अत्यंत आवश्यक है कि भारत जैसा विशाल देश, जहां आज़ादी के लगभग 80 वर्ष पूरे होने को हैं, अपनी अर्थव्यवस्था को 5 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंचाने के लिए पिछले 11 वर्षों से पूरी मोदी सरकार अथक प्रयास कर रही है। वहीं ट्रंप साहब के एक फैसले ने पूरे विश्व की आर्थिक और व्यापारिक संरचना को झकझोर कर रख दिया है। इस तथ्य से यह स्पष्ट होता है कि एक गलत नीति निर्णय कैसे किसी राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को वैश्विक स्तर पर हिला सकता है।

ट्रंप की आक्रामक नीति और चीन की प्रतिक्रिया

डोनाल्ड ट्रंप पहले ही चीन से आयातित 550 अरब डॉलर के उत्पादों पर 25% से अधिक का टैरिफ लगा चुके हैं। इस नीति का उद्देश्य था अमेरिकी बाजार को 'चीन पर निर्भरता' से मुक्त करना और घरेलू उत्पादन को बढ़ावा देना। लेकिन इसके परिणाम अब स्पष्ट रूप से नकारात्मक दिखने लगे हैं। जवाब में चीन ने अमेरिका से आयात होने वाले 16 सेमीकंडक्टर उत्पादों पर 34% तक का टैरिफ लगाया है और कुछ पर प्रतिबंध भी लगाया है। यह कदम सीधे अमेरिकी टेक्नोलॉजी सेक्टर को निशाना बनाता है, जिससे अमेरिकी कंपनियाँ मुश्किल में आ गई हैं।

अब कैसा दिखेगा ये नया दौर?

अमेरिका, जो दशकों तक वैश्विक मुक्त व्यापार प्रणाली का सबसे बड़ा समर्थक था, अब उस पूरी प्रणाली से पीछे हट गया है। वर्ल्ड ट्रेड ऑर्गनाइज़ेशन (WTO) जैसी संस्थाओं के ज़रिये दुनिया भर में जो नियम-क़ायदे बने थे, उन्हें अब नजरअंदाज किया जा रहा है। अमेरिका अब देश-दर-देश अलग-अलग टैरिफ तय कर रहा है - जिसे वो रिसिप्रोकल टैरिफ कह रहा है। यानी अब यह तय नहीं होगा कि किसी उत्पाद पर कितना शुल्क लगेगा, बल्कि यह देखा जाएगा कि कौन-सा देश अमेरिका को क्या देता है और उसी के आधार पर टैक्स तय होंगे।

एक छोटा लेकिन खतरनाक कदम

शायद किसी एक देश पर लगने वाला 10% टैरिफ ज्यादा बड़ा मुद्दा न लगे। लेकिन असली चिंता इस कदम के पीछे की सोच है। अगर बाकी देश भी यही रवैया अपनाते हैं - कि WTO के नियमों को दरकिनार करके वे भी केवल अपनी शर्तों पर ट्रेड करेंगे - तो पूरी दुनिया की सप्लाई चेन चरमरा सकती है। छोटे और विकासशील देश, जिनकी अर्थव्यवस्था विदेशी व्यापार पर निर्भर है, हाशिए पर चले जाएंगे, उन्हें वैश्विक व्यापार से बाहर किया जा सकता है।

वैश्विक मंदी का खतरा मंडरा रहा है : अमेरिका के इस फैसले के असर से वॉल स्ट्रीट में 5 ट्रिलियन डॉलर से ज्यादा की पूंजी उड़ गई - जो भारत की कुल अर्थव्यवस्था (GDP) के बराबर है। सोचिए, एक नीति की घोषणा से अमेरिका ने जितनी संपत्ति गंवाई, वो एक पूरे देश की सालाना आर्थिक गतिविधियों के समान है। ऐसे में ज़रूरत है कि आने वाले फैसलों को बेहद सावधानी से लिया जाए। अगर यही रुख जारी रहा तो वैश्विक व्यापार युद्ध को रोकना मुश्किल होगा। कई देशों ने पहले ही जवाबी टैरिफ की तैयारी शुरू कर दी है यूरोपियन यूनियन, कनाडा, मैक्सिको जैसे देश अब खुद अमेरिकी उत्पादों पर भारी शुल्क लगाने पर विचार कर रहे हैं।

इतिहास की चेतावनी

दुनिया ने इससे पहले ऐसा दौर 1930 के दशक में देखा था, जब व्यापार युद्धों ने आर्थिक मंदी को जन्म दिया, और आगे चलकर यह हालात द्वितीय विश्व युद्ध तक पहुंच गए। अगर अब भी वैश्विक समुदाय ने संयम नहीं दिखाया, तो हालात दोहराए जा सकते हैं।

अंतरराष्ट्रीय नियम टूट रहे हैं

आज की हकीकत यही है कि वैश्विक संस्थाएं कमजोर हो रही हैं। देशों के बीच सहयोग की बजाय प्रतिस्पर्धा और स्वार्थ हावी हो रहा है। बड़ी अर्थव्यवस्थाएं अब ताक़त और दबाव के बल पर अपने फ़ैसले थोप रही हैं। इस माहौल में छोटे और खुली अर्थव्यवस्था वाले देशों के लिए यह दौर खासा चुनौतीपूर्ण हो सकता है। उन्हें या तो बड़ी शक्तियों की शर्तें माननी होंगी या फिर बाहर कर दिए जाएंगे।

क्या करना होगा अब?

अब देश को न सिर्फ आर्थिक स्तर पर, बल्कि मानसिक रूप से भी तैयार रहना होगा। व्यापार में गिरावट, निवेश में संकोच और कच्चे माल की कीमतों में उथल-पुथल जैसे झटकों के लिए तैयार रहना जरूरी है।

मज़बूत साझेदारियाँ, रणनीतिक निवेश और आंतरिक क्षमता का निर्माण - यही रास्ता है, जिससे कोई देश खुद को इन वैश्विक हलचलों के बीच खड़ा रख सकता है।

निष्कर्ष: ये नया वैश्विक यथार्थ है

ये कोई अस्थायी संकट नहीं है। यह एक नई वैश्विक व्यवस्था की शुरुआत है। ऐसे में यह मानना कि पुराने नियम और सुरक्षा कवच अब भी काम करेंगे, एक भ्रम होगा। जो देश अभी से सतर्क और संगठित हैं, वही इस वैश्विक तूफान में टिक पाएंगे। बाकियों के लिए आने वाला समय और भी कठिन हो सकता है। मुझे ऐसा लगता है कि कहीं ऐसा न हो कि अमेरिका के भीतर ही लोगों में गहरा असंतोष उत्पन्न हो, जो या तो किसी सिविल वॉर (गृहयुद्ध) का रूप ले ले, या वहां मध्यावधि चुनाव की नौबत आ जाए, या फिर ट्रंप की पार्टी कोई और बड़ा फैसला ले ले - जो निश्चित रूप से जोखिम भरा और चौंकाने वाला हो सकता है।

मैं हमेशा से यह कहता आया हूं कि विश्व के किसी भी नेता, राजनेता, अर्थशास्त्री या किसी भी महत्वपूर्ण पद पर बैठे व्यक्ति को ऐसे संवेदनशील वक्तव्यों से बचना चाहिए। कोई भी बड़ा फैसला लेने से पहले यह तुलनात्मक अध्ययन करना अत्यंत आवश्यक है कि उस फैसले का प्रभाव सबसे पहले उनकी राजनीति पर, फिर उनकी जनता पर, और उसके बाद उनकी अर्थव्यवस्था तथा शेयर बाजार के मार्केट कैपिटलाइज़ेशन पर क्या असर डालेगा। हमने भारत में भी यह कई बार देखा है - सरकारें कभी-कभी 1000 से 2000 करोड़ रुपये के टैक्स लगाने की लालसा में 10,000 से 20,000 करोड़ रुपये के मार्केट कैपिटलाइज़ेशन को गंवा देती हैं। नुकसान आम जनता का होता है - सरकारें और नेताओं पर इसका सीधा असर नहीं पड़ता। लेकिन अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बैठे हुए उच्च पदों के लोगों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे संवेदनशीलता, सहनशीलता, और विवेक का प्रदर्शन करें और हर कदम सोच-समझकर उठाएं। मुझे उम्मीद है कि आने वाले एक से डेढ़ महीने में इन परिस्थितियों में बड़े बदलाव देखने को मिलेंगे। यह भी संभव है कि ट्रंप सरकार को बड़ा रोलबैक करना पड़े। जब पूरा विश्व एक स्वर में जागेगा, तो कोई भी देश - चाहे वह कितना ही शक्तिशाली क्यों न हो - दबाव में आए बिना नहीं रह पाएगा। और यही तो लोकतंत्र की असली खूबसूरती और ताकत है। धन्यवाद।

–सुनील दत्त गोयल,
महानिदेशक, इम्पीरियल चैंबर ऑफ़ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री जयपुर, राजस्थान

बीकानेर : पूर्ण नहरबंदी 25 अप्रैल से संभव, आंशिक नहीं होगी

बीकानेर, (निसं)। इस साल आशिक नहरबंदी की औपचारिक घोषणा नहीं होगी। यद्यपि फरवरी से ही अघोषित आंशिक नहरबंदी जारी है। सूत्रों के मुताबिक इस साल सीधे पूर्ण नहरबंदी होगी जो 25 या 26 अप्रैल से संभावित है। हालांकि इसकी तारीख भी पंजाब ने अभी तक घोषित नहीं की है। दो दशक बाद पहली बार नहरबंदी की तिथि को लेकर पिछले एक महीने से असमंजस की स्थिति है।

पंजाब नहरबंदी की तारीख तय नहीं कर रहा। राजस्थान के अभियंता अपने अनुमान से अलग-अलग तारीख प्रशासन को बता रहे हैं। 26 मार्च से 25 अप्रैल तक आंशिक नहर बंदी होनी थी, लेकिन पंजाब ने इसकी अधिकृत तिथि घोषित नहीं की। हालात इतने विकट हो गए कि अब मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को भी समीक्षा के लिए नहरी क्षेत्र का दौरा करना पड़ रहा है। वे आठ और नौ अप्रैल को पंजाब से लेकर राजस्थान तक इंदिरा गांधी नहर का दौरा कर अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक करेंगे। मुख्यमंत्री का कार्यक्रम जारी हो गया है। माना जा रहा है कि 8 अप्रैल को मुख्यमंत्री सुबह जयपुर से बठिंडा जाएंगे। यहां से वे हरिके बैराज का निरीक्षण करेंगे। हरिके बैराज वो केंद्र है जहां से पंजाब राजस्थान को सिंचाई और पीना का पानी छोड़ता है। हरिके बैराज से वे

■ आंशिक नहरबंदी घोषित नहीं हो रही और इस दौरान जितना पानी मिलना चाहिए उतना मिल भी नहीं रहा है, पिछले 15 दिन से कटौती चल रही है

लाखों वाली हेड जाएंगे और वहां इंदिरा गांधी नहर में होने वाले मरम्मत कार्यों को देखेंगे। 9 अप्रैल को घग्गर नदी क्षेत्र का निरीक्षण करेंगे। बाद में हनुमानगढ़ के सर्किट हाउस में प्रशासन और नहरी तंत्र से जुड़े अधिकारियों के साथ नहरबंदी के हालातों की समीक्षा करेंगे। 2006 के बाद वे पहले तत्कालीन मुख्यमंत्री होंगे जो इंदिरा गांधी नहर का निरीक्षण करेंगे। राजस्थान के अधिकारियों ने 26 मार्च के बाद 5 अप्रैल की तिथि को आंशिक बंदी के लिए अनुमानित तिथि दी थी। 5 अप्रैल को भी पंजाब ने चुप्पी साध ली। अब कहा जा रहा है कि आंशिक नहर बंदी की घोषणा नहीं की जाएगी हालांकि फरवरी से ही अघोषित आंशिक नहर बंदी चल रही है। पानी की कमी को ही कारण माना जा रहा है। आंशिक नहरबंदी में तय पानी दिया जाता है। आंशिक नहरबंदी घोषित नहीं हो रही और इस दौरान जितना पानी मिलना चाहिए उतना मिल भी नहीं रहा। पिछले 15 दिन से कटौती चल रही है। सूत्र बताते हैं कि पंजाब के एक अधिकारी यह कहकर राजस्थान को पूरा पानी नहीं दे रहे कि राजस्थान ने अपने हिस्से का पूरा पानी उपयोग कर लिया है। इसी वजह से पिछले दो सप्ताह से राजस्थान को पूरा पानी नहीं मिल रहा। राजस्थान रोज 3000 क्यूसेक पानी मांग रहा है जबकि उसकी जगह 2000 से ढाई हजार के बीच पानी मिल रहा है। इसमें इंदिरा गांधी नहर और गंगानगर की बाकी दो सिंचाई परियोजनाओं का पानी भी शामिल है, जबकि मिलने वाला सिर्फ पेयजल का पानी है।

अगले तीन दिन तेज गर्मी की संभावना

बीकानेर, (निसं)। बीकानेर में तापमान 44 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच सकता है। मौसम विभाग ने अलर्ट जारी करते हुए तापमान में बढ़ोतरी की आशंका जताते हुए लोगों को सुरक्षित स्थानों पर रहने की सलाह दी है। सामान्य से अधिक चल रहा पारा रविवार को ही 43.3 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच चुका था। पारे में अचानक हुई बढ़ोतरी ने लू के हालात पैदा कर दिए हैं। सोमवार को सुबह आठ बजे भी पारा तीस डिग्री सेल्सियस से ऊपर था। मंगलवार को भी पारा बढ़ सकता है। बुधवार को तापमान में एक डिग्री सेल्सियस की कमी आ सकती है। हालांकि ये भी सामान्य से अधिक होगा। तीन दिन तक लगातार लू रहने की आशंका में लोगों को तेज धूप में सावधानी बरतने की सलाह दी गई है। अब तक बीकानेर में गर्मी से बचने के लिए कोई खास उपाय नहीं किए गए हैं। पिछले साल नगर निगम ने कोटगेट के पास रेलवे क्रासिंग पर टैंट लगा दिए थे लेकिन इस बार अब तक इस दिशा में निगम की ओर से पहल नहीं हुई है। हालांकि तब ये काम मई में हुआ था, लेकिन इस बार मई जितना पारा अप्रैल में ही पड़ रहा है।

■ तीन दिन तक लगातार लू रहने की आशंका से लोगों को तेज धूप में सावधानी बरतने की सलाह दी, मंगलवार को पारा बढ़ सकता है, बुधवार को तापमान में एक डिग्री सेल्सियस की कमी आ सकती है

राशिफल मंगलवार 8 अप्रैल, 2025

पंडित अनिल शर्मा

चैत्र मास, शुक्ल पक्ष, एकादशी तिथि, मंगलेवार, विक्रम संवत 2082, आश्लेष नक्षत्र प्रातः 7:55 तक, शूल योग सायं 6:10 तक, वणिज करण प्रातः 8:37 तक, चन्द्रमा प्रातः 7:55 से सिंह राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मीन, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-कर्क, बुध-मीन, गुरू-वृष, शुक्र-मीन, शनि-मीन, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से प्रातः 7:55 तक है। रवियोग प्रातः 7:55 बना रहेगा। कुमार योग प्रातः 7:55 से रात्रि 9:13 तक है। भद्रा प्रातः 8:37 से रात्रि 9:13 तक है। आज कामदा एकादशी, लक्ष्मीकांत दोलोत्सव है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:22 से 10:55 तक, लाभ-अमृत 10:55 से रात्रि 2:02 तक, शुभ 3:36 से 5:10 तक।

राहूकालः 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 6:14, सूर्यास्त 6:44

मेष

परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। आवश्यक कार्यों के कारण बाहर जाना पड़ सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष

घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

मिथुन

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखें।

कर्क

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

सिंह

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनःस्थिति में सुधार होगा। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। नवीन कारोबारी अनुबंध प्राप्त होंगे।

कन्या

आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। धन हानि का भय है। अनावश्यक धन खर्च होगा। आज घर-परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी।

तुला

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी।

वृश्चिक

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।

धनु

व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक पारिवारिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। नवीन कार्यों में परेशानी हो सकती है।

कुंभ

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन

विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

सार-समाचार

नारी फर्स्ट ज्वेल ऑफ इंडिया में कोटा की रश्मि राठौर ने राजस्थान का मान बढ़ाया

कोटा, (निसं)। नारी सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए गोवा में नारी फर्स्ट ज्वेल ऑफ इंडिया प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें देश के कोने-कोने से करीब 70 महिला प्रतिभागियों ने इस कंपटीशन में भाग लिया। वहां राजस्थान के कोटा जिले से अधिवक्ता रश्मि राठौड़ भी इस प्रतियोगिता का हिस्सा बनी। जिन्होंने गोवा में पूरे राजस्थान का नाम रोशन किया है। ये प्रतियोगिता गोवा के बोगमालों बीच रिसॉर्ट पर आयोजित किया गया। 3 अप्रैल से आयोजित हुई इस प्रतियोगिता में रोजाना कई राउंड खेले गए। कोटा की रश्मि राठौड़ ने 4 अप्रैल को आयोजित प्रतियोगिता में राजपूती पोशाक पहनकर गणगौर त्यौहार के बारे में कार्यक्रम में मौजूद जजेस को राजस्थान की परंपरा के बारे में बताया। वहीं 5 अप्रैल को आयोजित हुए टेलेंट राउंड में रश्मि ने भवाई नृत्य और कालबेलिया नृत्य कर राजस्थान को रिप्रेजेंटेट किया और शुरुआत के 25 प्रतिभागियों में अपनी जगह बनाई। 6 अप्रैल को आयोजित हुए आखिरी राउंड में मौखिक प्रश्नोत्तर और अन्य टेलेंट शो को जीतते हुए टॉप 3 में अपनी जगह बनाई। जिसके बाद कार्यक्रम में मौजूद एक्ट्रेस मलाइका अरोड़ा ने दूसरी रनअप रही रश्मि राठौड़ को ज्वेल ऑफ इंडिया का ताज पहनाकर सम्मानित किया।

श्री पिप्पलेश्वर महादेव मंदिर में नव प्राण-प्रतिष्ठा महोत्सव 10 अप्रैल से

कोटा, (निसं)। रंगबाड़ी मार्ग पर भगवान श्री पिप्पलेश्वर महादेव मंदिर में भोलेनाथ का नव-प्राण-प्रतिष्ठा महोत्सव (पाटोत्सव) 10 अप्रैल गुरूवार से प्रारंभ होगा। मंदिर सेवा समिति के अध्यक्ष भारत भूषण अरोड़ा ने बताया कि इस वर्ष 10 अप्रैल को मंदिर में भोलेनाथ विधी विधान से समारोहपूर्वक अपने नूतन गृह में विराजित होंगे। उन्होंने बताया कि गुरूवार प्रातः 7:30 बजे विशाल कलश यात्रा निकाली जायेगी जो महावीर नगर तृतीय दंडवीर हनुमान मंदिर से प्रारंभ होकर घटोत्कच चौराहा होते हुए श्री पिप्पलेश्वर महादेव मंदिर पर सम्पन्न होगी। कलश यात्रा में क्षेत्र की 700 से अधिक महिलाएं शामिल होंगी। इसके पश्चात् भगवान को जलादिवास करवाया जाएगा। सोमवार को कॉम्पिटीशन कॉलोनी की श्री पिप्पलेश्वर वाटिका में हुई बैठक में भंडारा आयोजन समिति गठित की गई। जिसमें सर्वसम्मति से जागेश्वर सिंह चौहान, संयोजक व रिंकू वाल्मिकी सह-संयोजक बनाये गये। पाटोत्सव महोत्सव आयोजन के लिये गिरधरलाल वढेरा प्रवक्ता चुने गये। समिति के सदस्यों ने महोत्सव के पोस्टर का विमोचन किया। प्रवक्ता गिरधर लाल बढेरा ने बताया कि पाटोत्सव महोत्सव पर मंदिर में 11 अप्रैल को अन्नादिवास एवं 12 अप्रैल को फलादिवास होगा। शनिवार को श्री हनुमान जन्मोत्सव पर 4:30 बजे से 108 हनुमान चालीसा पाठ का भव्य आयोजन रहेगा। रविवार 13 अप्रैल को भगवान के पाटोत्सव में शर्करादिवास, घृतादिवास एवं शय्यादिवास होगा। 14 अप्रैल को महाभिषेक के पश्चात् भगवान भोलेनाथ पारंपरिक ठाट-बाट से पूरे परिवार एवं परीकरो के साथ नगर भ्रमण पर पधारेंगे। जिसमें जगह-जगह पुष्प वर्षा आदि से भव्य स्वागत होगा। दोपहर साढ़े बारह बजे भगवान अपने नूतन भवन में विराजित होंगे। शाम 5:30 बजे यहां महाआरती की जायेगी।

पेंशनर समाज कल सौंपेगा ज्ञापन

छबड़ा (निसं)। पेंशनर समाज की विभिन्न समस्याओं को लेकर बुधवार को समाज अध्यक्ष हरीषचंद्र पाठक के नेतृत्व में पीएम व वित्तमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा जाएगा। मीडिया प्रभारी एसएल नागर के अनुसार केंद्र सरकार द्वारा संसद में सीसीए (पेंशन) नियम संशोधन विधेयक पारित करवाकर देश के समस्त पेंशनरों के साथ धोखा ओर विश्वासघात किया हैं। बौद्धिक ओर सीनियर नागरिकों को सम्मान देने के बजाय केंद्र सरकार ने 8 वें वेतन आयोग के जरिए पेंशनरों की पेंशन के साथ क्रूरता बरतते हुए वेतन, कटौती की गई। सरकार ने संशोधन विधेयक के जरिए 31 दिसम्बर 2025 से पहले सेवानिवृत हुए और एक जून 2026 और उसके बाद सेवानिवृत्त हुए पेंशनर कर्मचारियों को दो भागों में बांट कर भेदभाव किया है। अध्यक्ष पाठक ने कहा कि प्रथम चरण में जिले के सभी ब्लॉक की उपशाखाओं द्वारा मंगलवार को बैठक कर बुधवार को प्रत्येक उपशाखा स्तर पर प्रधानमंत्री वित्तमंत्री के नाम का ज्ञापन एसडीएम व तहसीलदार को सौंपा जाएगा।

कार्यकारिणी का चुनाव निर्विरोध संपन्न

कोटा, (निसं)। मुख्य चुनाव अधिकारी अलका सारस्वत ने बताया कि यहां संवैधानिक पांच पदों के लिए प्रबन्धकारिणी पांच उम्मीदवारों के नामांकन पत्र के अलावा अन्य कोई भी फार्म प्राप्त नहीं हुआ। ऐसे में सभी को निर्विरोध चुना गया। आवेदन पत्र जमा करने के बाद नामांकन वापसी की अंतिम तिथि 6 अप्रैल थी। निर्धारित समय तक आवेदन नहीं करने की स्थिति में वैध नामांकन के आधार पर निर्वाचित घोषित किया गया। सारस्वत ब्राह्मण महिला विकास समिति के इन चुनावों में अध्यक्ष पद पर मल्लिका शर्मा, महामंत्री पद पर कृष्णलता सारस्वत (स्वीटी), संगठन महामंत्री रश्मि ओझा, कोषाध्यक्ष सारिका ओझा एवं उपाध्यक्ष नेहा सारस्वत निर्विरोध निर्वाचित हुईं। समाज में महिला मंडल को सक्षक्त नेतृत्व देने तथा महिला विकास में विभिन्न कार्य करने के लक्ष्य को लेकर यह कार्यकारिणी 2025-27 के लिए चुनी गई है। निर्वाचित विजयी टीम, को समाज अध्यक्ष मुकेश सारस्वत एवं पदाधिकारी गणों ने बधाई शुभकामनाएं प्रेषित की।

विधायक ने डीएफओ पर आरोप लगाए

छबड़ा (निसं)। विधायक प्रतापसिंह सिंघवी ने मुख्यमंत्री को पत्र प्रेशित कर बारां डीएफओ द्वारा विभिन्न योजनाओ के अंतर्गत करवाए जा रहे वन विभाग के कार्यों की जांच करवाए जाने की मांग की है। विधायक सिंघवी द्वारा भेजे पत्र में बताया कि डीएफओ अनिल यादव द्वारा आरएफबीडीपी कैंपा व स्टेट प्लान योजनाओ के अंतर्गत जो विकास कार्य करवाए गए या करवाए जा रहे हैं। उन सभी कार्यों के सम्बंध में सोषल मीडिया के माध्यम से गंभीर भ्रष्टाचार की सूचना प्राप्त हो रही हैं। जिससे सरकार की छवि खराब हो रही है। डीएफओ यादव द्वारा पूर्व पदस्थान उपवन वन संरक्षक (वन्यजीव) राष्ट्रीय धडियाल अभ्यारण धौलपुर के दौरान इसी प्रकार का भ्रश्टाचार किया गया है, जनप्रतिनिधियो के विरोध के उपरांत एसआईटी द्वारा जांच की जा रही हैं।

सिंघवी ने रेलवे स्टेशन का निरीक्षण किया

छबड़ा (निसं)। अमृत भारत योजना के तहत रेलवे स्टेशन पर चल रहे आधुनिकरण कार्यों का विधायक प्रतापसिंह सिंघवी ने निरीक्षण किया और यहां व्यवस्थाओं का जायजा लिया। निरीक्षण के दौरान उपस्थित यात्रियों से समस्याओ के बारे में तथा रेलवे स्टेशन स्टॉफ से यात्री समस्याओं की जानकारी ली। वही, सम्बंधित फर्म को निर्देष दिए कि सभी कार्यों को उच्च गुणवत्ता एवं सुरक्षा मानकों के अनुसार संपन्न किया जाए ताकि यात्रियों को सुरक्षित और सुविधाजनक रेल यात्रा का अनुभव मिल सके। इस अवसर पर वरिश्ठ भाजपा नेता ष्याम कचनारिया, छीपाबड़ौद प्रधान नरेष मीणा, जिला परिशद सदस्य फूलसिंह मीणा, रितेष षर्मा, निरंजन षर्मा आदि मौजूद थे।

विधिक जागरुकता शिविर का आयोजन

छबड़ा (निसं)। राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जयपुर एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण बारां के निर्देशानुसार एक्शन प्लान 2025-26 के तहत विश्व स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर तालुका विधिक सेवा समिति के अधिकार मित्र हेमंत कुमार मालव द्वारा सोमवार को विधिक जागरुकता शिविर का आयोजन सरस्वती सीनियर सेकेंडरी स्कूल व विवेकानंद माध्यमिक विद्या निकेतन में किया गया। शिविर में विद्यार्थियों को बाल विवाह, नालसा एवं रालसा द्वारा चलाई जा रही जनकल्याणकारी योजनाओं तथा नालसा हेल्पलाइन नंबर 15100 के बारे में जानकारी दी। इस अवसर पर प्रिंसिपल एवं छात्र-छात्राएं मौजूद थे।

मण्डी में नीलामी अवकाश रहेगा

छबड़ा (निसं)। कृषि उपज मण्डी में गुरुवार को भगवान महावीर जयंती के उपलक्ष में नीलामी अवकाष रहेगा। शुक्रवार को नीलामी चालू रहेगी तथा शनिवार को माह का दूसरा शनिवार होने के कारण बैंक बंद रहने के चलते, रविवार को राजकीय अवकाश एवं सोमवार को डॉ. भीमराव अंबेडकर जयंती पर बैंक बंद होने के कारण नीलामी अवकाश रहेगा। यह जानकारी ग्रेन मर्चेंट एसोसिएषन अध्यक्ष किषन कालरा ने दी है।

'डेंगू नियंत्रण के लिए चलाएं एंटी लार्वा गतिविधियां, पर्याप्त मात्रा में फोगिंग हो'

कोटा, (निसं)। जिला कलक्टर डॉ.रविन्द्र गोस्वामी ने सोमवार को कलेक्ट्रेट में आयोजित बैठक में गर्मी के मौसम को देखते हुए डेंगू नियंत्रण, ग्रीष्मकालीन आश्रय स्थलों की स्थापना एवं अस्पतालों में कूलर, पीने के पानी की व्यवस्थाओं आदि की समीक्षा की। डॉ.गोस्वामी ने चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए कि समाज कल्याण विभाग, नर्सिंग कॉलेज, मेडिकल कॉलेज आदि के हॉस्टलों में फोगिंग करवाई जाए।

उन्होंने बड़े नाले के आस-पास के क्षेत्रों में भी फोगिंग करवाने एवं जहां पानी एकत्र है वहां जला हुआ ऑयल डलवाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि जहां डेंगू के केस मिले हैं वहां आसपास के क्षेत्रों का सर्वे कराएं एवं एंटीलार्वा एक्टीविटी की जाए। उन्होंने स्कूलों में डेंगू को लेकर जागरूकता के लिए एक्टीविटी आयोजित करने के भी निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि भीषण गर्मी में हीटवेव की आशंकाओं को देखते हुए अभी से तैयारियां की जाएं। उन्होंने नगर निगम उत्तर एवं दक्षिण के आयुक्तों को ग्रीष्मकालीन आश्रय स्थल स्थापित कर वहां कुर्सियां, कूलर, ओआरएस के पैकेट एवं ठंडे पानी के कैंपर रखने के निर्देश दिए।

कोटा जिला कलेक्टर ने अस्पताल का निरीक्षण किया।

उन्होंने एमबीएस हॉस्पिटल परिसर एवं न्यू मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल परिसर में प्याऊ लगाकर वहां ठंडे पानी के कैम्पर रखने के निर्देश दिए। उन्होंने वार्डों में कूलर एवं पीने के पानी की व्यवस्था करने को कहा। साथ ही, खराब पड़े एसी भी सही कराने के निर्देश दिए। नगर निगम दक्षिण के आयुक्त अनुराग भार्गव ने बताया कि शहर में विज्ञान फ्लाईओवर के नीचे, अनन्तपुरा पुराना चुंगी नाका, डीसीएम फ्लाईओवर के नीचे, न्यू मेडिकल कॉलेज, अम्बेडकर भवन, स्मार्ट सिटी बस स्टेंड, घोड़ा बाबा सर्किल, घटोत्कच्छ सर्किल, कॉमर्स कॉलेज, जवाहर नगर, महावीर नगर प्रथम एवं गोदावरी धाम पर आश्रय स्थल के लिए चिन्हित किए गए हैं। इनमें से 8 आश्रय स्थल शुरू कर दिए गए हैं।

इन आश्रय स्थलों पर यहां कुर्सियां, कूलर एवं पीने के पानी के कैम्पर रखवाए गए हैं। जिला कलक्टर ने कहा कि जिन स्थानों पर श्रमिक बड़ी संख्या में एकत्र होते हैं वहां आसपास प्याऊ की व्यवस्था रखी जाए ताकि उन्हें पीने का पानी उपलब्ध हो सके। बैठक में अतिरिक्त जिला कलक्टर प्रशासन मुकेश चौधरी, आयुक्त नगर निगम उत्तर अशोक त्यागी, केडीए सचिव कुशल कोठारी, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी उपस्थित रहे।

कलेक्टर ने देखी वार्डों में उपलब्ध सुविधाएं:- जिला कलेक्टर डॉ. रविन्द्र गोस्वामी ने सोमवार को एमबीएस अस्पताल का दौरा किया और वहां इमरजेंसी वार्ड और डेंगू मरीजों के लिए बनाए गए वार्ड का निरीक्षण किया। उन्होंने कहा कि डेंगू के मरीजों को डेंगू वार्ड में ही रखा जाए ताकि उनकी उचित देखभाल की जा सकें। उन्होंने हॉस्पिटल परिसर में प्याऊ स्थापित करने के भी निर्देश दिए ताकि अस्पताल में आने वाले मरीजों के परिजनों को पानी उपलब्ध हो सकें।

परिसर में स्थापित ग्रीष्मकालीन आश्रय स्थल में आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। डॉ.गोस्वामी न्यू मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल भी गए और वहां आपातकालीन ओपीडी एवं विभिन्न वार्डों का निरीक्षण किया। उन्होंने मेडिकल कॉलेज में बने 200 बेड के वार्ड को भी देखा। उन्होंने विभिन्न वार्डों में गर्मी से राहत के लिए कूलर एवं पीने के लिए ठंडे पानी की व्यवस्था करने के निर्देश दिए।

उन्होंने मेडिकल कॉलेज में उपलब्ध इन्फ्रास्ट्रक्चर का मरीजों के हित में सदुपयोग करने के निर्देश दिए। जिला कलक्टर ने न्यू मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल परिसर में ग्रीष्मकालीन आश्रय स्थल एवं प्याऊ स्थापित करने के भी निर्देश दिए। दौरे में अतिरिक्त जिला कलक्टर प्रशासन मुकेश चौधरी, एडीएम सीलिंग कृष्णा शुक्ला, न्यू मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल के अधीक्षक डॉ.आशुतोष शर्मा, एमबीएस हॉस्पिटल के अधीक्षक धर्मराज मीणा सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

भाविप का शपथ ग्रहण एवं सम्मान समारोह संपन्न

छबड़ा (निसं)। भारत विकास परिषद शाखा छबडा की सत्र 2025-26 के लिए नवीन कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण एवं सम्मान समारोह संपन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विधायक प्रतापसिंह सिंघवी रहे। श्याम शर्मा पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री एवं संरक्षक भारत विकास परिषद चिकित्सालय कोटा ने की। वरिष्ठ भाजपा नेता हिम्मतसिंह सिंघवी ने अति विशिष्ट अतिथि वही प्रांतीय महासचिव हिमांशु चतुर्वेदी ने पद स्थापना अधिकारी तथा प्रांतीय संरक्षक रवि प्रकाश विजय ने विशिष्ट के रूप में शिरकत की।

पदस्थापना अधिकारी हिमांशु चतुर्वेदी द्वारा नवीन कार्यकारिणी ओम प्रकाश मालव को अध्यक्ष, ओम नारायण गालव को सचिव एवं सुनील दत्त भार्गव को कोषाध्यक्ष के रूप में शपथ दिलवाई। साथ ही 25 नवीन सदस्यों को सपरिवार शपथ दिलाकर परिषद परिवार में शामिल किया गया। यहां 2023 में भारत को जानो प्रतियोगिता में प्रांत स्तर पर पहुंचने वाले सेंट्रल पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों एवं डिवाइन स्कूल के विद्यार्थियों को अतिथियों द्वारा सम्मानित किया गया। इसी क्रम में "हेलो नहीं वंदे मातरम बोलो" प्रतियोगिता में 2023 के प्रथम पुरस्कार प्राप्त जयप्रकाश कुलश्रेष्ठ, द्वितीय पुरस्कार हिना अग्रवाल, तृतीय पुरस्कार पार्युल जैन तथा 2024 में प्रथम पुरस्कार राधा पारीक, द्वितीय पुरस्कार कमलेश विजय एवं तृतीय पुरस्कार पार्युल जैन को सम्मानित किया गया। प्रतियोगिता में दोनों वर्षों के 10-10 सांत्वना पुरस्कार भी अतिथियों के कार्यक्रमों से प्रदान किए गए। पूर्व सचिव दीपक मेहता एवं नवीन सचिव ओमनारायण गालव ने बताया कि कार्यक्रम में एक अद्भभुत पहल करते हुए मनीषा भार्गव पत्नी ललित भार्गव निवासी छबडा ने देहदान एवं नेत्रदान का संकल्प लिया। इस उत्कृष्ट कार्य पर भार्गव दंपत्ति को माला पहनाकर स्वागत किया। विशिष्ट अतिथि रवि प्रकाश विजय ने हरिओम नागर को शाखा संयोजक-संपर्क, ओम प्रकाश गोचर को शाखा संयोजक-सेवा,दीपक मेहता को शाखा संयोजक-संस्कार, किरण गालव एवं उषा शर्मा को महिला सहभागिता-शाखा संयोजक, एवं आनंद जांगिड को शाखा संयोजक-पर्यावरण के रूप में शपथ दिलाई।

मोटरसाइकिल चोर गिरोह का पर्दाफाश, तीन आरोपी गिरफ्तार

कोटा, (निसं)। विज्ञान नगर थाना पुलिस टीम ने नाकाबन्दी के दौरान की गई कार्यवाही में मोटरसाईकिल चोर गिरोह का पर्दाफाश करते हुए तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने पूछताछ कर पकड़े गये आरोपियों के कब्जे से विभिन्न थाना क्षेत्रों से चोरी की गई 14 दुपहिया वाहनों को भी बरामद किया है।

पुलिस ने बाइक चोर गिरोह के तीन आरोपी पकड़े।

शहर पुलिस अधीक्षक डॉ.अमृता दुहन नें बताया कि शहर में लगातार बढ़ रही दुपहिया वाहन चोरी की बढ़ती घटनाओं को देखते हुए विशेष टीमों का गठन किया गया। शहर एसपी ने बताया कि विज्ञान नगर थानाधिकारी मुकेश मीणा के नेतृत्व में गठित टीम ने पुराने चालानशुदा अपराधियों पर निरंतर निगरानी रखी। शहर एसपी ने बताया कि विज्ञान नगर थानाधिकारी मुकेश मीणा इलाके में मय जाप्ता नाकाबंदी कर वाहनों की चैकिंग कर रहे थे। उसी दौरान बिना नम्बर की मोटरसाईकिल पर तीन जने आये जो पुलिस नाकाबंदी को देखकर मोटरसाईकिल को मोड़कर अचानक जाने लगे। शहर एसपी ने बताया कि मौके पर मौजूद पुलिस टीम ने उक्त बिना नम्बरी मोटरसाईकिल को रोका और वाहन के कागज मांगे तो वाहन के कागज नही होना बताया। पुलिस टीम ने इंजन नम्बर व चैसिस नम्बर चैक करने के बाद कार्यवाही करते हुए जिला झालावाड़ तहसील खानपुर के थाना सारोला ग्राम जावरा निवासी सोनू मीणा (21), जिला झालावाड़ हाल सूर्य नगर निवासी मनीष मीणा (18) एवं ग्राम इरली तहसील खानपुर थाना सारोला कलां जिला झालावाड़ निवासी कौशल मीणा (20) को गिरफ्तार किया। पुलिस टीम ने पकड़े गये आरोपियों के पास से विभिन्न थाना इलाकों से चुराई गई 14 मोटरसाईकिलों को बरामद किया है। शहर एसपी ने बताया कि पकड़े गये आरोपियों से अनुसंधान जारी है।

मंशापूर्ण माता मंदिर में भव्य महाआरती और भंडारे का आयोजन

कोटा, (निसं)। महावीर नगर विस्तार योजना स्थित मंशापूर्ण माता मंदिर में हर वर्ष की तरह इस बार भी भव्य महाआरती और विशाल भंडारे का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मंदिर समिति के अध्यक्ष विशेष त्यागी ने बताया कि कार्यक्रम में मुख्य अतिथि महिला कांग्रेस कोटा शहर जिलाध्यक्ष और पार्षद शालिनी गौतम व विशिष्ट अतिथि समाजसेवी मोहित गौतम रहें। कार्यक्रम की शुरुआत कन्याओं को भोजन कराकर एवं उन्हें उपहार वितरित करके की गई। इसके बाद भंडारे में हजारों श्रद्धालुओं ने प्रसादी का लाभ लिया। इस अवसर पर माताजी का विशेष श्रृंगार भी किया गया। मंदिर समिति अध्यक्ष विशेष त्यागी ने कहा कि पिछले कई वर्षो से मंशापूर्ण माता मंदिर में महाआरती और विशाल भंडारे का आयोजन किया जा रहा है। इस आयोजन में आस-पास के क्षेत्र से श्रद्धालु बड़ी संख्या में भाग लेते हैं। इस अवसर पर मुख्य अतिथि शालिनी गौतम ने कहा कि मंशापूर्ण माता मंदिर में आयोजित महाआरती और विशाल भंडारा श्रद्धा और समर्पण का एक बेहतरीन उदाहरण है। इस प्रकार के आयोजनों से न केवल हमारी धार्मिक परंपराओं को बल मिलता है, बल्कि समाज में एकजुटता और सहयोग की भावना भी मजबूत होती है।

लूट व चौथवसूली का आरोपी गिरफ्तार

कोटा, (निसं)। कैथून पुलिस टीम ने कार्यवाही करते हुए डरा धमका कर लूट व चौथ वसूली करने के मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस अधीक्षक सुजीत शंकर ने बताया कि 21 मार्च को फरियादी दुर्गेश यादव ने कैथून थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई। ग्रामीण एसपी ने बताया कि फरियादी ने रिपोर्ट में कहा कि कोटा तेल डिपो से टैंकर को भरकर बाहर निकला तब रमेश गुर्जर ने उसकी गाड़ी को रूकवाया और गाड़ी से खींचकर थोड़ी दूर ले गया और 5 हजार रूपये की मांग करते हुए मारपीट की और घटना का विडियो बना कर वायरल करने की धमकी दी और कहा कि टैंकर चलाना है तो हर महीने का हफ्ता देना पड़ेगा। फरियादी ने रिपोर्ट में कहा कि रमेश गुर्जर ने मारपीट की और जेब में रखे 20 हजार रूपये भी निकाल लिये। फरियादी की रिपोर्ट पर मामला दर्ज किया गया। कोटा ग्रामीण एसपी ने बताया कि लूट व चौथ वसूली का मामला सामने आने के बाद आरोपी की गिरफ्तारी के लिये पुलिस उपअधीक्षक राजेश ढाका व कैथून थानाधिकारी संदीप शर्मा के नेतृत्व में टीम का गठन किया गया। ग्रामीण एसपी ने बताया कि मुखबीर की सूचना पर पुलिस टीम ने कार्यवाही करते हुए रामराजपुरा निवासी रमेश गुर्जर (47) को गिरफ्तार किया।

सर्किल का चेटीचंड महोत्सव, वार्षिकोत्सव व सम्मान समारोह संपन्न

कोटा, (निसं)। सिंधु सोशल सर्किल का चेटीचंड महोत्सव का समापन एवं वार्षिकोत्सव सम्मान समारोह के साथ सिन्धु सोशल सर्किल भवन श्रीनाथपुरम में संपन्न हुआ। समारोह की मुख्य अतिथि पुष्पा हरवानी, उपमहानिरीक्षक पंजीयन एवं भगवान करमचंदानी, वित्तीय सलाहकार कोटा विश्वविद्यालय रहे। समारोह में सभी अतिथियों का स्वागत अध्यक्ष कमल सपरा द्वारा किया गया।

इस अवसर पर सर्किल के संशोधित संविधान की पुस्तिका का विमोचन अतिथियों, सर्कल के संस्थापक सचिव गोपाल सपरा, वर्ष 2024-25 के अध्यक्ष कमल सपरा, सचिव राजेश ग्वालानी, 2025-26 के संरक्षक राजकुमार खूबचंदानी, अध्यक्ष विमल परियानी और सचिव किशन रतनानी द्वारा किया गया। सचिव राजेश ग्वालानी ने वर्ष पर्यंत कार्यक्रमों की पूरी रिपोर्ट पीपीटी द्वारा दिखाई। आभार उपाध्यक्ष संतोष करमचंदानी द्वारा दिया गया। मंच संचालन सांस्कृतिक सचिव किशन रतनानी द्वारा किया गया। वार्षिक उत्सव में सत्र 2024-25 में सेवाएं देने वाले सदस्यों को अतिथियों, अध्यक्ष कमल सपरा, सचिव राजेश ग्वालानी, सांस्कृतिक सचिव किशन रतनानी, सर्किल के संस्थापक सचिव गोपाल सपरा द्वारा सम्मानित किया गया।

सिंधु सोशल सर्किल का चेटीचंड महोत्सव का समापन एवं वार्षिकोत्सव सम्मान समारोह आयोजित हुआ।

सर्कल को वर्षपर्यंत सहयोग करने वाली विभिन्न सामाजिक संस्थाओं श्री करणी नगर विकास समिति, श्री झूलेलाल सेवा समिति, श्रीकृष्ण मुरारी गौशाला, अपना घर, सेवा धाम, केंद्रीय सिंधी महिला पंचायत, आनंदपुर दरबार, नारीशाला, विज्ञान नगर व स्टेशन पंचायत एवं सिंधु चिकित्सालय के पदाधिकारीयों को भी सम्मानित किया गया। इनका सम्मान सर्किल परिवार की रुचि सपरा, सिमरन ग्वालानी, भगवती खूब चंदानी, निर्मला आहूजा पूनम रतनानी, डीएन नेनानी आदि ने किया। मुख्य अतिथि पुष्पा हरवानी ने कहा कि सर्किल ने समाज के हर क्षेत्र में जो कार्य किए हैं वह प्रशंसनीय है, उन्होंने सभी कार्यक्रमों में महिलाओं की भागीदारी को भी सराहा और कहा की सामाजिक कार्यों में महिलाओं की वर्तमान भूमिका समाज की बदलती सोच को दर्शाती हैं। समारोह में सिंधु महिला सर्किल की ओर से सिंधी गीतों पर एक सामूहिक नृत्य की प्रस्तुति दी गई।

प्रस्तुति देने वाले सभी प्रतिभागियों को सर्किल की ओर से सम्मानित किया गया। समारोह में सिंधु महिला सर्किल के पदाधिकारी एवं सदस्य और सिंधु यूथ सर्किल के पदाधिकारी भी उपस्थित रहे।

पश्चिम मध्य रेल

निविदा सूचना

सिगनल एवं दूर संचार विभाग

दिनांक 05.04.2025

भारत संघ के राष्ट्रपति के लिए एवं उनकी ओर से वरि.म. सं. एवं दू.स इंजी. (सिगनल एवं दूर संचार) पश्चिम मध्य रेलवे कोटा मंडल निम्नलिखित कार्यो के लिये निर्धारित ई-निविदाएं आमंत्रित करते हैं। टेण्डर खुलने की तारीख एवं समय नीचे दर्शाया गया है। इस निविदा के लिये किसी भी तरह के मैनुअल प्रस्तावों की अनुमति नहीं है और किसी भी तरह के प्राप्त मैनुअल प्रस्ताव को नजरअंदाज कर दिया जायेगा। **टेन्डर सं.-** कोटा/एसएण्डटी/सिग./2024/18R1, **कार्य का नाम**-कोम्परहेंसिव एनुअल मेंटिनेंस कॉन्ट्रैक्ट (एएमसी) फोर इंटिग्रेटेड पावर सप्लाई सिस्टम (आईपीएस) ऑफ एचबीएल मेक ऑन कोटा डिविजन। (2025) **कार्य की अनुमानित लागत**-Rs 74,31,915.18, **बयाना राशि**-Rs 1,48,600/-, **तारीख एवं समय**- दिनाँक 02.05.2025 को तक 15:00 बजे तक। पूर्ण विवरण वेबसाइट http://www.ireps.gov.in पर अपलोड की गई हैं। निविदा/ बोलीदाताओं के पास कक्षा III डिजीटल हस्ताक्षर प्रमाणपत्र होना आवश्यक है और आई.आर.ई.पी.एस. पोर्टल पर रजिस्टर होना चाहिये। केवल पंजीकृत निविदा/ बोलीदाताओं ई-टेण्डरिंग पर भाग ले सकते है। सभी आवश्यक दस्तावेज ई-निविदा में भाग लेने के समय में अपलोड किया जाना चाहियें। पंजीकृत निविदा एण्ड GSTIN रजिस्टर होना चाहिये।

वरि.मं.सं.एवं दू.सं.इंजी./ समन्वय
पश्चिम मध्य रेलवे, कोटा मण्डल

स्वच्छ भारत अभियान, एक कदम स्वच्छता की ओर

नाम परिवर्तन

MY NAME HAS BEEN CHANGED FROM TAHA CHEEWALA TO TAHA SO I WOULD BE RECOGNISED BY MY NEW NAME TAHA WITH IMMEDIATE EFFECT FROM:- TAHA S/O KHUZEMA, SUBZEE BAZAR JHALRAPATAN DIST JHALAWAR RAJASTHAN, 326023

संख्यांक-4
संक्षिप्त वाद का सम्मन
आदेश 37 नियम 2
CS 46/2021
पे. 09.04.2025

विरुद्ध कैनरा बैंक

प्रतिवादीगण मैसर्स कैलाश जूट ट्रेडर्स जरिये प्रो. मुकेश चन्द गोस्वामी, द्वारा बाबूलाल गोस्वामी निवासी दुकान नं. पी-5 भामाशाह मण्डी कोटा (राज.)

वादी बैंक ने सिविल प्रक्रिया संहिता 1908 के आदेश के 37 के अधीन आपके विरुद्ध 360382 रु. और ब्याज के लिए संस्थित किया है आपको सम्मन दिया जाता है कि आप इस सम्मन को तामील होने की तारीख से 10 दिन के भीतर उपसंजात हाजिर हो। यदि आप ऐसा नहीं करेंगे तो 10 दिन की अवधि बीत जाने के पश्चात वादी को रु. अधिक राशि के लिए और खर्चों के बाबत रु. की राशि के लिए ऐसा ब्याज सहित यदि हो जैसा न्यायालय आदिष्ट कर डिग्री अभिप्राप्त करने का हक होगा।

यदि उपसंजात होते है तो वादी तत्पश्चात आपकी निर्णय के लिए समय तामील करेगा जिसकी सुनवाई के समय आपकी वाद की प्रतिक्षा करने इजाजत के लिए न्यायालय में समवादन करने का हक होगा।

यदि आप शपथ पत्र द्वारा या आपका न्यायालय यह समाधान कर देते है कि यदि वाद की प्रतिरक्षा गुणावगुण के आधार पर की जा सकती है या युक्ति युक्त है कि आपके प्रतिरक्षा करने के लिए अनुदान की जानी चाहिए तो प्रतिरक्षा करने की इजाजत दी जा सकेगी।

यह आज तारीख............को मेरे हस्ताक्षर से और न्यायालय की मुद्रा लगाकर दिया जाता है।

मोहर अदालत

आज्ञानुसार
अति. वरिष्ठ मुख्य न्यायाधीश
एवं अतिरिक्त मजिस्ट्रेट कोटा

कार्यालय क्षेत्रीय प्रबन्धक, रीको, रानपुर, कोटा **आम सूचना**

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि भूखण्ड संख्या ई-29, औ.क्षे. एग्रो फूड पार्क प्रथम, रानपुर क्षेत्रफल 4000.00 व.मी. का आवंटन दिनांक 17.07.2004 को मैसर्स प्रेम इण्डस्ट्रीज प्रो. श्री लक्ष्मीचन्द जैन के पक्ष में किया गया। जिसकी लीजडीड का निष्पादन दिनांक 18.01.2005 को करवाया गया। उक्त भूखण्ड के प्रोपराईटर श्री लक्ष्मीचन्द जैन की मृत्यु उपरान्त उक्त भूखण्ड का हस्तान्तरण रीको कार्यालय के आदेश दिनांक 07.09.2021 द्वारा श्री केसरीमल जैन के पक्ष में किया गया। यह कि श्री केसरीमल जैन का देहान्त दिनांक 18.03.2023 को हो चुका है। मृतक आवंटी श्री केसरीमल जैन द्वारा उनके पुत्र श्री रोहित जैन के पक्ष में दिनांक 01.02.2023 को निष्पादित व दिनांक 23.05.2023 को पंजीकृत वसीयत नामा, मृत्यु प्रमाण पत्र, शपथ पत्र, क्षतिपूर्ति बंधपत्र दस्तावेजों को पेश करते हुए इस भूखण्ड संख्या ई-29, औ.क्षे. एग्रो फूड पार्क प्रथम, रानपुर के लीजहोल्ड राईट्स श्री रोहित जैन पुत्र श्री केसरीमल जैन द्वारा स्वयं के पक्ष में हस्तान्तरण करने हेतु निवेदन किया गया है।

इस भूखण्ड संख्या ई-29, औ.क्षे. एग्रो फूड पार्क प्रथम, रानपुर के लीजहोल्ड राईट्स श्री रोहित जैन द्वारा प्रस्तुत वसीयत नामा निष्पादित दिनांक 01.02.2023 व पंजीयन दिनांक 23.05.2023, मृत्यु प्रमाण पत्र, शपथ पत्र, क्षतिपूर्ति बंधपत्र आदि दस्तावेजों के आधार पर श्री रोहित जैन के पक्ष में हस्तान्तरण की अग्रिम कार्यवाही अमल में लाये जाने के पूर्व इस आम सूचना के जरिये सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि अगर किसी भी व्यक्ति/फर्म अथवा सरकारी/अर्द्ध सरकारी संस्थान अथवा वित्तीय संस्थान को भूखण्ड संख्या ई-29, औ.क्षे. एग्रो फूड पार्क प्रथम, रानपुर के हस्तान्तरण के संबंध में किसी प्रकार की यदि कोई आपत्ति हो तो वह अपनी लिखित आपत्ति इस सूचना के प्रकाशन के 30 दिवस के भीतर अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में मय दस्तावेजी सबूत के साथ व्यक्तिशः उपस्थित होकर प्रस्तुत कर सकता है। कृपया विदित रहे कि दी गई मियाद निकलने के पश्चात् प्राप्त हुई किसी भी शिकायत/आपत्ति पर कोई गौर नही फरमाया जायेगा और नियमानुसार प्राप्त उपरोक्त अंकित आवेदन पत्र/दस्तावेजों पर इस कार्यालय द्वारा नियमानुसार भूखण्ड के हस्तान्तरण की कार्यवाही अमल में लाई जावेगी। क्षेत्रीय प्रबन्धक, रीको, रानपुर

कोटा विकास प्राधिकरण, कोटा

क्रमांक:-एफ/तहसील/क.ब./2025/986 दिनांक:-7.4.25

नाम हस्तान्तरण हेतु विज्ञप्ति आम सूचना

कोटा विकास प्राधिकरण द्वारा कच्ची बस्ती नियमन के तहत सर्वे संख्या 108 कच्ची बस्ती गोबरिया बावडी का पट्टा नियमन क्रमांक नियम/आवंटन/105 दिनांक 10.08.2003 को श्री रामविलास मीणा पुत्र श्री गेंदीलाल एवं श्रीमती गीता बाई पत्नी रामविलास को आवंटित किया गया था। आवंटी श्री रामविलास का स्वर्गवास दिनांक 01.09.2024 एवं श्रीमती गीता बाई का स्वर्गवास दिनांक 20.09.2011 को हो जाने के कारण आवेदक द्वारा प्रस्तुत हक त्याग रिलीज डीड दिनांक 22.09.2023 एवं शपथ पत्र एवं मृत्यु प्रमाण पत्र के आधार पर श्री राजेन्द्र मीणा पुत्र स्व. श्री रामविलास मीणा ने स्वयं के नाम हस्तान्तरण हेतु आवेदन किया है। जिसका नाम हस्तांतरण प्रस्तावित है।

अतः उक्त नाम हस्तांतरण के संबंध में जिस किसी भी व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो वह 7 दिवस में अपनी आपत्ति कार्यालय में स्वयं उपस्थित होकर लिखित में प्रस्तुत कर देवें। अन्यथा बाद मियाद उक्त आवास का नाम हस्तान्तरण श्री राजेन्द्र मीणा पुत्र स्व. श्री रामविलास मीणा के नाम से कर दिया जावेगा। उपायुक्त कोटा विकास प्राधिकरण, कोटा

कार्यालय कोटा विकास प्राधिकरण, कोटा

क्रमांक:-एफ-15/कृ.भू.रू./2025/38 **विज्ञप्ति** दिनांक:-07.04.2025

सर्व साधारण को जर्ये विज्ञप्ति सूचित किया जाता है कि ग्राम बोरखेडा में स्थित कृषि भूमि योजना गायत्री विहार भूखंड संख्या 76-ए खसरा नं. 94, 95 के नाम हस्तान्तरण करने हेतु न्यास कार्यालय में आवेदक श्री हरि कुमार पुत्र श्री गणपत लाल निवासी 76-ए गायत्री विहार द्वितीय केनाल रोड बोरखेडा कोटा राजस्थान द्वारा ऑनलाईन आवेदन पत्र प्रस्तुत किया है। उक्त भूखंड का पट्टा क्रमांक 888 दिनांक 15.03.2021 को श्रीमती इन्द्रा बाई पत्नी श्री हरि कुमार के पक्ष में जारी किया गया था। आवेदक द्वारा संलग्न मृत्यु प्रमाण पत्र के अनुसार पट्टेधारी की मृत्यु दिनांक 15.07.2023 को हो चुकी है। पट्टेधारी श्रीमती इन्द्रा बाई की मृत्यु उपरांत विधिक वारिसान (1) कृष्णकान्त एवं (2) सूरज मेघवाल द्वारा श्री हरि कुमार पुत्र श्री गणपत लाल के पक्ष में पंजीकृत रिलीज डीड दिनांक 27.02.2025 से उक्त भूखंड का हक त्याग कर दिया है। आवेदक द्वारा प्रस्तुत (1) रिलीज डीड (2) शपथ पत्र एवं (3) मृत्यु प्रमाण पत्र के आधार पर नाम हस्तांतरण चाहा गया है।

अतः श्री हरि कुमार पुत्र श्री गणपत लाल के नाम हस्तान्तरण जारी किये जाने में यदि किसी व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो अन्दर 7 योम कार्यालय में उपस्थित होकर अथवा लिखित में अद्योहस्ताक्षरकर्ता को प्रस्तुत करें। मियाद गुजर जाने के बाद आपत्ति मान्य नही होगी।

उपायुक्त कोटा विकास प्राधिकरण कोटा

कार्यालय नगर पालिका रावतभाटा, जिला -चित्तौड़गढ़ (राज.)

क्रमांक/नपारा/भूमि/2025-26/100 दिनांक:-03.04.2025

सार्वजनिक आपत्ति सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदनकर्ता श्री प्यारा पिता श्री हीरालाल निवासी रावतभाटा जिला चित्तौड़गढ़ (राज.) द्वारा इस कार्यालय में ऑनलाईन आवेदन पत्र मय शपथ पत्र प्रस्तुत कर नगर पालिका रावतभाटा के श्रीगणेश नगर आवासीय योजना रावतभाटा के आवासीय भूखंड संख्या 256 श्रेणी (अ) साईज 25x50 क्षेत्रफल 1250 वर्गफीट अर्थात 116.17 वर्गमीटर के स्वामित्व संबंधी एवं अन्य वांछित दस्तावेजों की प्रतियों को ऑनलाईन अपलोड करवाकर इस भूखंड पर आवासीय भवन निर्माण स्वीकृति व नक्शानुमोदन हेतु आवेदन मय प्रस्तावित भवन निर्माण के नक्शों की प्रतियों सहित प्रभावी मॉडल राजस्थान भवन विनियम 2020 के प्रावधानों के तहत निर्माण स्वीकृति एवं नक्शानुमोदन बाबत प्रस्तुत किया है।

अतः उपरोक्त प्राप्त आवेदन से संबंधित प्रस्तावित कार्यवाही को पालिका द्वारा आवेदक के पक्ष में निष्पादित किये जाने पर जिस किसी भी व्यक्ति/फर्म/विभाग/संस्था को उक्त कार्यवाही पर कोई उजर या आपत्ति हो तो इस सूचना के प्रकाशन से 07 दिवस के अन्दर इस कार्यालय में मय साक्ष्य/सबूत के प्रस्तुत कर सकते है, अन्यथा मियाद गुजरने के पश्चात कोई भी उजरदारी या आपत्ति मान्य नहीं होगी। सूचित रहे।

अधिशाषी अधिकारी नगर पालिका रावतभाटा

डोटासरा और जूली उदयपुर में सीआईडी सीबी के कार्यालय में पेश हुए

■ डोटासरा ने कहा : मंत्री मदन दिलावर पर 14 मुकदमे दर्ज हैं, उनको भी बुलाओ

उदयपुर, (कासं)। राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा और नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली सोमवार को उदयपुर में सीआईडी सीबी के कार्यालय में पेश हुए और कोटा मामले में अपना बयान दिया। बयान देने के बाद उन्होंने राजस्थान सरकार को निशाने पर लेते हुए कहा कि सरकार के मंत्री मदन दिलावर पर एक दर्जन से ज्यादा मामले हैं, इस पर भी सरकार को गौर कर आगे बढ़ाना चाहिए।

डोटासरा और जूली उदयपुर शहर के माछला मगरा स्थित सीआईडी सीबी क्राइम ब्रांच में पहुंचे और यहां एडिशनल एसपी अनिल मीणा के समक्ष पेश हुए। दोनों ने कोटा में दर्ज मामले की जांच में बयान दिए। बाहर आकर डोटासरा ने कहा कि जो भी बयान उन्होंने रिकॉर्ड किए उसमें हमने सहयोग किया और अपना बयान दिया। डोटासरा ने कहा कि उनके पीएसओ के पास सीआईडी से फोन आया और कहा कि कोटा वाले मामले में बयान लेने हैं तो जयपुर आएं। डोटासरा ने कहा कि वे खुद ही उदयपुर आकर बयान दे देंगे। इस दौरान डोटासरा ने कहा कि कोटा के अंदर कोटा देहात की ओर से सरकार की खिलाफ जनता के मुद्दों को लेकर धरना प्रदर्शन किया था। उसमें मैं और जूली शामिल हुए थे। शांतिपूर्वक सब कुछ हुआ और सरकार की समस्याओं को लेकर हमने आवाज उठाई। वहां सरकार के दबाव में रात को एक गलत एफआईआर दर्ज कराई और उसी को लेकर आज यहां हम कानून का पालन करते हुए अपना बयान दर्ज कराया और पूछताछ की उसका जवाब दिया। मैं सरकार को कहना चाहता हूं जनता के कल्याण और समाधान के लिए सरकार है न कि प्रतिपक्ष की आवाज दबाने के लिए। ये हम और जनता बर्दाश्त नहीं करेगी। जो आरोप हम पर लगाए गए हैं वह हम राजनीतिक और उच्च अधिकारियों के दबाव में हुआ है। हमने पुलिस के साथ धक्का-मुक्की की इस तरह की रिपोर्ट दी जबकि ऐसा हमने नहीं किया है। उन्होंने कहा कि मैं कहना चाहता हूं कि कोई कितना भी बड़ा अधिकारी हो वह जनता के लिए है जनता को कुचलने के लिए नहीं है। डोटासरा ने कहा सरकार में शर्म बची है तो शिक्षामंत्री मदन दिलावर के खिलाफ 14 मुकदमे दर्ज हैं आज तक उसका चालान नहीं हुआ है, उनको भी बुलाओ। कोई कितना भी बड़ा व्यक्ति हो उसके खिलाफ अनुसंधान जल्द हो, मुलजिम बनता है तो जल्दी बनाए नहीं तो उस पर एफआर लगाएं।

विधानसभा के नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने कहा कि कांग्रेस के कार्यकर्ता निडर यौद्धा राहुल गांधी के सिपाही हैं। वे भी राहुल की तरह भाजपा से न डरेंगे, न झुकेंगे। हम सब मिलकर भाजपा से डटकर लडेंगे। जूली किसानों के हक-अधिकारों की लड़ाई लड़ने के दौरान 24 जून, 24 को सरकार द्वारा उनके खिलाफ दर्ज करवाये गये झूठे मुकदमे के सिलसिले में बयान दर्ज करवाने के लिये उदयपुर स्थित सीआईडी सी.बी. के कार्यालय पहुंचे। उन्होंने कहा कि कांग्रेस किसान, मजदूर, दलित, शोषित और पीड़ित के अधिकारों की रक्षा के लिये सदैव लडती रहेगी। कांग्रेस भाजपा सरकार की दमनकारी नीतियों के आगे झुकने वाली नहीं है।

प्रतिपक्ष के नेता टीकाराम जूली ने सरकार को चेतावनी दी है कि सरकार ने विधानसभा के सदन में भी प्रतिपक्ष की आवाज को दबाने का काम किया और सदन के बाहर भी सत्ता की ताकत के बल पर विपक्ष को दबायेगी, तो कांग्रेस इसे बर्दाश्त नहीं करेगी। वह जनता की आवाज बनकर उनके हक-हकूक की रक्षा के लिये सदन से लेकर सड़क तक संघर्ष करती रहेगी।

आम रास्ते को बंद किया

खेतड़ी, (निसं)। पचेरी कलां पुलिस ने शराब ठेका बंद करवाने के लिए आम रास्ता बंद करने के मामले में दो जनों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपियों में एक थाने का हिस्ट्रीशीटर है।

थानाधिकारी राजपाल सिंह यादव ने बताया कि पुलिस को सुचना मिली की ग्राम सोहली से दुलोठ की तरफ जाने वाले रास्ते पर कुछ लोग शराब के ठेके को लेकर प्रर्दशन कर रहे हैं। जब पुलिस टीम मौके पर पहुंची तो ग्राम सोहली से दुलोठ जाने वाले रास्ते पर 7-8 व्यक्ति बैठे थे जिनसे जानकारी की गयी तो बताया कि ग्राम सोहली में शराब ठेका बन्द होना चाहिए नहीं यह रास्ता बन्द कर दिया जाएगा। इस दौरान पुलिस द्वारा समझाइश करने पर कुछ व्यक्ति तो मान गए, लेकिन हिस्ट्रीशीटर अनूज उर्फ पप्पू पुत्र रामप्रताप निवासी सोहली, महेन्द्र पुत्र भगवानसिंह नहीं माने। उन्हें समझाने का काफी प्रयास किया, लेकिन वह रास्ता खोलने की बजाय पुलिस से उलझने लगे। इस दौरान पुलिस ने शांति व्यवस्था कायम रखने लिए एचएस अनुज ऊर्फ पप्पु व महेन्द्र को गिरफ्तार कर लिया।

परियोजना निदेशक ने की आरयूआईडीपी व रूडसिको के कार्यों की समीक्षा

कोटा, (निसं)। राजस्थान नगरीय आधारभूत विकास परियोजना (आरयूआईडीपी) के परियोजना निदेशक एवं रूडसिको के कार्यकारी निदेशक पीयूष सामरिया ने सोमवार को जिला कलक्टर डॉ.रविन्द्र गोस्वामी एवं संबंधित अधिकारियों के साथ सर्किट हाउस में बैठक कर परियोजना के तहत किए गए कार्यों एवं अन्य परियोजनाओं की प्रगति की समीक्षा की। सीवरेज कार्यों का निरीक्षण भी किया। कार्यकारी निदेशक सामरिया ने जिला कलक्टर डॉ. रविन्द्र गोस्वामी एवं संबंधित विभागीय अधिकारियों के साथ बैठक कर सीवरेज परियोजना के तहत निर्मित परिसंपत्तियों को संबंधित विभागों को हस्तांतरण के बारे में चर्चा की। उन्होंने कहा कि निर्मित परिसंपत्तियों के शीघ्र हस्तांतरण की कार्यवाही की जाए। साथ ही, हस्तांतरण के उपरांत सुचारू रखरखाव के लिए समय-समय पर फीडबैक लिया जाए ताकि आमजन को सीवरेज प्रणाली का लाभ जल्दी और निरंतर मिलता रहे। एनजीटी की गाईडलाईन अनुसार कार्य संपादित करने के निर्देश दिऐं।

उन्होंने अमृत योजना फेज 1 व 2 की समीक्षा कर निर्देश दिए कि मिसिंग लिंक की पहचान कर आगे की कार्यवाही सुनिश्चित की जाए। उन्होंने कहा कि पूर्णता की ओर जा रही परियोजनाओं को बरसात से पूर्व पूरा कर लिया जाए। योजनाएं गुणवत्ता के साथ निर्धारित टाईमलाईन पर पूर्ण हो, यह सुनिश्चित करें। उन्होंने जानकारी ली कि कितनी बस्तियों का ड्रेनेज चम्बल नदी में हो रहा है। साथ ही, निर्देश दिए कि ऐसी बस्तियों को चिन्हित कर सर्वे कराया जाए और ड्रेनेज सिस्टम का प्रस्ताव तैयार किया जाए। परियोजना निदेशक ने अर्फोडेबल आवासीय योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना की भी संबंधित अधिकारियों के साथ समीक्षा कर आवश्यक निर्देश दिऐं। बैठक में कोटा विकास प्राधिकरण के सचिव कुशल कोठारी, नगर निगम कोटा उत्तर के आयुक्त अशोक त्यागी, नगर निगम कोटा दक्षिण के आयुक्त अनुराग भार्गव, आरयूआईडीपी के अतिरिक्त परियोजना निदेशक प्रथम देवेन्द्र कुमार मीना, नगर निगम उत्तर, दक्षिण व विकास प्राधिकरण के मुख्य अभियंता सहित अन्य संबंधित विभाग के अधिकारी उपस्थित रहे।

कार्यों का किया निरीक्षण:- कार्यकारी निदेशक पीयूष सामरिया ने आरयूआईडीपी द्वारा विकसित 40 एम.एल.डी. एवं रूडसिको द्वारा निर्मित 20 एम.एल.डी. सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट धाकड़खेड़ी का निरीक्षण किया और प्लांट की कार्यप्रणाली एवं स्काडा सिस्टम की बारीकियों को समझा। आरयूआईडीपी के अधीक्षण अभियंता राकेश गर्ग ने बताया कि कोटा शहर में सीवरेज प्रणाली के विकास के लिए विभिन्न कार्य किए गए हैं जिनमें 4 सीवेज ट्रीटमेंट प्लांटस का निर्माण कार्य शामिल है।

आश्रय स्थलों की व्यवस्था की

कोटा, (निसं)। शहर में भीषण गर्मी के मध्यनजर नगर निगम कोटा दक्षिण क्षेत्राधिकार में आश्रयविहीन आमजन को अधिक तापमान से बचाव हेतु ग्रीष्मकालीन निःशुल्क अस्थाई आश्रयस्थल प्रारम्भ किये जाकर ठहरने की व्यवस्था की गई है। इस संबंध में अनुराग भार्गव आयुक्त नगर निगम कोटा दक्षिण ने बताया कि अस्थाई आश्रय स्थल सुधा हॉस्पिटल के सामने विज्ञाननगर फ्लाई ऑवर के नीचे, अनन्तपुरा पुराना चुंगीनाका, डीसीएम फ्लाई ऑवर के नीचे, न्यू मेडिकल कॉलेज, अम्बेडकर भवन, 80 फीट रोड़ पर स्मार्ट सिटी बस स्टेण्ड, घोड़े वाले बाबा सर्किल, कोटा कोमर्स कॉलेज, जवाहर नगर, महावीर प्रथम सज्जन मेडिकल के पास, गोदावरी धाम, एवं घटोत्कच्छ सर्किल पर संचालित किये जा रहे है।

केन्द्रीय पर्यटन मंत्री ने हिन्दूसिंह के परिवार को ढांढस बंधाया

बाड़मेर, (नि.सं.)। केन्द्रीय पर्यटन मंत्री गजेन्द्रसिंह शेखावत ने सोमवार को बाड़मेर प्रवास के दौरान चौहटन में पंचायत समिति सदस्य हिन्दूसिंह राठौड़ के आकस्मिक निधन पर उनके परिजनों को ढांढस बंधाया। उन्होंने राठौड़ के निधन को अपूरणीय क्षति बताया।

केन्द्रीय पर्यटन मंत्री गजेन्द्रसिंह शेखावत ने विभिन्न जनप्रतिनिधियों के साथ पंचायत समिति सदस्य हिन्दूसिंह राठौड़ के आवास पहुंचकर उनके शोक संतप्त परिवार को सांत्वना दी। उन्होंने कहा कि राठौड़ के आकस्मिक निधन से समाज के साथ उनको व्यक्तिगत क्षति हुई है। राठौड़ सदैव जनहितार्थ कार्यों के साथ आमजन के लिए तत्पर रहते थे। उनका योगदान सदैव स्मरणीय रहेगा। उन्होंने स्वर्गीय राठौड़ को श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए शोक संतप्त परिवार को इस दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की। केन्द्रीय पर्यटन मंत्री शेखावत ने स्वर्गीय राठौड़ की चाची विरध कंवर के आकस्मिक निधन होने पर श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए शोक संतप्त परिवार को सांत्वना दी। इस दौरान चौहटन विधायक आदूराम मेघवाल, पोकरण विधायक महंत प्रतापपुरी महाराज, सिवाना हमीरसिंह भायल, पूर्व केंद्रीय मंत्री कैलाश चौधरी, समाजसेवी अनंतराम विश्नोई, स्वरूपसिंह खारा, चौहटन प्रधान रूपाराम सारण, जिला परिषद सदस्य रूपसिंह राठौड़ समेत कई जनप्रतिनिधि एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

कृषि मंडी में आग से लाखों रुपए की ऊन जली

ब्यावर, (निसं.)। उदयपुर रोड स्थित कृषि मंडी में अज्ञात कारणों से ऊन के ढेर में आग लग गई। आग लगने से सम्पूर्ण कृषि मंडी परिसर में अफरा-तफरी मच गई। आग लगने की सूचना पर नगर परिषद की दमकल मौके पर पहुंची। हवा के चलते जलती हुई आग का फैलाव लगभग आधे किलोमीटर तक फ़ैल गया। दमकल कर्मियों ने आग पर काबू पाने का प्रयास किया। आगजनी की घटना में कृषि मंडी प्लेटफार्म पर रखा लाखों रुपए की ऊन जलकर राख हो गई। आगजनी की घटना की सूचना पर उपखण्ड अधिकारी दिव्यांश सिंह, डिप्टी राजेश कसाना तथा तहसीलदार हनुत सिंह रावत, विधायक शंकर सिंह रावत भी मौके पर पहुँचे।

अवैध मादक पदार्थ सप्लायर गिरफ्तार

चौमू/कालाडेरा, (निसं)। कालाडेरा थाना पुलिस ने मादक पदार्थ (गांजा) सप्लायर को गिरफ्तार किया है। आनन्द शर्मा उप महानिरीक्षक पुलिस सह पुलिस अधीक्षक जिला जयपुर ग्रामीण ने जानकारी देते हुए बताया है ।

कि तीन अप्रैल को डीएसटी टीम जयपुर ग्रामीण व पुलिस थाना गोविन्दगढ़ की टीम द्वारा ऑपरेशन नॉकआउट अभियान के तहत कार्रवाई करते हुए अवैध मादक पदार्थ गांजा 11.815 किलोग्राम जप्त कर एक आरोपी हरिपाल मीणा को गिरफ्तार किया था। प्रकरण का अग्रिम अनुसंधान कालाडेरा थानाधिकारी बाबूलाल मीणा द्वारा किया जा रहा था। प्रकरण में गिरफ्तारखुदा नशा कारोबारी से मादक पदार्थ गांजा किस व्यक्ति से लेकर आया इसके संबंध में अनुसंधान किया गया तो आरोपी हरिपाल मीणा निवासी गुवारडी थाना कालाडेरा ने बताया कि उक्त गांजा में अभिषेक मीणा उर्फ काना पुत्र भगवान सहाय निवासी मीणों का मोहल्ला उदयपुरिया थाना सामोद से लेकर आया था। प्रकरण में आरोपी गांजा सप्लायर की गिरफ्तारी हेतु थानाधिकारी कालाडेरा बाबूलाल मीणा के नेतृत्व में पुलिस टीम का गठन किया गया। गठित टीम द्वारा आसूचना संकलन व तकनीकी सहायता द्वारा गांजा सप्लाई करने के मामले में वांछित मुल्जिम अभिषेक मीणा उर्फ काना को दस्तयाब कर पूछताछ की गई तो हरिपाल मीणा को अवैध गांजा देना बताने पर प्रकरण में गिरफ्तार किया गया है।

घरेलू गैस सिलेंडर पर 50 रुपये की भारी बढ़ोतरी घोर निंदनीय

कोटा, (निसं)। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता मनोज दुबे ने केंद्र सरकार के द्वारा घरेलू गैस सिलेंडर की कीमत में 50 रुपये की भारी बढ़ोतरी किए जाने की घोर निंदा करते हुए कहा की महंगाई से तड़पती आमजनता के जख्मों पर केंद्र सरकार ने नमक छिड़क दिया है। महंगाई से न थाली बची, न थाली में रोटी पकाने वाला गैस सिलेंडर मनोज दुबे ने कहा की देश की जनता पहले से ही महंगाई से त्रस्त है और केंद्र सरकार ने एक और बड़ा झटका देते हुए घरेलू गैस सिलेंडर के दाम 50 रूपये बढ़ा दिए हैं। आज ही पेट्रोल-डीजल पर 2 रुपए प्रति लीटर एक्साईज ड्यूटी बढ़ाई गई है। भाजपा की डबल इंजन की सरकार डबल पॉवर से महंगाई बढ़ा कर आम आदमी की मुश्किलें बढ़ाने में कोई कसर नहीं छोड़ रही है। मनोज दुबे ने कहा की घरेलू गैस सिलेंडर के दाम में 50 रुपया की वृद्धि कर केंद्र सरकार ने आम आदमी पर महँगाई का चाबुक चलाया है। देश में पहले से ही रसोई का बजट आसमान छू रहा था, दाल, सब्ज़ियों, खाद्य तेल, आटा और राशन का अन्य सामान पहले से ही महँगा है। अलग अलग संस्थाओं की रिपोर्ट बताती है कि बढ़ी हुई महँगाई के कारण लोग कर्ज के बोझ में डूबते जा रहे है।

ब्यावर गैस दुखांतिका वॉरियर्स का सम्मान किया

■ केमिकल फैक्टरी में 31 मार्च को 25 टन केमिकल से भरे हुए टैंकर में आग लग गई थी

■ बिना सुरक्षा उपकरणों के मौका स्थल पर पहुंच कर बचाव कार्य किया था

ब्यावर, (निसं)। विप्र सेना जिला शाखा ब्यावर की ओर से ब्यावर गैस दुखांतिका वॉरियर्स का सम्मान किया गया। जानकारी के अनुसार बलाड़ रोड स्थित एक केमिकल फैक्टरी में 31 मार्च को 25 टन केमिकल से भरे हुए टैंकर जिसको धातु गलने के काम में लिया जाता है में गैस हुए गैस रिसाव के कारण हुई दुखांतिका घटित हुई थी। बिना सुरक्षा उपकरणों के मौका स्थल पर पहुंच कर किए गए बचाव कार्य के लिए विप्र सेना जिला शाखा ब्यावर की ओर से अजमेर रोड स्थित विप्र सेना कार्यालय में सम्मान समारोह आयोजित किया गया। समारोह में जांबाज पुलिस अधिकारी राजेश कसाना, पूर्व पार्षद हंसराज शर्मा, दमकल अधिकारी ताराचंद भट्ट, विक्रम राठौड़ आदि के अदम्य साहस की प्रशंसा की एवं ब्यावर के लिए गर्व बताया। इस दुखांतिका में केमिकल फैक्टरी मालिक सहित दो व्यक्तियों की मौके पर ही मौत हो गई थी तथा 52 लोगों को चिकित्सालय में भर्ती करवाया गया था जहां से 12 लोगों को अजमेर व तीन को जयपुर रैफर किया गया। 15 लोगों का ब्यावर में ही उपचार शुरू किया और 21 को प्राथमिक उपचार के बाद छुट्टी दे दी गई थी। इस घटनाक्रम में जिला कलेक्टर महेंद्र सिंह खड़गावत सहित पूरा प्रशासन अलर्ट मोड पर रहा, जिससे इस घटना को महाविनाश बनने से रोका गया। इससे पूर्व डिप्टी कसाना, पूर्व पार्षद हंसराज शर्मा, दमकल अधिकारी ताराचंद भट्ट और विक्रम सिंह राठौड़ का विप्र सेना के राजेंद्र शर्मा रीको, मनोज व्यास, ज्वाला प्रसाद उपाध्याय, संजय पाराशर, अनिल भोजक, नरेंद्र पारीक, एडवोकेट विजय पारीक, चंद्रप्रकाश अग्निहोत्री ने वॉरियर्स का साफा बंधवाकर तथा दुपट्टे ओढ़ाकर स्वागत किया। कार्यक्रम में दिनेश शर्मा, अनिल पाराशर, शम्भू दयाल व्यास, उम्मीद शर्मा, राहुल शर्मा, हरि गोपाल शर्मा, कैलाश शर्मा, नरेंद्र शर्मा, वैभव शर्मा, गोपाल शर्मा, परमेश्वर पारीक, संदीप शर्मा, लता शर्मा भाजपा नेत्री, ममता शर्मा, लता शर्मा, विष्णु जोशी, निरंजन शर्मा, एडवोकेट सुनील दवे, मनीष व्यास, मोदी आदि उपस्थित थे।

जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

कोटा, (निसं)। डीआरएम कार्यालय के कर्मचारियों हेतु 07 अप्रैल को विश्व स्वास्थ्य दिवस के अन्तर्गत स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ.सुपूर्णा सेन रोय के निर्देशन में मंडल कार्यालय के बोर्ड रूम में किया गया। मुख्य वक्ता डॉ साकेत गोयल कार्डियोलाजिस्ट ने बताया की अगर आपको स्वस्थ रहना है तो आपको तीन मुख्य बातों खान-पान, दैनिक क्रियाकलाप एवं शरीर में परिवर्तन का ध्यान रखना होगा। डॉ.साकेत गोयल ने बताया आपको स्वस्थ डाईट चार्ट उसके अन्तर्गत गेहूं, तेल एवं शक्कर को अपने भोजन से हटकर सलाद, फल एव मोटा अनाज को अपनाना होगा। इसके साथ-साथ प्रतिदिन कसरत एव दस हजार कदम चलना होगा तथा समय-समय पर जाँच करवाकर अपने कोलेस्ट्रोल को नियन्त्रित करना होगा। इसी क्रम में अन्य वक्ता डॉ.राजेन्द्र शर्मा ने बताया कि डब्ल्यूएचओ ने विश्व स्वास्थ्य दिवस की इस वर्ष की थीम रखी है। "स्वस्थ शुरुआत, आशाजनक भविष्य" जो की मुख्य रूप से मां और नवजात बच्चों की सेहत और सुरक्षा पर ध्यान देती है।

लेनदेन के विवाद में व्यापारी को चाकू मारा, हिन्दूवादी संगठनों में आक्रोश

■ गुस्साए लोगों ने बाजार बंद करवाए, कस्बे में अतिरिक्त पुलिस बल तैनात किया

■ पुलिस ने एक आरोपी को डिटेन किया है, बाकी की तलाश की जा रही है

आसीन्द/भीलवाड़ा, (निसं)। भीलवाड़ा जिले के आसींद कस्बे में रविवार देर रात चाकूबाजी की घटना से माहौल गरमा गया। लेनदेन विवाद को लेकर एक व्यापारी को बुलाकर कुछ लोगों ने उसे पर चाकू से हमला कर दिया, जिससे वह घायल हो गया।। हमले में घायल युवक को महात्मा गांधी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। घटना से हिन्दूवादी संगठनों में आक्रोश व्याप्त हो गया। गुस्साए लोगों ने सोमवार सुबह बाजार बंद करवा दिए। वहीं कस्बे में अतिरिक्त पुलिस बल तैनात है। वहीं पुलिस ने एक आरोपी को डिटेन किया है बाकी की तलाश जारी है।

जानकारी के अनुसार आसींद में जूता-चप्पल दुकान संचालक राकेश डांगी का दानिश पठान के साथ लेनदेन का विवाद है। रात में राकेश घर पर खाना खा रहा था। इस दौरान दानिश ने फोन करके कहा कि पैसे लेने के लिए वह चौराहे पर आ। राकेश अपने भाई मनीष के साथ वहां पहुंचा। दानिश और उसके दो-तीन साथी ने राकेश पर चाकू से हमला कर दिया। बचाव में मनीष के साथ भी मारपीट की। सूचना पर आसींद थाना पुलिस मौके पर पहुंची। घायल राकेश को आसींद अस्पताल ले जाया गया। वहां से भीलवाड़ा रैफर कर दिया। सूचना पर बड़ी संख्या में लोग वहां जमा हो गए। घटना के बाद आरोपी मौके से भाग गए। सुबह पता चलने पर हिन्दूवादी संगठनों में आक्रोश व्याप्त हो गया। गुस्साए लोगों ने बाजार बंद करवा दिए और प्रदर्शन करने लगे। जिला मुख्यालय से पुलिस बल आसींद भेजा गया। आसींद में पुलिस बल तैनात हो गया। पुलिस व प्रशासनिक अधिकारियों ने समझाइश की। वहीं शांतिपूर्ण तरीके से आसींद कस्बे में व्यापारिक प्रतिष्ठान बंद रहे। प्रशासन ने आमजन से शांति व्यवस्था कायम रखने हेतु अपील की है। वही आसींद पुलिस उपाधीक्षक ओमप्रकाश सोलंकी ने बताया कि देर रात्रि 10 बजे के बाद आसींद क्षेत्र मैं संचालित होटल पर अनैतिक तरीके से किसी भी व्यक्ति के पाए जाने पर पुलिस के द्वारा कार्यवाही की जाएगी तथा पुलिस की ठास्त क्षेत्र में लगातार झाड़ी रहेगी। आमजन से पुलिस प्रशासन ने शांति व्यवस्था बनाए रखने की अपील की है।

आसींद पुलिस उपाधीक्षक ओमप्रकाश सोलंकी ने बताया कि सकल हिंदू समाज द्वारा बाजार बंद रख शांतिपूर्ण तरह से विरोध प्रदर्शन करते हुए रैली निकाली गई। वहीं चाकूबाजी के मामले में पुलिस ने मुस्लिम समाज के कुछ युवकों को डिटेन कर पूछताछ शुरू कर दी है। बताया जा रहा है कि मुख्य आरोपी को हिरासत में लेने के साथ ही बाकी आरोपियों की तलाश जारी है।

कांग्रेस जनों ने जिला कलेक्टर को ज्ञापन दिया

कोटा, (निसं)। कांग्रेसजनों ने जिला कलेक्ट्रेट पर अनिश्चितकालीन धरने पर बैठे जेके फैक्ट्री के मजदूरों को उनका हक दिलाने की मांग को लेकर जिला कलेक्टर को ज्ञापन दिया। शहर जिला कांग्रेस महामंत्री विपिन बरथुनिया, वरिष्ठ कांग्रेस नेता अजय भान सिंह शक्तावत, सचिव राजू पहाड़िया ने बताया कि शहर कांग्रेस अध्यक्ष रवींद्र त्यागी और देहात कांग्रेस अध्यक्ष भानु प्रताप सिंह की उपस्थिति में जेके फैक्ट्री के मजदूरों को उनका हक दिलाने और उनके 27 साल पुरानी मांग को जल्द ही पूरा करने की मांग रखी। शहर कांग्रेस अध्यक्ष रविंद्र त्यागी ने कहा कि जेके फैक्ट्री में 4200 मजदूरों का 27 साल का वेतन बकाया है जिसका अविलंब भुगतान करवाया जाए और 2023 में सुप्रीम कोर्ट के आदेश के अनुसार जेके फैक्ट्री और अराफात ग्रुप के बीच की लीज डीड को समाप्त कर फैक्ट्री की जमीन को तुरंत अपने अधीन लिया जाए और मजदूरों का हक जल्द ही उनको दिया जाए। देहात कांग्रेस अध्यक्ष भानु प्रताप सिंह ने कहा की सरकार द्वारा जेके फैक्ट्री को अपने अधीन लेकर और उसको पुनः चालू किया जाए।

काछोला पंचायत में नियम विरुद्ध जारी किए खाली भूखण्ड के पट्टों की जांच शुरू

मांडलगढ़, (निसं)। मांडलगढ़ की काछोला ग्राम पंचायत में कई लोगों के तथाकथित आवासीय भूखण्डों के 10 पट्टे और निकल कर सामने आए हैं, जिसमे मौक़े पर कब्जा और न ही 50 वर्ष पुराना मकान बना हुआ है, और न ही पट्टाधारी निवास कर रहे हैं। पंचायत प्रशासन ने नियम विरुद्ध बेशकीमती भूमि में पुश्तैनी पट्टे जारी कर दिए। दूसरी ओर मांडलगढ़ पंचायत समिति विकास अधिकारी ने तथाकथित पट्टों की जांच के लिए चार सदस्यीय कमेटी का गठन कर जांच शुरू की है। काछोला ग्राम पंचायत के उप सरपंच देवी लाल माली और आरटीआई कार्यकर्ता ओमनाथ योगी ने बताया कि पंचायत प्रशासन ने एक ही परिवार के 4 जनों को और बाहर से आकर रह रहे सरकारी कर्मचारियों को खाली भूखण्डों के दो-दो सौ रुपए में पुश्तैनी मकानों के पट्टे जारी कर दिए।

एक ही परिवार में काछोला निवासी भैरू लाल पिता रामप्रसाद मंत्री को दो भूखण्ड का पट्टा क्रमांक 34/ 40 गुणा 42 फीट, दूसरा पट्टा आराजी नम्बर 1421 में क्रमांक 18/34 गुणा 40 फीट, भैरू लाल मंत्री की पत्नी सिमा मंत्री को भूखण्ड पट्टा क्रमांक 36/ 40 गुणा 60 फीट, भैरू लाल मंत्री के पुत्र अक्षय कुमार मंत्री को पट्टा क्रमांक 35/40 गुणा 60 फीट, जारी किए हैं, इसमें एक पट्टे में आराजी संख्या दर्ज की गई हैं। अन्य पट्टों में आराजी नम्बर ही नहीं दर्शाए गए हैं। अन्य 7 लोगों के पट्टे भी बिना आराजी नम्बर दर्ज किए जारी किए, जिसमें महेंद्र सिंह पिता सांवत सिंह राजपूत भूखण्ड पट्टा क्रमांक 44/40 गुणा 60 फीट, गिरधर कंवर पत्नी महेंद्र सिंह राजपूत, पट्टा क्रमांक 43/40 गुणा 60 फ़ीट, अरुण कुमार सूरजभान शर्मा पट्टा क्रमांक 45/40 गुणा 60 फीट, सूरजभान की पत्नी नीलम शर्मा को पट्टा क्रमांक 46/40 गुणा 60 फीट, पंकज कुमार पिता सूर्यकान्त त्रिवेदी को पट्टा क्रमांक 02/40 गुणा 60 फीट, गोपाल धाकड़ पिता भैरू लाल धाकड़ को पट्टा क्रमांक 27/ 40 गुणा 60 फीट और विधायक प्रतिनिधि संदीप सोनी पिता भंवरलाल सोनी को गोशाला के पास पट्टा क्रमांक 41/ 20 गुणा 90 वर्ग फीट के खाली भूखंडों में पुश्तैनी मकान के दो -दो सौ रुपए में 30 दिसम्बर 2024 को पट्टे जारी किए गए हैं, जबकि संदीप सोनी के पूर्व में जारी किए गए अन्य पट्टों का मामला न्यायालय में विचाराधीन चल रहा हैं।

उक्त प्रकरण में ग्राम पंचायत द्वारा जारी किए गए 20 पट्टों के दस्तावेज आरटीआई कार्यकर्ता ओमनाथ योगी को तहसील कार्यालय में पंजीयन होने के बाद प्राप्त हुए हैं, जिसमें प्रारम्भिक तौर पर कई गड़बड़ियां पाई गई है। जिसकी शिकायत कलेक्टर, बीडीओ और एसीबी को भेजी गई है। मांडलगढ़ पंचायत समिति विकास अधिकारी संगीता व्यास ने बताया कि काछोला पंचायत में जारी किए गए तथाकथित पट्टों की शिकायत ग्रामीणों द्वारा मिलने के बाद जांच कमेटी गठित की गई है। जांच कमेटी में अतिरिक्त विकास अधिकारी प्रभुलाल धाकड़, सहायक विकास अधिकारी राजकुमार व्यास, सहायक विकास अधिकारी उदयलाल मीणा व सहायक लेखाधिकारी रामजस जाट को शामिल किया गया है।

डीआरएम अनुराग त्रिपाठी ने पाली-मारवाड़ स्टेशन का दौरा किया

■ डीआरएम ने स्टेशन को साफ-सुथरा और आदर्श स्टेशन बनाने के लिए आम यात्रियों से भी परिसर स्वच्छता की अपील की

पाली/जोधपुर, (नि.सं.)। डीआरएम अनुराग त्रिपाठी ने सोमवार को पाली-मारवाड़ रेलवे स्टेशन का निरीक्षण किया तथा अधिकारियों को यात्री सुविधाओं की दृष्टि से व्याप्त मूलभूत खामियां तत्काल दूर करने के निर्देश दिए। डीआरएम का पदभार ग्रहण करने के बाद पहली बार पाली-मारवाड़ रेलवे स्टेशन के निरीक्षण पर पहुंचे।

त्रिपाठी ने जोधपुर मंडल के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ स्टेशन के दोनों प्लेटफॉर्म पर मुख्यतः यात्री सुविधाओं पेयजल, शौचालय, पर्याप्त बिजली और स्वच्छता की दृष्टि से निरीक्षण और व्याप्त खामियों पर नाराजगी जाहिर कर उनमें तुरंत सुधार कर यात्रियों को राहत पहुंचाने के स्पष्ट निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान डीआरएम ने प्लेटफॉर्म, टिकट घर, पूछताछ खिड़की, वेटिंग रूम, विश्रामालय, खानपान स्टाल, आरपीएफ चौकी, सीसीटीवी कैमरा रूम तथा कर्मचारियों के आवासों का निरीक्षण किया तथा व्याप्त कमियां दूर कर निरंतर मोनिटरिंग करने की हिदायत दी। इस दौरान उन्होंने पाली-मारवाड़ स्टेशन को साफ-सुथरा और आदर्श स्टेशन बनाने के लिए आम यात्रियों से भी परिसर स्वच्छता की अपील की। डीआरएम अनुराग त्रिपाठी के साथ निरीक्षण दौरे में वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक विकास खेड़ा, वरिष्ठ मंडल परिचालन प्रबंधक लोकेश कुमार सिंह, वरिष्ठ मंडल इंजीनियर (समन्वय) मनोहर सिंह, वरिष्ठ मंडल बिजली इंजीनियर (सामान्य) नितेश कुमार मीणा, वरिष्ठ मंडल बिजली इंजीनियर (कर्षण) विपिन कुमार, वरिष्ठ मंडल संरक्षा अधिकारी मुकेश कुमार मीणा, वरिष्ठ मंडल यांत्रिक इंजीनियर (पॉवर) जोगेंद्र मीणा और वरिष्ठ मंडल इंजीनियर (संकेत व दूरसंचार) सहित बड़ी संख्या में आरपीएफ जवान, निरीक्षक व सुपरवाइजर मौजूद थे।

सुप्रीम कोर्ट का फैसला : सेवन वंडर पार्क को एक माह में हटाने के आदेश

सरकार और जिला प्रशासन को अनुपालना रिपोर्ट एक माह में पेश करने के आदेश दिये

अजमेर, (कासं)। अजमेर के आनासागर भराव क्षेत्र और ग्रीन बेल्ट क्षेत्र में हुए अवैध निर्माण को लेकर सोमवार को सुपीम कोर्ट में सुनवाई हुई। सुप्रीम कोर्ट ने अवैध निर्माणों पर सख्त रुख अपनाते हुए सरकार और जिला प्रशासन को एक माह में सेवन वंडर पार्क को हटाने और इसकी अनुपालन रिपोर्ट एक माह में पेश करने के आदेश दिए है। मामले में अब अगली सुनवाई 16 मई को होगी। कोर्ट ने जिला प्रशासन द्वारा तबीजी और फॉयसागर वेटलैंड्स को लेकर पेश किए गए हलफनामे पर भी विस्तृत रिपोर्ट पेश करने को कहा है। सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस अभय एस ओका और जस्टिस उज्ज्वल भुयान की बेंच ने इस मामले में सुनवाई की।

राज्य सरकार की ओर से सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने पैरवी की, जबकि याचिकाकर्ता अशोक मलिक ने खुद अपना पक्ष रखा। कोर्ट ने सरकार को स्पष्ट निर्देश दिए कि सेवन वंडर्स पार्क को हटाने का कार्य 30 दिनों में पूरा किया जाए। सुनवाई के दौरान सरकार ने बताया कि इस पार्क को हटाने की प्रक्रिया पहले ही शुरू कर दी गई है और 15 से 30 दिनों में यह कार्य पूरा कर लिया जाएगा। पिछली सुनवाई में सरकार ने ध्वस्तीकरण और स्थानांतरण के लिए 6 महीने का समय मांगा था, लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने अब इसे एक माह के भीतर पूरा करने का आदेश दिया है।

- **सुनवाई के दौरान सरकार ने बताया कि इस पार्क को हटाने की प्रक्रिया पहले ही शुरू कर दी गई है और 15 से 30 दिन में यह कार्य पूरा कर लिया**

विस्तृत रिपोर्ट पेश करने को कहा :- कोर्ट ने सरकार से तबीजी और फॉयसागर ग्रीन क्षेत्र को लेकर विस्तृत रिपोर्ट पेश करने को कहा है। सरकार को इन वेटलैंड्स पर समुचित योजना तैयार कर अदालत के समक्ष पेश करनी होगी। सुप्रीम कोर्ट ने यह भी निर्देश दिया कि रिपोर्ट में नेशनल एन्वायरमेंटल इंजीनियरिंग इंस्टीट्यूट और अन्य विशेषज्ञ संस्थाओं का विश्लेषण शामिल होना चाहिए। सुनवाई के दौरान सॉलिसिटर जनरल ने बताया कि नेशनल एन्वायरमेंटल इंजीनियरिंग इंस्टीट्यूट और अन्य विशेषज्ञ संस्थाओं की रिपोर्ट अगले 15 दिनों में तैयार की जाएगी। सरकार ने पहले ही तबीजी और फॉयसगर वेटलैंड्स विकसित करने का प्रस्ताव दिया था, लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने इस पर ठोस योजना और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से तैयार रिपोर्ट मांगी है।

झील परिधि में बने पाथवे पर भी उठे सवाल :- सुप्रीम कोर्ट ने आनासागर झील के किनारे बने पाथवे को लेकर भी सवाल उठाए। सॉलिसिटर जनरल ने कोर्ट में बताया कि यह पानी झील की परिधि पर बना हुआ है और यदि इसे हटा दिया गया तो झील की तलहटी और वैटलैंड क्षेत्र में अवैध अतिक्रमण की संभावना बढ़ सकती है। इस पर कोर्ट ने कहा कि जब तक वेटलैंड्स की स्थिति पर विस्तृत रिपोर्ट नहीं मिलती, तब तक इस मुद्दे पर कोई निर्णय नहीं लिया जाएगा।

जिला प्रशासन ने पेश किया हलफनामा :- गौरतलब है कि जिला प्रशासन ने इस मामले में 31 पेज का अतिरिक हलफनामा पेश किया था। इसके जवाब में याचिकाकर्ता अशोक मलिक ने 38 पेज का काउंटर हलफनामा सुप्रीम कोर्ट में दाखिल किया। 17 मार्च को हुई सुनवाई में सुप्रीम कोर्ट ने फूडकोर्ट को ध्वस्त करने और दुगने क्षेत्र में वेटलैंड विकसित करने की योजना पेश करने का निर्देश दिया था। अब सरकार को विस्तृत रिपोर्ट 16 मई को पेश करने हैं।

खान विभाग के विजिलेंस ऑफिसर की हार्ट अटैक से मौत

हनुमानगढ़, (निसं)। खान विभाग के विजिलेंस ऑफिसर की हार्ट अटैक से मौत होने का मामला सामने आया है। फील्ड जांच के लिए हनुमानगढ़ आए थे।

जानकारी के अनुसार विजिलेंस ऑफिसर मुकेश मंगल टीम के साथ धन्नासर के आसपास अवैध खनन की जानकारी जुटाने पहुंचे थे। विजिलेंस ऑफिसर की हार्ट अटैक से मौत हो गई। वे धन्नासर कस्बे के एक होटल में ठहरे हुए थे। सुबह सीने में तेज दर्द महसूस होने पर उन्होंने साथी स्टाफ को फोन कर सूचना दी। जब स्टाफ होटल पहुंचा तो वे बेड पर बेहोश पड़े थे। उन्हें रावतसर के सरकारी अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया।

रावतसर थाने के एएसआई शीशपाल ने बताया कि विभाग में विजिलेंस ऑफिसर के पद पर कार्यरत मृतक के भतीजे बाड़ी धौलपुर निवासी ललित मंगल ने मामला दर्ज कराया है। रिपोर्ट में बताया कि उसके चाचा मुकेश मंगल (59) बीकानेर खान विभाग में विजिलेंस ऑफिसर के पद पर कार्यरत थे। उनके पास हनुमानगढ़ और श्रीगंगानगर जिले की जांच का जिम्मा था। वे फील्ड जांच के लिए हनुमानगढ़ आए थे। वे धन्नासर कस्बे के एक होटल में ठहरे हुए थे। सोमवार सुबह करीब 7:10 बजे उन्हें सीने में तेज दर्द महसूस हुआ। उन्होंने तुरंत अपने साथी स्टाफ को फोन कर सूचना दी। जब स्टाफ होटल पहुंचा तो वे बेड पर बेहोश पड़े थे। उन्हें रावतसर के सरकारी अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने हार्ट अटैक से मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच एएसआई शीशपाल को सौंपी गई है। जानकारी के अनुसार मुकेश मंगल ने टीम के साथ पांच दिन से धन्नासर में कैंप किया हुआ था। वे आसपास के इलाके में अवैध खनन से संबंधित जानकारी जुटा रहे थे। इलाके में अवैध खनन की शिकायत के बाद टीम मौका निरीक्षण करने पहुंची थी। मुकेश मंगल धौलपुर के बाड़ी के रहने वाले थे और वर्तमान में खान विभाग बीकानेर में पोस्टेड थे। उनका इसी साल 30 नवंबर को रिटायरमेंट होने वाला था। ललित मंगल ने बताया कि मृतक दो बच्चे हैं। बड़ा बेटा तलब बेंगलुरु में सॉफ्टवेयर इंजीनियर है। वहीं, दूसरा बेटा रिशभ अक्षय पात्र जयपुर में कार्य करता है। पत्नी संगीता हाउस वाइफ है।

- **फील्ड जांच के लिए हनुमानगढ़ आए थे, रिटायरमेंट में सात महीने बचे थे**

जिम ट्रेनर ने युवती से दुष्कर्म किया

बीकानेर, (निसं)। एक फिटनेस जिम में युवती के अश्लील फोटो और वीडियो बनाकर उसके साथ बार-बार दुष्कर्म करने और उसे ब्लैकमेल कर 23.60 लाख रुपए हड़पने का मामला सामने आया है। पुलिस जिम ट्रेनर और उसके दोस्त के खिलाफ जांच कर रही है।

एक युवती जो कि फिटनेस सेंटर जाया करती करती थी। आरोप है कि जिम के ट्रेनर रणवीरसिंह और उसके दोस्त लक्की उर्फ लोकेश ने टॉयलेट में युवती की अश्लील फोटो और क्लिप बना ली। सोशल मीडिया पर वायरल करने की धमकी देकर ब्लेकमैल करने लगे और रणवीर ने युवती का बार-बार देह शोषण किया।

युवती को डरा-धमकाकर उसे 23.60 लाख रुपए भी हड़प लिए। लक्की के इस काम में रणवीर का सहयोग करता रहा। रणवीर ने युवती को ब्लेकमैल कर हड़पे रुपयों से कार भी खरीद ली। पुलिस ने मामला दर्ज किया है जिसकी जांच एसएचओ सुरेन्द्र पचार कर रहे हैं।

- **युवती को ब्लैकमेल कर 23.60 लाख हड़पे, मामला दर्ज**

पीड़िता की ओर से पुलिस को दी गई रिपोर्ट में बताया गया है कि साल भर पहले वह जिम जाती थी। जहां रणवीर और उसका दोस्त लक्की उस पर बुरी नजर रखते थे। रणवीर एक्ससाइज ट्रेनिंग के नाम पर उसके शरीर से छेड़छाड़ करता था। दोनों आरोपियों ने जिम के टॉयलेट में अपने मोबाइल सेट कर उसके अश्लील फोटो लिए और वीडियो बना लिया। उसके बाद वायरल करने की धमकी देकर ब्लेकमैल करने लगे। रणवीर उसे एरोबिक्स हॉल में ले जाकर दुष्कर्म करता और लक्की बाहर निगरानी करता।

अश्लील वीडियो बनाता था। दोनों धमकाकर रुपए मांगने लगे। डर के कारण वह घर में पिता और भाई के रुपए चोरी कर दोनों आरोपियों को देने लगी। उससे 23.60 लाख रुपए हड़प लिए। करीब 2.50 लाख रुपए ऑनलाइन दिए। रणवीर ने 26 नवंबर, 2024 को दो लाख रुपए लिए। आखिरकार परेशान होकर पीड़िता ने अपने परिजनों को बताया और पुलिस थाने में मुकदमा दर्ज करवाया।

डिग्गी में गिरने से दो महिलाओं की मौत

बीकानेर, (निसं)। खेतों में बनी डिग्गियां मौत का कारण बनती जा रही है। दो महिलाओं की मौत पिछले 24 घंटे में हो चुकी है। दोनों पैर फिसलने से डिग्गी में गिरी थी। पुलिस ने दोनों की मर्ग दर्ज कर पोस्टमॉर्टम के बाद शव परिजनों को सौंपा।

श्रीडूंगरगढ़ के रहने वाले राकेश कुमार मेघवाल ने पुलिस में रिपोर्ट दी है। रिपोर्ट में बताया कि श्रीडूगरगढ़ के लोडेरा गांव की रोही में उसकी पत्नी मनोज कुमारी (26) की डिग्गी में डूबने से मौत हो गई। राकेश का कहना है कि खेत में काश्त करते समय पत्नी डिग्गी का बूस्टर चालू करने गई थी। इस दौरान पैर फिसलने से उसकी मौत हो गई। एएसआई राजकुमार को जांच सौंपी गई है। उधर पूगल में भी एक महिला की डिग्गी में गिरने से मौत हो गई। चार केडब्लयूएम कुम्हारवाला निवासी जसवंत सिंह ने पुलिस को बताया कि उसकी बहन हउवा कुमारी डिग्गी के पास खड़ी थी। तभी अचानक उसका पैर फिसल गया और वो डिग्गी में गिर गई। इससे उसकी मौत हो गई। उसका शव पोस्टमॉर्टम के बाद परिजनों के सुपुर्द कर दिया गयौ। इस मामले में भी पुलिस ने मर्ग दर्ज की है। बज्जू थाना क्षेत्र में एक युवक की बाइक से गिरने से हो गई। जीतू सिंह पुत्र आशु सिंह पांच अप्रैल को रात एक बजे बाइक पर जा रहा था। रास्ते में बाइक से गिरने पर घायल हो गया। उसे तुरंत पीबीएम हॉस्पिटल लाया गया। इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई।

डोडा-चूरा तस्कर को तीन साल का कठोर कारावास

भीलवाड़ा, (निसं)। विशिष्ट न्यायाधीश (एनडीपीएस प्रकरण) जगदीशप्रसाद शर्मा ने अफीम डोडा-चूरा तस्करी के एक मामले में तस्कर को तीन साल के कठोर कारावास और 30 हजार रुपये के जुर्माने से दंडित किया गया।

- **30 हजार रुपये के जुर्माने से भी दंडित किया**

पुलिस ने डोडा-चूरा तस्करी के आरोपी को कोर्ट में पेश किया।

प्रकरण के अनुसार, बीगोद थाने के तत्कालीन प्रभारी महावीर प्रसाद मीणा को 28 सितंबर 2017 को मुखबिर से सूचना मिली थी कि अजमेर में पंजीकृत नंबर की एक पिकअप में अफीम डोडा-चूरा परिवहन कर लाया जा रहा है। सूचना पर थाना प्रभारी मीणा ने त्रिवेणी चौराहे पर नाकाबंदी की। सूचना के मुताबिक आई पिकअप को चालक भगा ले गया। पुलिस ने पीछा कर पिकअप को रुकवाया। चालक से पूछताछ की तो उसने खुद को अजमेर जिले के सावर थाने के गोपालपुरा का निवासी भैंरूलाल पुत्र सुवालाल मीणा होना बताया। तलाशी लेने पर पिकअप में 48 किलो डोडा-चूरा मिला, जिसे पिकअप सहित जब्त कर चालक को गिरफ्तार कर आरोपित के खिलाफ प्रकरण दर्ज किया। बाद में पुलिस ने चार्जशीट न्यायालय में पेश की। ट्रायल के दौरान अभियोजन पक्ष की ओर से पैरवी करते हुये रामस्वरुप गुर्जर ने न्यायालय में 7 गवाहों के बयान दर्ज करवाते हुये 69 दस्तावेज पेश कर दोष सिद्ध करवाया। न्यायालय ने फैसला सुनाते हुये आरोपित भैंरूलाल को तीन साल के कठोर कारावास और 30 हजार रुपये के जुर्माने से दंडित किया।

जालोर जिला कारागृह में दो बंदी भिड़े, एक घायल

जालोर, (कासं)। जालोर जिला कारागृह में गत रविवार को किसी बात को लेकर दो बंदी आपस में भिड गये। दोनों बंदियों के बीच मारपीट में एक बंदी घायल हो गया। मारपीट की घटना के बाद घायल बंदी के परिजनों ने जेल प्रशासन पर लापरवाही का आरोप लगाते हुए उसे जान का खतरा बताया।

जालोर जिला कारागृह में अव्यवस्थाओं के चलते कई शिकायत आती रहती है। जिला कारागृह में लापरवही के चलते दो बंदी जेल में ही आपस में मारपीट करने लगे। मारपीट के बाद जेल में अफरा तफरी का माहौल बन गया। हत्या के मामले में बंद जबरसिंह निवासी शंखवाली पिछले करीब एक साल से जिला कारागृह जालोर में बंद है। वहीं आलासन निवासी सुरेश मेघवाल पिछले करीब सात माह से बंद है।

- **घटना के बाद घायल बंदी के परिजनों ने जेल प्रशासन पर लापरवाही का आरोप लगाया**

रविवार सुबह करीब ग्यारह साढे ग्यारह बजे किसी बात को लेकर जबरसिंह व सुरेश के बीच बहसबाजी होने लगी तथा बहसबाजी हाथापाई तक पहुंच गई। सुरेश के जबरसिंह को धक्का देने से उसके दीवार के टकराने से उसके चोट लग गई। वहीं जिला कारागृह में मारपीट के घटना की सूचना पर जेल प्रशासन ने पहुंचकर मामले को शांत करवाया।

जबरसिंह के मारपीट में चोट आने पर जेल प्रशासन ने इलाज के लिए जेल में नियुक्त डॉक्टरों की टीम को बुलाया, लेकिन घायल बंदी ने जेल में इलाज करने से मना करते हुए बाहर इलाज करवाने की मांग की। मारपीट की सूचना पर जबरसिंह के परिजन भी जिला कारागृह पहुंच गये तथा उन्होंने मारपीट की घटना पर रोष प्रकट करते हुए जेल प्रशासन की लापरवाही बताया। उन्होंने जबरसिंह को जान का खतरा बताया। सोमवार को सुरेश द्वारा जबरसिंह के खिलाफ मारपीट कर अनुसूचित जाति अनुसचित जन जाति धारा में मामला दर्ज करवाने की सूचना मिल रही है। बंदियों की मारपीट के बाद जेल में बंद भी सहमे गये।

जिला कारागृह जालोर की जेल उपाधीक्षक सम्पति बामणिया ने बताया कि सुरेश व जबरसिंह दोनों को अलग-अलग बैरक में ही रखा गया था। कल पानी को लेकर दोनों के बीच बहसबाजी हुई थी। मामले को शांत करवा दिया गया है तथा जबरसिंह की मांग पर उसका इलाज राजकीय चिकित्सालय जालोर में करवाया गया है।

अज्ञात कारणों के चलते युवक ने आत्महत्या की

टोंक। पुरानी टोंक थाना क्षेत्र के माणक चोक पांच मन्दिर क्षेत्र में निवास कर रहे विकास जांगिड पुत्र प्रेमचन्द्र जांगिड उम्र 35 साल ने अज्ञात कारणो के चलते सोमवार सुबह अपने कमरे में लटक रहे पंखे से लटकर अपनी जीवनलीला समाप्त कर ली। मौके पर पहुंची पुलिस ने जांच शुरू की। थाना पुलिस ने सूचना मिलने पर मौके पर पंहुचकर शव को अपने कब्जे में लेकर जिला अस्पताल सआदत चिकित्सालय टोंक की मोर्चरी में रखवाया। जहां मामले में अनुसंधान जारी है।

कुठानियां के देई माई मंदिर ट्रस्ट की सम्पत्ति के गबन का आरोप

खेतड़ी, (निसं)। कुठानियां देई माई ट्रस्ट के सचिव ने ट्रस्ट अध्यक्ष व उसके बेटे के खिलाफ जान से मारने की धमकी, ट्रस्ट के रूपए व चांदी के छत्तर व अन्य चल सम्पतियों का गबन करने का मामला दर्ज करवाया है।

थानाधिकारी रामसिंह यादव ने बताया कि देई माई ट्रस्ट के सचिव मानोता जाटान निवासी लक्ष्मण सिंह राजपूत ने ट्रस्ट के अध्यक्ष सुमेरसिंह भाटी व उसके बेटे जिनेश कुमार के खिलाफ रिपोर्ट दी कि वह मंदिर श्री देई माई कुठानियां प्रन्यास का सचिव है। उक्त मंदिर का पूरा कार्य प्रन्यास द्वारा किया जा रहा है तथा मंदिर में भक्तगणों द्वारा नित्य प्रति चढ़ावा व अन्य चल सम्पतियां भेंट स्वरूप चढ़ाई जाती है। मंदिर में नित्य प्रति भक्तों की काफी भीड़ रहती है,जिससे अच्छा चढ़ावा आता है।

मंदिर में आने भक्तों की भीड़ व चढ़ावा को देखते हुए प्रन्यास के सदस्यों द्वारा मंदिर परिसर में बने भंडार गृह का निरीक्षण किया गया तो प्रन्यास सदस्यों को चढ़ावे व अन्य सामग्री में कमी पाई गई। जिसके प्रश्चात प्रन्यास के सदस्यों द्वारा मंदिर परिसर में लगे सीसीटीवी कैमरों को देखा गया तो प्रन्यास के सदस्यों की जानकारी में यह तथ्य आया कि मंदिर में आने वाले चढ़ावे जैसे नकद राशि,चांदी के छत्तर व अन्य चल सम्पतियों को प्रन्यास के पूर्व अध्यक्ष सुमेर सिंह भाटी व उनक पुत्र जिनेश कुमार द्वारा आपस में मिलीभगत करके गबन किया जा रहा है। 15 मार्च 2025 को ट्रस्ट के सभी प्रन्यासियों द्वारा उक्त सुमेर सिंह भाटी व उसके पुत्र जिनेश कुमार से इस बारे में बात की गई तो जिनेश ने पुलिसकर्मी बताते हुए प्रन्यासियों को धमकी दी कि प्रन्यासियों द्वारा सुमेर सिंह भाटी के कार्य में रूकावट की गई तो वह सभी के हाथ-पांव तोड़ देगा और उनको झूठे मुकदमें में फंसा देगा। 15 मार्च 2025 को जिनेश कुमार अपने साथ कुल्हाड़ी व फरसा लेकर आया और प्रन्यासियों को मारने का प्रयास किया, लेकिन पूर्व अध्यक्ष का बेटा होने के कारण प्रन्यासियों ने जिनेश के विरूद्ध कोई कार्यवाही नहीं की। प्रन्यास के सदस्यों की बैठक बुलाकर सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित करते हुए 20 मार्च 2025 को सुमेर सिंह भाटी को प्रन्यास के अध्यक्ष पद से हटा दिया गया।

- **कुठानियां देई माई ट्रस्ट के सचिव ने ट्रस्ट अध्यक्ष और उसके बेटे पर जान से मारने की धमकी देने का मामला दर्ज करवाया**
- **पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू की**

अध्यक्ष पद से हटाने के बाद भी सुमेर सिंह भाटी व उसका पुत्र जिनेश कुमार जबरन मंदिर परिसर में नित्य आते जाते है तथा मंदिर चढ़ावा व चल सम्मतियों को जबरन अपने साथ चोरी छिपे ले जाते है। विरोध करने पर उक्त लोग द्वारा उनको जान से मारने की धमकी दी जाती है।

25 मार्च को दोपहर करीब 1 बजे सभी प्रन्यासियों व कर्मचारियों की उपस्थिति व सीसीटीवी कैमरे की निगरानी में मंदिर परिसर में बने सुमेर सिंह भाटी के उक्त कमरे का निरीक्षण किया तो पाया गया कि सुमेर सिंह भाटी व उसके पुत्र जिनेश कुमार द्वारा मंदिर में आने वाले चढ़ावे, नकद धनराशि व चांदी के छत्तर व अन्य चल सम्पतियों को अपने साथ ले गए। उक्त लोगों ने षडयंत्र पूर्वक मंदिर में चढ़ावा के रूप में आने वाली नकद राशि, चांदी के छत्तर व अन्य चल सम्पतियों का गबन कर लिया। पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर जांच शुरू कर दी। इससे पूर्व सुमेर सिंह की ओर से भी कोषाध्यक्ष व अन्य के खिलाफ मारपीट करने व गबन करने का मामला दर्ज करवाया गया था। पुलिस दोनों पक्षों की रिपोर्ट पर मामला दर्ज मामले की गहनता से जांच कर रही है।

कोटा सुपर थर्मल पावर स्टेशन के खुले परिसर में आग लगी

कोटा, (निसं)। राजस्थान के कोटा सुपर थर्मल पॉवर स्टेशन के स्टोर में आग लगने का मामला सामने आया है। इसकी सूचना पर नहर निगम के अग्निशमन अनुभाग सहित अन्य 15 दमकल मौके पर पहुंची। यह आग खुले परिसर में बने हुए स्टोर में लगी है जहां पर केमिकल से लेकर कई मशीनरी के सामान भी पड़े हुए थे। आग ने इन सबको अपनी जद में ले लिया है। आग करीब डेढ़ घंटे से फैली हुई है और लगातार बढ़ रही है। आग के कारण थर्मल को बड़ा आर्थिक नुकसान हो चुका है।

नगर निगम के मुख्य अग्निशमन अधिकारी राकेश व्यास का कहना है कि आग करीब सवा दो बजे आग लगने की सूचना थर्मल से मिली थी। इसके बाद साथ दमकल गाड़ियां नगर निगम की रवाना की है। जबकि तीन दमकल की गाड़ियां थर्मल की भी मौके पर थीं और आग बुझाने में लगी हुई रही। आग स्टोर परिसर में लगी है। राकेश व्यास का कहना है कि हमारी टीम सोमवार को 2.30 बजे के आसपास पहुंच गई थी। आग बुझाने का प्रयास कर रहे। राकेश व्यास का कहना है कि मौके पर 15 दमकल और 10 टैंकर आग बुझाने में जुटे। फायर ब्रिगेड में 10 नगर निगम कोटा उत्तर व दक्षिण, डीसीएम व सिविल डिफेंस की एक-एक साथ ही तीन थर्मल की दमकल शामिल थीं। जहां आग लगी है, वहां थर्मल में काफी बड़ा स्टोर है। यह खुले परिसर के साथ-साथ कुछ बिल्डिंग में भी बना हुआ है। आग खुले परिसर में लगी थी। इसमें टायर, स्क्रेप, पुरानी गाड़ियां, लकड़ी, केमिकल, रबर व वायर से लेकर काफी सामान यहां पर पड़ा हुआ है। इसमें पुरानी मशीनरी भी है। हमने यहां पर मैकेनिक फोम भी करीब 200 से 300 किलो डाला। आग लगने की सूचना पर प्रशासन भी अलर्ट हो गया। मौके पर एडीएम कृष्णा शुक्ला पहुंची। इसके अलावा थर्मल के वरिष्ठ इंजीनियर भी मौके पर मौजूद रहे। थर्मल की सुरक्षा में तैनात सीआईएसफ भी मौके पर रही। आग काफी बड़े एरिया में फैली हुई थी।

जिसकी लपटें दूर तक देखने को मिल रही थीं। आग लगने के कारणों का फिलहाल खुलासा नहीं हो पाया है।

ठगों ने किसान के पैन कार्ड से फर्जी कंपनी बनाई, 143 करोड़ का लेन-देन किया

पीड़ित किसान को मामले की जानकारी आयकर विभाग से मिले नोटिस के बाद पता चली

अजमेर, (कासं)। अजमेर के सरवाड़ में किसान के साथ सायबर ठगी का हैरतअंगेज मामला सामने आया है। शातिर ठगों ने किसान के पैन कार्ड से फर्जीवाड़ा कर कंपनी बनाई और 143 करोड़ रुपए का लेनदेन किया। पीड़ित किसान को इसकी जानकारी आयकर विभाग से मिले नोटिस के बाद पता चली। पीड़ित किसान सोमवार को न्याय की गुहार लगाने एसपी ऑफिस पहुंचा, जहां उसने एसपी वंदिता राणा को ज्ञापन सौंप कर न्याय की गुहार लगाते हुए शातिर ठगों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है।

जानकारी के अनुसार अजमेर जिले के सरवाड़ निवासी रामराज चौधरी ने सोमवार को जिला पुलिस अधीक्षक कार्यालय पहुंचकर एसपी वंदिता राणा को ज्ञापन सौंपकर न्याय की गुहार लगाई।

- **पीड़ित किसान न्याय की गुहार लगाने एसपी ऑफिस पहुंचा, शातिर ठगों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की**
- **पैन कार्ड से नीतिया एक्जिम नाम से वित्तीय वर्ष 2020-21 में कंपनी खोली गई, जिसका कोटक महिंद्रा बैंक में खाता भी खोला गया था**

एसपी को सौंपे ज्ञापन में पीड़ित किसान रामराज ने बताया कि उसे 3 अप्रैल को आयकर विभाग की ओर से नोटिस मिला, जिसमें उसे जानकारी हुई कि उसके पैनकार्ड का दुरुपयोग कर धोखाधड़ी की गई है। पैनकार्ड से नीतिया एक्जिम नाम से वित्तीय वर्ष 2020-21 में कंपनी खोली गई, जिसमें कोटक महिंद्रा बैंक में खाता भी खोला गया जिसकी उसे जानकारी नहीं है और न ही उसने महिंद्रा बैंक में अपना अकाउंट खुलवाया है।

पीड़ित किसान रामराज ने बताया कि वह कभी मुंबई भी नहीं गया और उसके नाम से कोई फर्म नहीं बनवाई है। वह सिर्फ 12वीं पास किसान है। इस फर्जीवाड़े की जानकारी उसे नोटिस मिलने के बाद मिली थी। जब वह आयकर विभाग पहुंचा और आयकर विभाग को इसकी जानकारी दी कि उसका कोई लेनदेन नहीं है और न ही उसने कोई खाता और और न ही उसने कोई कंपनी खोली है।

पीड़ित किसान।

143 करोड़ रुपए क ट्रांसजेक्शन :-पीड़ित किसान रामराज ने बताया कि उसके पैनकार्ड से दुरुपयोग कर फर्जी कंपनी बनाकर 143 करोड रुपए का ट्रांजैक्शन किया गया। इतनी बड़ी राशि लेनदेन उसके लिए संभव है। इस फर्जीवाड़े के कारण परेशान है,जब वह इसकी शिकायत देने संबंधित थाने और सायबर थाने पहुंचा तो उसका कोई मुकदमा दर्ज नहीं किया गया। रामराज ने कहा कि सोमवार को अजमेर एसपी वंदिता राणा को शिकायत पत्र देकर शातिर लोगों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है।

हिस्ट्रीशीटर सहित दो गिरफ्तार

खेतड़ी, (निसं)। पचेरी कलां पुलिस ने शराब ठेका बंद करवाने के लिए आम रास्ता बंद करने के मामले में दो जनों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपियों में एक थाने का हिस्ट्रीशीटर है।

थानाधिकारी राजपाल सिंह यादव ने बताया कि पुलिस को सुचना मिली की ग्राम सोहली से दुलोठ की तरफ जाने वाले रास्ते पर कुछ लोग शराब के ठेके को लेकर प्रर्दशन कर रहे हैं। जब पुलिस टीम मौके पर पहुंची तो ग्राम सोहली से दुलोठ जाने वाले रास्ते पर 7-8 व्यक्ति बैठे थे जिनसे जानकारी की गयी तो बताया कि ग्राम सोहली में शराब ठेका बन्द होना चाहिए नहीं यह रास्ता बन्द कर दिया जाएगा।

इस दौरान पुलिस द्वारा समझाइश करने पर कुछ व्यक्ति तो मान गए, लेकिन हिस्ट्रीशीटर अनूज उर्फ पप्पू पुत्र रामप्रताप निवासी सोहली, महेन्द्र पुत्र भगवानसिंह नहीं माने। उन्हें समझाने का काफी प्रयास किया, लेकिन वह रास्ता खोलने की बजाय पुलिस से उलझने लगे। इस दौरान पुलिस ने शांति व्यवस्था कायम रखने लिए एचएस अनुज ऊर्फ पप्पु व महेन्द्र को गिरफ्तार कर लिया।

BIKANER TECHNICAL UNIVERSITY
Karni Industrial Area, Pugal Road, Bikaner-334004
Ref. No. : F34/BTU/Store/Vehicle_hire-00139 Date : 05/04/2025

Notice Inviting Bid

Bikaner Technical University invites following bids:

Sr. No.	Particulars	Estimated Cost	NIB No.	UBN No.	Last Date & Time
1.	Data Processing Work	110.00 Lacs	BTU2526 A0001	BTU2526 SLOB00001	25.04.2025 up to 5.00 pm.
2.	Hiring of Vehicles as and when Required	17.70 Lacs	BTU2526 A0002	BTU2526 SLOB00002	15.04.2025 up to 5.00 pm.

Others particulars of the bids can be find on the procurement portal https://eproc.rajasthan.gov.in, www.sppp.rajasthan.gov.in of the state and Bikaner Technical University website www.btu.ac.in.

Raj.Samwad/C/25/334 Registrar

कार्यालय नगर परिषद बारां
E-Mail : nagarpalikabaran@gmail.com स्टेशन रोड, बारां (राज0) Phone : 07453-230106
क्रमांक :- न.प.बा./स्टोर/2025/109 दिनांक :- 04.04.2025

निविदा सूचना संख्या : .01/2025-26

नगर परिषद बारां द्वारा वित्तीय वर्ष 2025-26 हेतु इस कार्यालय के टेन्ट व्यवस्था/अस्थायी लाईट डेकोरेशन/इमर्जेन्सी जनरेट लाईट सहित/15 अगस्त 26 जनवरी अल्पाहार व्यवस्था/कम्प्यूटर ऑपरेटर सप्लाई /लाईट के समान सप्लाई/ स्टेशनरी प्रिन्टिंग ओर फलेक्स प्रिन्टिंग/माईक साउण्ड व्यवस्था/LED WALL और माईक व्यवस्था/सम्बर्सिबल मोटर पेनल रिपेयर कार्य मोटर लोरिंग अनलोरिंग कार्य/साफाई के सामान कय/कायना हाउस भूसा कय/सभी रोड लाईट रिपेयर कार्य हेतु ऑनलाईन निविदायें आमंत्रित की जाती है। संवेदक निविदा से सम्बन्धित नियम/शर्तें वेब पार्टल www.sppp.rajasthan.gov.in पर भी देख सकते है। निविदायें hrrp://eproc.rajasthan.gov.in के माध्यम से प्राप्त की जावेगी। अनुमानित लागत 10 लाख से 30 लाख तक।

1. DLB2526SLOB00447
2. DLB2526SLOB00448
3. DLB2526WSOB00451
4. DLB2526SLOB00453
5. DLB2526SLOB00454
6. DLB2526GSLOB00455
7. DLB2526GLOB00456
8. DLB2526WSOB00459
9. DLB2526WSOB00460
10. DLB2526WSOB00462
11. DLB2526WSOB00463
12. DLB2526GSOB00465
13. DLB2526SLOB00467

आयुक्त
राज.संवाद/सी/25/357 नगर परिषद बारां

गेंदबाज मैच का रूख बदल देते हैं, विशेषकर इस प्रारूप में। काफी लोग टी20 में बल्लेबाजी और हिटिंग की बात करते हैं लेकिन हमें लगता है कि मैच गेंदबाजों द्वारा जीते जाते हैं।
- शुभमन गिल

गुजरात टाइटंस के कप्तान, अपने गेंदबाजों (गेम चेंजर्स) के बारे में बोलते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

हैरी ब्रूक

बल्लेबाज हैरी ब्रूक को सोमवार को इंग्लैंड की नए वनडे और टी-20 टीम का कप्तान घोषित किया गया है। 26 वर्षीय हैरी ब्रूक को सफेद गेंद प्रारूप में जोस बटलर के स्थान पर कप्तान नियुक्त किया गया है। बटलर ने चैंपियंस ट्रॉफी 2025 में जीत न मिलने के बाद अपनी भूमिका से इस्तीफा दे दिया था। 2022 से सफेद गेंद सेटअप का हिस्सा रहे ब्रूक सभी प्रारूपों में इंग्लैंड की बल्लेबाजी लाइनअप के लिए महत्वपूर्ण रहे हैं। वर्तमान में आईसीसी पुरुष टेस्ट बल्लेबाजी रैंकिंग में दूसरे स्थान पर काबिज ब्रूक ने पिछले एक साल में वनडे और टी-20 दोनों प्रारूपों में उप-कप्तान के रूप में काम किया है।

क्या आप जानते हैं ?... भारतीय फुटबॉल टीम के लिए सबसे लंबी जीत का सिलसिला :1962 से 1964 के बीच 7 मैचों की जीत है।

गर्मी से राहत के लिए खेल मंत्री ने उठाया कदम

टिकट काउंटरों पर छांव और पानी की व्यवस्था के निर्देश

जयपुर, 7 अप्रैल। राजस्थान में पड़ रही भीषण गर्मी को देखते हुए खेल मंत्री कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड़ ने बड़ा कदम उठाया है। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के पहले मुकाबले के लिए टिकट खरीदने आने वाले लोगों को गर्मी से राहत देने के लिए खेल मंत्री ने स्पोर्ट्स काउंसिल को आवश्यक निर्देश जारी किए हैं। उन्होंने कहा है कि टिकट काउंटरों पर आने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए छांव और पीने के ठंडे पानी की उचित व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। मौसम विभाग के अनुसार, इस वर्ष अप्रैल के पहले ही सप्ताह में पिछले कई वर्षों का तापमान रिकॉर्ड तोड़ चुका है। प्रदेश में गर्मी ने प्रचंड रूप धारण कर लिया है और हीटवेव जैसे हालात बन गए हैं। मौसम विभाग ने लोगों को सलाह दी है कि वे धूप से बचें, छांव में रहें और पर्याप्त मात्रा में पानी पीते रहें। इसके लिए टिकटों की बिक्री 7 अप्रैल से शुरू हो चुकी है। टिकट ऑनलाइन के साथ-साथ ऑफलाइन माध्यम से भी उपलब्ध हैं। ऑफलाइन टिकट बिक्री के लिए एसएमएस स्टेडियम के बाहर तीन काउंटर स्थापित किए गए हैं। खेल मंत्री कर्नल राठौड़ ने खेल सचिव को निर्देशित करते हुए कहा है कि टिकट खरीदने के लिए आने वाले दर्शकों को किसी भी प्रकार की परेशानी न हो, इसके लिए छांव की व्यवस्था के साथ-साथ शुद्ध और ठंडे पेयजल की उपलब्धता तत्काल प्रभाव से सुनिश्चित की जाए।

पारा गर्मी का ही नही क्रिकेट प्रेमियों के जुनून का भी बड़ा है। आज से एसएमएस स्टेडियम में होने वाले आईपीएल मैचों के टिकिट की बिक्री शुरू हुई। क्रिकेट प्रेमियों को किसी भी हाल में टिकिट चाहिए ही, इसके लिए देर रात से ही आकर बैठ गए।

आईपीएल के पहले मैच के टिकटों की कालाबाजारी का आरोप

जयपुर, 7 अप्रैल। तपती सूरज की रोशनी में गर्मी की गर्म हवा के बीच राजस्थान क्रिकेट हाय-हाय, स्टेडियम प्रशासन हाय हाय, के नारों से आज स्टेडियम का बाहरी हिस्सा गुंजायमान हो उठा। स्टूडेंट्स ने बुक माई शो के द्वारा कुछ टिकटों के वितरण करने के बाद विंडो को यह कहकर बंद कर दिया कि 13 अप्रैल के 500 वाले टिकट बिक चुकी है ओर अन्य की टिकट लेना चाहो तो ले सकते हो। जयपुर में आईपीएल मुकाबले के लिए ऑफलाइन टिकट आज से मिलने शुरू हुए। क्रिकेटपप्रेमी रात से ही टिकट विंडो पर पहुंचे ओर कतार लगाकर बैठ गए। 13 अप्रैल को राजस्थान रॉयल्स और आरसीबी

के बीच होने वाले आईपीएल मुकाबले के लिए वे टिकट खरीदने पहुंचे थे। उन्होंने बताया कि रात 8 बजे स्टेडियम के बाहर पहुंच गए थे। पूरी रात स्टेडियम के बाहर ही गुजरी, लेकिन सुबह जब टिकट विंडो खुली तो काफी निराशा हुई। न पानी की व्यवस्था थी और न ही कोई छाया की। एक प्रत्यक्षदर्शी ने आरोपी लगाते हुए कहा कि मेरी लाइन में छठे नंबर पर खड़ा था, मेरे आगे सभी 5 स्टूडेंट्स को टिकट मिल गयी मेरा नम्बर आते ही टिकट विंडो से जानकारी मिली कि 500 वाली टिकट खत्म हो गए है, ओर दूसरी चाहिए तो आप ले सकते है। गुस्साए स्टूडेंट्स ने टिकट नही मिलने के कारण नारेबाजी शुरू कर दी थी।

आईपीएल 2025 के लिए राजस्थान रॉयल्स के सभी घरेलू मैचों के लिए बॉक्स ऑफिस पर अधिक स्टूडेंट और बेस प्राइस टिकट उपलब्ध

जयपुर, 7 अप्रैल। आरसीबी, एलएसजी, जीटी, एमआई और पीबीकेएस के खिलाफ राजस्थान रॉयल्स के घरेलू मैचों के टिकट सभी श्रेणियों में उपलब्ध हैं, जिनकी कीमत बॉक्स ऑफिस पर 1600 रुपये से शुरू होते हैं, पहले आओ पहले पाओ के आधार पर-अधिकतम दो टिकट प्रति व्यक्ति।आरसीबी, एलएसजी, जीटी, एमआई और पीबीकेएस के खिलाफ मैचों के लिए पहले आओ पहले पाओ के आधार पर 500 रुपये की कीमत वाले स्टूडेंट टिकटों का एक अतिरिक्त बैच भी उपलब्ध होगा। स्टूडेंटों को इन टिकटों को खरीदने के लिए एक वैलिड स्टूडेंट आईडी प्रस्तुत करनी होगी-1 प्रति व्यक्ति। बॉक्स ऑफिस स्टेडियम के नॉर्थ गेट, ईस्ट गेट और वेस्ट गेट पर सुबह 10 बजे से शाम 6 बजे तक खुला रहता है, तथा प्रत्येक वेन्यू पर मुफ्त पानी उपलब्ध कराया जा रहा है। फैंस बॉक्स ऑफिस या बुक माई शो प्लेटफॉर्म के माध्यम से अपनी सीटें बुक कर सकते हैं।

दो दिवसीय ज्वैलर्स एसोएिशन प्रीमियर लीग की लेजेंड्स यूनाइटेड टीम बनी विजेता

जयपुर, 7 अप्रैल। ज्वैलरी एसोसिएशन जयपुर की ओर से आयोजित ज्वैलर्स एसोसिएशन प्रीमियर क्रिकेट लीग (जेएपीएल) का दो दिवसीय आयोजन का रविवार देर शाम समापन हुआ। 5 और 6 अप्रैल को जनता कॉलोनी स्थित एस.जे पब्लिक स्कूल में आयोजित इस कार्यक्रम में 12 टीमें और 120 से ज्यादा प्लेयर्स ने हिस्सा लिया। इस दौरान लगभग 1000 से अधिक सदस्यों, उनके परिवारों के सदस्यों और क्रिकेट प्रेमियों ने इस टूर्नामेंट का आनंद लिया। दूसरे दिन के मैचों के बारे में एसोसिएशन युथ कमेटी के संयोजक गोविन्द गुप्ता ने बताया कि टूर्नामेंट के दूसरे दिन टूर्नामेंट का फाइनल मैच लेजेंड्स यूनाइटेड (कृष्णा साबू) एवं टिस्टाबेने टीम (प्रमोद दरडा) के बीच खेला गया एवं इस लीग के विजेता लेजेंड्स यूनाइटेड टीम रही एवं उपविजेता टिस्टाबेने टीम रही। विजेता एवं उपविजेता टीम को ट्रॉफी एवं नगद पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। साथ ही प्लेटर ऑफ़ द टूर्नामेंट - वंसवर्धन सिंह, बेस्ट बैट्समैन - सुकून बोथरा, बेस्ट बॉलर - जय खटोरिया को भी ट्रॉफी एवं नगद पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। साथ ही एसोसिएशन कार्यकारिणी के बीच शो मैच खेला गया। इस मैच में विजेता अलोक सौंखिया टीम रही।

राज्य क्रिकेट में गठित की संचालन समिति

जयपुर, 7 अप्रैल। राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद ने सोमवार को खेल एवं खिलाड़ियों के हित को ध्यान में रखते हुये राज्य में क्रिकेट खेल गतिविधियों का प्रभावी पर्यवेक्षण, समुचित संचालन व संरक्षण एवं मार्गदर्शन / सुझाव प्रदान करने हेतु पूर्व क्रिकेटरों को शामिल करते हुए निम्नानुसार एक संचालन समिति का गठन किया गया है। जिसमें रोहित झालानी, विनोद माथुर, दीपक जैन, मेघा गौड़, कुलदीप माथुर, गगन खोड़ा, संजय व्यास को लिया गया है। उपरोक्त समिति नियमित रूप से अपनी रिपोर्ट समय समय पर अध्यक्ष, राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद को प्रस्तुत करेगी।

पांड्या के विस्फोट के बावजूद मुंबई को 12 रन से मिली हार

मुंबई, 7 अप्रैल। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के एक बेहद रोमांचक मुकाबले में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) ने सोमवार को मुंबई इंडियन (एमआई) को 12 रन से हरा दिया। बेंगुलुरु दस साल बाद वानखेड़े स्टेडियम में मुंबई को हराने में सफल रहा है।

हार्दिक पंड्या (42 रन 15 गेंद) और तिलक वर्मा (56) के क्रीज पर रहते मुकाबला मुंबई के पाले में जाता दिख रहा था मगर 18वें ओवर में भुवनेश्वर कुमार की ऑफ स्टंप के बाहर जाती धीमी गति की गेंद को कट करने के प्रयास में तिलक डीप कवर में कैच दे बैठे जबकि अगले ही ओवर में पंड्या को जोश हेजलवुड ने अपना शिकार बना लिया। दोनो के आउट होने के बाद मुकाबला एक बार फिर बेंगलुरु के पाले में चला गया।

आरसीबी के दिये गये 222 रन के जवाब में मुंबई इंडियंस निर्धारित 20 ओवर में नौ विकेट पर 209 रन ही बना सकी। लक्ष्य पीछा करने उतरी मुंबई की शुरुआत औसत रही। 12वें ओवर में सूर्य कुमार यादव (28) के आउट होने के बाद पंड्या ने क्रीज पर आते ही चौके छक्कों की बरसात कर दी। उन्होने हेजलवुड के ओवर में दो चौके और दो छक्के जड़ कर मैच को रोमांच से भर दिया जबकि अगले ओवर में उन्होने अपने भाई कृणाल पंड्या पर भी रहम नहीं किया और उनकी भी जमकर धुनायी की। दूसरे छोर पर तिलक वर्मा भी बेंगलुरु के गेंदबाजो पर कहर बरपाते रहे और दोनो ने 89

रन की पार्टनरशिप कर डाली। इससे पहले विराट कोहली (67)-देवदत्त पड्डिक्कल (37) के बीच 91 रन और कप्तान रजत पाटीदार (62) -जितेश शर्मा (40 नाबाद) के बीच 69 रन की विस्फोटक साझीदारियों की बदौलत आरसीबी ने मुंबई इंडियंस (एमआई) के खिलाफ पांच विकेट पर 221 रन का स्कोर खड़ा कर लिया।

कोहली आज मैच के शुरु से ही आक्रामक अंदाज में थे। फिल साल्ट (4) का विकेट पहले ही ओवर में गिरने के बावजूद उन्होने पॉवर प्ले का भरपूर फायदा उठाते हुये मैदान के चारों ओर रनों की बौछार कर दी। कोहली के रुख को भांपते हुये कप्तान हार्दिक पंड्या ने ट्रेंट बोल्ट को हटा कर स्पिनर विल जैक्स को गेंद थमायी मगर कोहली पर उसका कोई असर नहीं हुआ। दोनो बल्लेबाजों ने नौवें ओवर तक स्कोर को 95 रन पर पहुंचा दिया। इस बीच पड्डिक्कल विग्नेश पुथुर की गेंद पर अपना विकेट गंवा बैठे।

पंजाब किंग्स के खिलाफ मैच में जीत की पटरी पर वापस आना चाहेगी सीएसके

चंडीगढ़, 7 अप्रैल। लगातार मिली तीन हार से तिलमिलायी चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) मंगलवार को यहां पंजाब किंग्स (पीबीकेएस) के खिलाफ अहम आईपीएल मुकाबले में जीत की राह पर लौटने की हर मुमकिन कोशिश करेगी। मुंबई इंडियंस पर शानदार जीत के साथ आईपीएल 2025 अभियान की शुरुआत करने वाली सीएसके को लगातार तीन हार का सामना करना पड़ा है। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु, राजस्थान रॉयल्स और दिल्ली कैपिटल्स से उसने मुंह की खाई है।

कोहली 13 हजार टी-20 रन बनाने वाले क्लब में शामिल

मुंबई, 7 अप्रैल। भारतीय स्टार बल्लेबाज विराट कोहली सोमवार को पुरुष टी20 क्रिकेट में 13 हजार रन बनाने वाले पहले भारतीय और दुनिया के पांचवें क्रिकेटर बन गए हैं। उन्होंने अपनी 386वीं पारी के दौरान यह उपलब्धि हासिल की। 36 वर्षीय कोहली ने मुंबई इंडियंस के खिलाफ मैच में अपना 17वां रन बनाते ही यह उपलब्धि हासिल की। इसके साथ ही वह टी20 रन बनाने वाले शीर्ष खिलाड़ियों के क्लब में शामिल हो गए, जिसमें वेस्टइंडीज के महान खिलाड़ी क्रिस गेल सबसे आगे हैं, जो 381 पारियों में 14 हजार 562 रन बनाकर इस सूची में शीर्ष पर हैं। टी20 में सर्वकालिक रन बनाने वालों की सूची में कोहली से आगे इंग्लैंड के एलेक्स हेल्स (474 पारियों में 13,610), पाकिस्तान के शोएब मलिक (487 पारियों में 13,557) और वेस्टइंडीज के ऑलराउंडर कीरोन पोलार्ड (594 पारियों में 13,537) हैं।

सब जूनियर व जूनियर खेलो इंडिया राष्ट्रीय विमेन वुशू लीग में राजस्थान वुशू टीम ने जीते 9 पदक

जयपुर, 7 अप्रैल। भारतीय वुशू संघ व भारतीय खेल प्राधिकरण के संयुक्त तत्वावधान में 2 से 7 अप्रेल 2025 तक गांधीनगर, गुजरात में आयोजित हुई सबजूनियर व जूनियर खेलो इंडिया राष्ट्रीय विमेन वुशू लीग में राजस्थान वुशू टीम ने 1 स्वर्ण, 03 रजत व 5 कांस्य मिलाकर कुल 9 पदक जीत प्रदेश का मान बढाया। हीरानन्द कटारिया अध्यक्ष, राजस्थान वुशू संघ के अनुसार पदक विजेता खिलाडियों के नाम इस प्रकार है - **स्वर्ण पदक -** अलमास अली, **रजत पदक -** प्रियांशा चौधरी, ख़ुशी शर्मा, सुनीता, **कांस्य पदक -** मित्तल, पायल भाटी, चित्राक्षी चौहान, आराध्या, हिमांगी नेगी,

प्रतियोगिता के सभी पदक खिलाडियों को विनोद सिंह शेखावत, मुख्य संरक्षक, राजस्थान वुशू संघ, गोपाल सैनी, संरक्षक, राजस्थान वुशू संघ, राजकुमार शर्मा संरक्षक, राजस्थान वुशू संघ, भगवान सहाय जाटवा संरक्षक, राजस्थान वुशू संघ, के. सी. घुमरिया, चेयरमैन, राजस्थान वुशू संघ, ममता वर्मा, महासचिव, राजस्थान वुशू संघ व सभी पदाधिकारियों ने बधाई प्रदान की।

राजस्थान अंडर-17 महिला फुटबाल टीम गोवा राष्ट्रीय प्रतियोगिता के लिए रवाना

जयपुर, 7 अप्रैल। रविवार को यहां एक कार्यक्रम में राजस्थान टीम की नई जर्सी जारी की गई। कार्यक्रम में डॉ संजय पराशर, चेयरमैन महर्षि अरविन्द यूनिवर्सिटी के, भवानी सिंह भाटी , श्याम सिंह, जसवंत सिंहा व नसरुद्दीन जी,अंतर्राष्ट्रीय फुटबाल खिलाड़ी और राजस्थान फुटबाल एसोसिएशन के सचिव दिलीप सिंह शेखावत मौजूद थे।

महर्षि अरविन्द यूनिवर्सिटी ने राजस्थान में फुटबाल के विकास में अपनी प्रतिबद्धता दर्शाते हुए अंतरराष्ट्रीय स्तर के खेल उपकरण उपलब्ध कराने का आश्वासन दिया। टीम आज सुबह हवाई जहाज से जयपुर से गोवा के लिए प्रस्थान किया।

ड्रीम राष्ट्रीय महिला फुटबाल प्रतियोगिता का आयोजन इस बार गोवा में 9 से 15 अप्रैल तक किया जाएगा। प्रतियोगिता में हिस्सा लेने के लिए राजस्थान की 18 सदस्यीय टीम भी सोमवार को गोवा के लिए रवाना हो गई। राजस्थान फुटबाल एसोसिएशन के सचिव दिलीप

सिंह शेखावत ने बताया कि गोवा में हो रही राष्ट्रीय प्रतियोगिता में राजस्थान टीम का नेतृत्व संजू करेगी। टूर्नामेंट में राजस्थान टीम ग्रुप बी में है। राजस्थान का पहला मुकाबला 9 अप्रैल को उड़ीसा से होगा। राजस्थान टीम 11 अप्रैल को दिल्ली से और 13 अप्रैल को केरल के खिलाफ मैच खेलेगी।

राजस्थान टीम : मुन्नी, संजू , गुड्डु, निशा, किरण, हंसा, लक्ष्मी, मंजू, संतोष, सुमन प्रियंका, रितिका, कुमकुम, भावना, दृष्टी, सिमरन, दुर्गा, विक्रम सिंह राजवी टीम के हैड कोच, सुमन मैनेजर और लवणीना फिजियो किरण सहायक।

अनुराग मिश्रा स्मृति बी डिवीजन लीग

डायमंड क्रिकेट क्लब ने एसजे पब्लिक स्कूल को 4 विकेट और अरावली क्लब ने स्टार क्रिकेट एकेडमी को 2 विकेट से हराया

जयपुर, 7 अप्रैल। जयपुर जिला क्रिकेट संघ द्वारा आयोजित अनुराग मिश्रा स्मृति बी डिवीजन लीग क्रिकेट प्रतियोगिता में खेले गए पूल ए के मैच में डायमंड क्लब ने एस जे पब्लिक स्कूल को 4 विकेट हराया तथा पूल बी के मैच में अरावली क्लब ने स्टार क्रिकेट एकेडमी को रोमांचक मैच में 2 विकेट से हराया।

जी आर ग्राउंड पर एस जे पब्लिक स्कूल ने टॉस जीत कर पहले बल्लेबाजी करते हुए आशीष शर्मा के 26 रन, उमेश मीणा के 17 रन, साहिल लोढ़िया के 30 रन व शुभम खंडेलवाल के 52 रनों से 44.1 ओवर में 180 रन बनाए। डायमंड क्रिकेट क्लब के लिए अनस मंसूरी ने 43 पर 2, वेदांग शर्मा ने 23 पर 2, देव नारायण ने 20 पर 2, मोहम्मद कैफ ने 9 पर 2, देवांश जसवाल व रुद्र सोनी ने एक - एक विकेट लिया।

जवाबी पारी में डायमंड क्रिकेट क्लब ने दिलकुश महावर के 28 रन, देवांश जसवाल के 22 रन, कुमार वासु के नाबाद 66 रन, हितार्थ डेंगरा के 29 रन व रुद्र सोनी के 20 रनों से 32.1 ओवर में 6 विकेट पर 181रन बनाकर मैच जीत लिया। एस जे पब्लिक स्कूल के लिए उमेश मीणा ने 44 पर 2, व शुभम खंडेलवाल ने 29 पर 2 विकेट लिए। अरावली ग्राउंड पर खेले गए पूल बी के मैच में स्टार क्रिकेट एकेडमी ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए वरुण गुप्ता के शतक ऋतिक चावला के 33 रन, वरुण गुप्ता के 121 रन (158 गेंद, 12 चौके व 2 छक्के), प्रणव चौधरी के 34 व हर्ष शर्मा के 16 रनों से 50 ओवर में 7 विकेट पर 249 रन बनाए। अरावली क्लब के लिए ओमांश शर्मा ने 36 पर 2, शोभित, हंसराज व जुनेद अगवान ने एक - एक विकेट लिया।

जवाबी पारी में अरावली क्लब ने शोभित मिश्रा के 64 रन, तनय थावानी के 20 रन, ओमांश शर्मा के 20 रन, देवेंद्र शर्मा के 20 रन व आर्यन भारद्वाज के 34 रनों से 43.2 ओवर में 8 विकेट पर 252 रन बनाकर मैच जीत लिया। स्टार क्रिकेट एकेडमी के लिए आदित्य सराफ ने 59 पर 2, अथर्व सिंह ने 27 पर 2, हर्ष शर्मा ने 44 पर 2, सचिन व अनिकेत ने एक - एक विकेट लिया।

राज्य स्तरीय सीनियर कॉल्विन शील्ड प्रतियोगिता व जिलों में ग्रीष्मकालीन कोचिंग कैम्प मई माह में आयोजित होंगे

जयपुर 7 अप्रैल। आरसीए एडहॉक कमेटी संयोजक व विधायक जयदीपबिहाणीके अनुसार राज्य स्तरीय सीनियर कॉल्विन शील्ड प्रतियोगिता व जिलों में ग्रीष्मकालीन कोचिंग कैम्प मई माह में आयोजित होंगे। सीनियर प्रतियोगिताओं की पूर्व तैयारियों के लिए राजस्थान क्रिकेट संघ आगामी मई माह में आरसीए घरेलू क्रिकेट सत्र 2025 - 26 की राज्य स्तरीय सीनियर कॉल्विन शील्ड क्रिकेट प्रतियोगिता का आयोजन करेगा जिसके लिए आरसीए ने अपने सभी सम्बंधित जिला क्रिकेट संघको राज्य स्तरीय सीनियर कॉल्विन शील्ड प्रतियोगिता में भाग लेने वाली जिला टीमों के चयन प्रक्रिया को शुरू करने हेतु सूचित किया है।

जिलों में ग्रीष्मकालीन कोचिंग कैम्प मई माह में आयोजित होंगे बिहाणी के अनुसार राजस्थान क्रिकेट संघ ने सभी जिला क्रिकेट संघोकोआरसीए घरेलू क्रिकेट सत्र 2025-26 की युवा अंडर 14, अंडर 16, अंडर 19 पुरुष व युवा अंडर 15 व अंडर 19 महिला खिलाडियों को उच्च स्तरीयप्रशिक्षण उपलब्ध कराने हेतु अपने सही जिला क्रिकेट संघोको आगामी 15 अप्रैल से 30 अप्रैल 2025 के दौरानग्रीष्मकालीन कोचिंग कैम्प आयोजित करने के निर्देश दिए है। जिलों के ग्रीष्मकालीन कोचिंग कैम्प के आयोजन हेतु राजस्थान क्रिकेट संघ अपने सभी जिला क्रिकेट केंद्रों को क्रिकेट कोच, योगा टीचर, खिलाडियों के अल्पाहार हेतु निर्धारित अनुदान राशि जारी करेगा।

पीसी माहेश्वरी मेमोरियल गोल्फ टूर्नामेंट के प्रो-ग्रॉस विनर रहे ऋषिराज सिंह

जयपुर, 7 अप्रैल। रामबाग गोल्फ क्लब में दो दिवसीय पीसी माहेश्वरी मेमोरियल गोल्फ टूर्नामेंट (मंथली मेडल - द्वितीय) का आयोजन हुआ। टूर्नामेंट का समापन पुरस्कार वितरण समारोह के साथ हुआ। टूर्नामेंट में ऋषिराज सिंह प्रो-ग्रॉस विनर और गिर्राज सिंह खड़का प्रो-ग्रॉस रनर-अप रहे। वहीं, अमैच्योर ग्रॉस विनर का खिताब संयुक्त रूप से दीपकरण एस ठक्कर और नितेश बंदावाला ने जीता। पुरस्कार समारोह में अलग-अलग श्रेणियों और हैंडीकेप्स में विजेता व उप विजेता दोनों को पुरस्कृत किया गया।

इस अवसर पर स्वर्गीय, पीसी माहेश्वरी के परिवार से उनकी पत्नी प्रतिभा माहेश्वरी, बेटे राजीव माहेश्वरी और बेटी आशु माहेश्वरी; रामबाग गोल्फ क्लब के मानद सचिव, समृद्ध शर्मा और

टूर्नामेंट संयोजक, डॉ. हिमांशु शर्मा सहित क्लब के अन्य सदस्य उपस्थित रहे। हैंडीकेप्स श्रेणियों में विजेता और उपविजेता इस प्रकार रहे- हैंडीकैप कैटेगरी (00-09) में हरीश जोशी विजेता और आरव सचेती उपविजेता रहे; हैंडीकैप कैटेगरी (10-16) के विजेता धृषवराज और उपविजेता समरंजय सिंह थे और हैंडीकैप कैटेगरी (17-24) के विजेता राजवीर माहेश्वरी और अरिहंत पलावत उपविजेता रहे। टूर्नामेंट में बेस्ट सीनियर गोल्फर श्रेणी में विजेता प्रताप सिंह और बेस्ट सूपर सीनियर गोल्फर श्रेणी में निरंकार सिंह विजेता रहे। वहीं बेस्ट लेडी गोल्फर के विजेता का पुरस्कार वृंदा सैनी ने हासिल किया और उपविजेता नितिका जडेजा रहीं। इसी प्रकार अन्य श्रेणी- नियरेस्ट टू पिन के विजेता अहान शाह; लॉन्गेस्ट ड्राइव के विजेता अभ्यूदय रावत और स्ट्रेटेस्ट ड्राइव के लिए पुरस्कार अभिषेक रानीवाला ने जीता।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने विश्व स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर 'निरामय राजस्थान' अभियान एवं स्वास्थ्य से जुड़ी विभिन्न योजनाओं का शुभारम्भ किया। उन्होंने प्रदेशवासियों से अपील की कि वे निरामय राजस्थान अभियान का हिस्सा बनकर इसको जन अभियान बनाएं।

प्रदेशवासी निरामय राजस्थान को जन अभियान बनायें- मुख्यमंत्री भजनलाल

राजस्थान में डायबिटीज़ तथा लीवर के लिये विशेष कार्यक्रम शुरु किये गये

- **मुख्यमंत्री ने कहा कि 2024-25 के बजट में स्वास्थ्य के लिये किया गया प्रावधान अब तक का सर्वाधिक बड़ा प्रावधान था। वर्ष 25-26 में इसमें और बढ़ोतरी की गई है।**
- **मुख्यमंत्री ने जिलों व चिकित्सा विभाग में उत्कृष्ट कार्य करने वाले कार्मिकों का सम्मान भी किया।**

जयपुर, 7 अप्रेल। सोमवार को राजस्थान इंटरनेशनल सेंटर में "निरामय राजस्थान" अभियान एवं स्वास्थ्य से जुड़ी विभिन्न योजनाओं के शुभारम्भ कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि हम 'विकसित भारत और विकसित राजस्थान' के विजन के साथ 'आपणो अग्रणी राजस्थान-आपणो स्वस्थ राजस्थान' के संकल्प को साकार करने की दिशा में प्रतिबद्धता से आगे बढ़ रहे हैं।

उन्होंने सभी को विश्व स्वास्थ्य दिवस की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि मरीज चिकित्सकों को भगवान के रूप में देखते हैं तथा चिकित्सक भी स्वस्थ समाज के निर्माण में महती भूमिका निभा रहे हैं। शर्मा ने समस्त प्रदेशवासियों से अपील की कि वे निरामय राजस्थान अभियान का हिस्सा बनकर इसको जन अभियान बनाएं और आयुष्मान राजस्थान के संकल्प को साकार करें।

उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य को केन्द्र में रखते हुए विश्व स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर आज निरामय राजस्थान जैसे व्यापक जन अभियान और विभिन्न स्वास्थ्य योजनाओं का शुभारम्भ किया गया है। इनमें टाइप-1 डायबिटीज देखभाल के लिए राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के अंतर्गत, भारत के पहले समर्पित कार्यक्रम मिशन मधुहारी की शुरूआत, मुख्यमंत्री आयुष्मान आदर्श ग्राम पंचायत योजना की शुरूआत, 24 मोबाइल मेडिकल यूनिट 'राम रथ' तथा 10 एडवांस लाइफ सपोर्ट एंबुलेंस को हरी झण्डी, 29 यूनिट में स्तनपान प्रबन्धन इकाइयों का शुभारम्भ, ईट राइट राजस्थान अभियान तथा मिशन लीवर स्माइल का शुभारम्भ शामिल हैं।

इसके अलावा, मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य योजना का मोबाइल एप्लीकेशन लॉन्च, आयुष पद्धति से उपचार के लिए पैकेज का शुभारम्भ, एआई आधारित एकीकृत मॉनिटरिंग सिस्टम, 50 चिकित्सा संस्थानों में हीमो डायलिसिस वार्ड का शुभारंभ भी आज किया गया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि वित्तीय वर्ष 2024-25 में 27 हजार 660 करोड़ का बजट प्रावधान स्वास्थ्य के लिए किया गया, जो स्वास्थ्य के लिए अब तक का सर्वाधिक बजट प्रावधान था। साथ ही, वित्तीय वर्ष 2025-26 के बजट में भी स्वास्थ्य क्षेत्र के लिए इसे बढ़ाकर लगभग 28 हजार 865 करोड़ का बजट प्रावधान किया गया है।

इस दौरान, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवसर ने कहा कि भारत विश्व का सबसे युवा देश है तथा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के फिट इंडिया मूवमेंट की तर्ज पर आज राज्य में निरामय राजस्थान अभियान की शुरूआत की गई है।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने डिजिटल कॉफी टेबल बुक का विमोचन, टीबी मुक्त ग्राम पंचायत अभियान में उत्कृष्ट कार्य के लिए राज्य क्षय यूनिट का सम्मान, अधिकतम टीबी मुक्त ग्राम पंचायत वाले उत्कृष्ट जिलों तथा चिकित्सा विभाग में उत्कृष्ट कार्य करने वाले कार्मिकों का सम्मान किया।

कार्यक्रम में प्रमुख शासन सचिव चिकित्सा एवं स्वास्थ्य गायत्री राठौड़, शासन सचिव चिकित्सा शिक्षा अम्बरीश कुमार, चीफ ऑफ फील्ड सर्विसेज यूनिसेफ सोलेडाड हैरेरो सहित, बड़ी संख्या में चिकित्सक, स्वास्थ्यकर्मी, नर्सिंगकर्मी एवं आमजन उपस्थित थे।

जोधपुर में गैस सिलैंडर फटा: 14 माह के बच्चे सहित 2 की मौत

उमरा करने जा रहे लोगों के लिये खाना तैयार हो रहा था, जब सिलैंडर लीक होने से आग लगी

- **आग से 14 झुलस गये, जो महात्मा गांधी अस्पताल के बर्न यूनिट में भर्ती हैं। दो बच्चों की हालत गंभीर बताई जा रही है।**

जालोर, 7 अप्रैल (का.सं.)। जोधपुर में गैस सिलेंडर में ब्लास्ट होने से 14 महीने के बच्चे सहित दो लोगों की मौत हो गई और 14 लोग झुलस गए। दो बच्चों की हालत गंभीर बनी हुई है। हादसा भीतरी शहर के गुलाब सागर क्षेत्र के पास मियां की मस्जिद इलाके में एक घर-दुकान में सोमवार शाम हुआ। आग में झुलसे लोगों को एमजीएच (महात्मा गांधी हॉस्पीटल) की बर्न यूनिट में भर्ती कराया गया है। सूचना पर पहुंची दमकल गाड़ियों ने आग पर काबू पाया। परिजनों का कहना है कि घर में एक व्यक्ति के फंसे होने की आशंका है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार, झुलसे हुए लोगों में सलीखा (13), सोहेल (26), सलमा (22), साइका (20), शाहिदा (38), सुहाना (19), मीनाज (37), फरीदा (48), साहिन (17), सुमाया (25), मेलिसा (डेढ साल) और साहिन शामिल है। सादिया (19) और हासिम (14 महीने) की मौत हो गई है। अस्पताल से 2 गंभीर रुप से झुलसे बच्चों को उम्मेद अस्पताल रेफर कर दिया गया है। जानकारी के अनुसार, मकान में 3 से 4 बच्चे भी थे। नागौरी गेट के रहने वाले मोहम्मद इमरान ने बताया कि सोमवार शाम 4:30 बजे सूचना मिली थी कि हमारे मोहल्ले में आग लग गई है। उमरा (परिवार के साथ मक्का-मदीना की यात्रा) करने जा रहे लोगों के लिए यहां 20-25 लोगों का खाना था। इसी दौरान गैस सिलेंडर लीक हो गया और आग भड़क गई। वहीं, मकान में रहने वाले लोग फर्नीचर का काम करते हैं, ऐसे में आग ज्यादा भड़क गई और सिलेंडर में ब्लास्ट हो गया। हादसे की सूचना मिलते ही स्थानीय जनप्रतिनिधि और पुलिस प्रशासन के अधिकारी अस्पताल पहुंचे। कलेक्टर गौरव अग्रवाल ने बताया कि 12 लोगों को धुएं के साथ सांस लेने में तकलीफ हुई है। 2 बच्चे उम्मेद हॉस्पिटल में है। आग पर काबू पाया जा चुका है। सरकार की तरफ से जो भी सहायता राशि होगी, वह दी जाएगी। जोधपुर शहर विधायक अतुल भंसाली ने बताया कि मकान में आग लगने की घटना दुखद है। फायर ब्रिगेड के लोगों ने 3 जलते हुए सिलेंडर बाहर निकाले हैं। पुलिस ने रेस्क्यू ऑपरेशन चलाया है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सोमवार को जोधपुर शहर में गैस सिलेण्डर में रिसाव से लगी आग के कारण हुई जनहानि पर शोक व्यक्त किया है। शर्मा ने इस हृदय विदारक दुर्घटना पर गहरा दु:ख प्रकट करते हुए दिवंगत आत्माओं की शान्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की है। उन्होंने हादसे में घायल लोगों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करते हुए अधिकारियों को उनका समुचित उपचार सुनिश्चित करने के लिए निर्देशित किया है।

तमिलनाडु में मंत्री के.एन. नेहरु पर ईडी की रेड

चेन्नई, 07 अप्रैल। तमिलनाडु में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के अधिकारियों ने सोमवार को राज्य के नगर प्रशासन मंत्री के एन नेहरू और प्रमुख रियल एस्टेट फर्म टू वैल्यू होम्स (टीवीएच) के परिसरों पर छापे मारे।

ईडी अधिकारियों ने मंत्री के तिरुचि स्थित आवास, उनके भाइयों के परिसरों और टीवीएच के कार्यालय सहित, 20 से अधिक स्थानों पर एक साथ छापे मारे गए। टीवीएच द्वारा कथित मनी लॉन्ड्रिंग और माल एवं सेवा कर (जीएसटी) चोरी के आरोपों पर छापे मारे गए।

- **ईडी ने उनके व उनके भाइयों के आवासों व कार्यालय परिसरों पर रेड की और तलाशी ली।**

टीवीएच की स्थापना मंत्री के दिवंगत भाई केएन रामजयम ने की थी। छापे के दौरान केन्द्रीय अर्धसैनिक बलों ने ईडी टीमों को सशस्त्र सुरक्षा प्रदान की।

इस दौरान मंत्री मौजूद नहीं थे। वे राज्य विधानसभा सत्र में भाग ले रहे थे।

नेहरू और रामजयम के तिरुचि स्थित आवासों पर तथा उनके छोटे भाई मणिवन्नन के कोयंबटूर स्थित आवास पर छापे मारे गए।

अरनोद में 5 करोड़ की एमडी ड्रग बरामद

खेत पर बने मुर्गीखाने से ड्रग बनाने की सामग्री, दो बंदूक, पिस्टल तथा कारतूस भी मिले

- **एसपी विनीत कुमार बंसल ने बताया कि मुखबिर की सूचना पर तीन भाईयों के खेत पर दबिश दी गई, जिसमें एक भाई फरदीन खान को भी गिरफ्तार किया गया है।**

जयपुर, 7 अप्रैल। प्रतापगढ़ जिले की अरनोद थाना पुलिस ने रविवार को थाना इलाके के नोंगावा स्थित एक मुर्गी फार्म पर दबिश देकर 01 किलो 650 ग्राम एमडी ड्रग और ड्रग बनाने में प्रयुक्त 03 किलो 330 ग्राम क्रिस्टल पाउडर और 01 किलो सफेद पाउडर जब्त किया, एवं कुछ हथियार तथा एक बिना नम्बरी बाइक भी जब्त की और आरोपी फरदीन खान पठान पुत्र रऊफ उर्फ भय्यू लाला (25) निवासी नोंगावा को गिरफ्तार किया है। जब्त एमडी ड्रग व रॉ मेटेरियल की अनुमानित कीमत करीब 5 करोड़ रुपए है।

एसपी विनीत कुमार बंसल ने बताया कि रविवार को गश्त के दौरान एसएचओ अरनोद, हजारी लाल को मुखबिर से सूचना मिली कि तीन भाई फरदीन खां, नदीम खां, शेर दिल उर्फ दूदू पुत्र रऊफ उर्फ भय्यु लाला पठान निवासी नोंगावा, नागदेडा रास्ते पर स्थित खेत पर बने मुर्गीफॉर्म पर अवैध मादक पदार्थ रखकर मादक पदार्थ की तस्करी का कार्य करते हैं। इस सूचना पर एसपी बंसल के निर्देश पर कार्रवाई के लिए अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक परबत सिंह और सीओ वृत अरनोद, चन्द्रशेखर पालीवाल के मार्गदर्शन एवं एसएचओ हजारी लाल के नेतृत्व में गठित पुलिस टीमों ने मुर्गीफार्म पर दबिश देकर वहां मौजूद तस्कर फरदीन खान पठान को डिटेन कर लिया और तलाशी ली।

मुर्गी फॉर्म की तलाशी लेने पर एक पुरानी एक नाल 12 बोर और एक दुनाली 12 बोर बन्दूक, इनके 56 जिंदा कारतूस, एक पुरानी देशी पिस्टल मय मैगजीन, 5 राउण्ड 7.65 एमएम कारतूस, एक छोटी वाली मैगजीन, 100 जिंदा राउण्ड .22 एमएम कारतूस, चार इलेक्ट्रॉनिक कांटे मिले, साथ ही, पॉलीथीन की सात थैलियों से 1 किलो 650 ग्राम एमडी ड्रग तथा 3 अन्य थैलियों से ड्रग बनाने में सहायक 3 किलो 350 ग्राम सफेद क्रिस्टल पाउण्डर तथा एक किलो सफेद पाउडर मिला तथा मौके पर एक बिना नंबर की बाइक खड़ी मिली। अवैध ड्रग, हथियार, कारतूस इत्यादि जब्त कर आरोपी फरदीन खान पठान को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। थाना अरनोद पर प्रकरण दर्ज किया गया तथा अग्रिम अनुसंधान किया जा रहा है। कार्रवाई करने वाली टीम में एसएचओ हजारी लाल सहित, एएसआई प्रेम लाल, हेड कांस्टेबल दिनेश दास, मनोज, दिलीप सिंह, कांस्टेबल दिनेश कुमार, नितेश एवं कांस्टेबल चालक जगपाल सिंह शामिल थे।

8 व 9 अप्रेल को गुजरात ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

में हुआ। इसकी अध्यक्षता पार्टी अध्यक्ष हकीम अजमल खाँ ने की थी। इस बार भी, उसी कहानी की पुनरावृत्ति हुई, अर्थात वे भी कांग्रेस से अलग हो गये। कांग्रेस अधिवेशन चौथी बार 19-21 फरवरी, 1938 को नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की अध्यक्षता में गुजरात के हरिपुरा में हुआ। बोस ने गांधी जी के उम्मीदवार को हरा दिया तथा यह घटना पार्टी में बड़े मतभेदों का कारण बन गई तथा नेताजी ने पार्टी छोड़ दी।

कांग्रेस अधिवेशन पाँचवी बार 6-7 जनवरी, 1961 को नीलम संजीवा रेड्डी की अध्यक्षता में गुजरात के भावनगर में हुआ। इसके बाद, कांग्रेस का टूटना सर्वविदित है। कांग्रेस विभाजित हो गई।

कांग्रेस अधिवेशन छटी बार मल्लिकार्जुन खड़गे जी की अध्यक्षता 8-9 अप्रैल, 2025 को एक बार फिर गुजरात के अहमदाबाद में हो रहा है। 8 अप्रैल को विस्तारित कांग्रेस वर्किंग कमेटी (सीडब्ल्यूसी) की मीटिंग सरदार पटेल मैमोरियल में होगी तथा अगले दिन साबरमती नदी के तट पर एआईसीसी अधिवेशन होगा।

देखना यह है कि गुजरात में हो रहे इस अधिवेशन के बाद क्या होगा।

'क्या कार्यवाही शुरु...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

आधा दर्जन से अधिक आईपीएस अधिकारी भी आए। अदालत ने कहा कि पुलिस नाबालिग गुमशुदाओं के मामले में गंभीर नहीं है। यदि रिपोर्ट दर्ज होने के दो-तीन दिन में जांच शुरू हो जाए तो लापता की बरामदगी की संभावना बढ़ जाती है। अदालत ने कहा कि आईजी अजयपाल लांबा के नेतृत्व में पुलिस ने एक साथ 827 बदमाशों को गिरफ्तार किया है। जब इन बदमाशों को पकड़ा जा सकता है तो फिर नाबालिग लड़कियों के मामलों में गिरफ्तारी या अभियान क्यों नहीं चलाए जा रहे। अदालत ने कहा कि नाबालिगों की बरामदगी को लेकर विशेष प्रयास किए जाने चाहिए। डीजीपी को ऐसे मामलों की मॉनिटरिंग करनी चाहिए।

डीजीपी ने अदालत को बताया कि पुलिस लापता लोगों की गंभीरता से तलाश करती है। पुलिस ने 96 फीसदी मामलों में लापताओं की बरामदगी की है। वहीं, करीब 6500 लापताओं की तलाश की जा रही है। हर जिले में इसके लिए प्रकोष्ठ बना हुआ है और लापताओं की तलाश के लिए प्रयास किए जा रहे हैं। गौरतलब है कि शहर के रामगंज और प्रताप नगर सहित, अन्य थाना इलाकों से लापता हुए नाबालिगों की बरामदगी नहीं होने पर दायर बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिकाओं पर सुनवाई करते हुए, अदालत ने डीजीपी को पेश होकर अपना जवाब देने को कहा था।

एकल पट्टा प्रकरण में...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

और वागीश कुमार ने कहा कि पाठक ने ही सुप्रीम कोर्ट में एसएलपी लगाई थी। उन्होंने ट्रायल कोर्ट में भी पक्षकार बनाए जाने की अर्जी लगाई थी। इस पर बाजवा ने कहा कि पाठक के खिलाफ कई आपराधिक केस दर्ज हो चुके हैं। तो इसके जवाब में पाठक की ओर से कहा गया कि पूर्व मंत्रियों व अफसरों के खिलाफ उसने कई मुद्दे सार्वजनिक किए थे, इसलिए उसके खिलाफ झूठे केस दर्ज हुए हैं। इस बीच, अदालती समय समाप्त होने पर एकलपीठ ने मामले की सुनवाई मंगलवार तक टाल दी। दरअसल, राज्य सरकार ने इस मामले में दो अर्जियां दायर की हैं। इनमें कहा गया है कि ट्रायल कोर्ट के समक्ष दायर क्लोज़र रिपोर्ट्स अधूरी व दोषपूर्ण साक्ष्यों पर की गई जांच के आधार पर थीं। इसके चलते ही पूर्व मंत्री शांति धारीवाल को बरी किया था। इसकी जांच के लिए गठित हाईकोर्ट के पूर्व जस्टिस आरएस राठौड की कमेटी ने भी मामले की समीक्षा में प्रारंभिक रिपोर्ट में कई गंभीर खामियां बताई थीं। ऐसे में मामले में जांच की जानी चाहिए। वहीं, एसीबी कोर्ट ने एकल पट्टा मामले में लिप्त तत्कालीन सरकारी अफसरों के खिलाफ दर्ज मुकदमा वापस लेने का प्रार्थना पत्र खारिज कर दिया था।

वक्फ बिल के खिलाफ दायर याचिकाओं पर समय रहते सुनवाई के लिए सुप्रीम कोर्ट ने सहमति दी

याचिकाकर्ताओं की तरफ से पेश वरिष्ठ अधिवक्ताओं ने कपिल सिब्बल व अभिषेक मनु सिंघवी के आग्रह पर कोर्ट ने निर्णय दिया

- **वक्फ बिल के खिलाफ असदुद्दीन ओवैसी, कांग्रेस के मोहम्मद जावेद, आप पार्टी के अमानतुल्लाह खान सहित तीन संगठनों ने याचिका दायर की है।**

नयी दिल्ली, 07 अप्रैल। उच्चतम न्यायालय ने सोमवार को कहा कि वह वक्फ (संशोधन) अधिनियम-2025 की वैधता को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर समय रहते विचार करेगा।

मुख्य न्यायाधीश संजीव खन्ना तथा न्यायाधीश संजय कुमार और के वी विश्वनाथन की पीठ ने कुछ याचिकाकर्ताओं की ओर से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल सिब्बल और ए एम सिंघवी के शीघ्र सुनवाई के लिए तत्काल उल्लेख किए जाने के बाद समय रहते याचिका पर विचार करने पर सहमति व्यक्त की। संसद के दोनों सदनों में संबंधित विधेयक पास होने के बाद पांच अप्रैल को विधेयक को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु की मंजूरी मिल गई।

वक्फ (संशोधन) विधेयक (संसद के दोनों सदनों में पारित हो गयी था, लेकिन तब राष्ट्रपति की मंजूरी नहीं मिली थी) की वैधता को चुनौती देने वाली कई याचिकाएं पहले ही दायर की जा चुकी हैं। याचिकाएं दायर करने वालों में कांग्रेस सांसद मोहम्मद जावेद, ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन प्रमुख एवं सांसद असदुद्दीन ओवैसी और दिल्ली में आम आदमी पार्टी के विधायक अमानतुल्लाह खान शामिल हैं। एसोसिएशन फॉर प्रोटेक्शन ऑफ सिविल राइट्स, जमीयत उलमा-ए-हिंद, समस्त केरल जमीयतुल उलमा जैसे संगठनों ने भी शीर्ष अदालत में रिट याचिकाएं दायर की हैं। उनकी याचिकाओं में शीर्ष अदालत से अधिनियम को असंवैधानिक और संविधान के अनुच्छेद 14, 15, 21, 25, 26 और 300-ए का उल्लंघन करने वाला घोषित करने का निर्देश देने की भी मांग की गई। याचिकाओं में प्रतिवादी केंद्र सरकार और कानून एवं न्याय मंत्रालय को इसके प्रावधानों को लागू करने या लागू करने से रोकने का आदेश देने की गुहार लगाई गई है।

नये वक्फ कानून 'एकीकृत वक्फ प्रबंधन, सशक्तीकरण, दक्षता और विकास अधिनियम, 1995' ने 'वक्फ अधिनियम, 1995' की जगह ली है।

स्टालिन ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

अपनी इसी ताकत के बल पर, स्टालिन किसी भी घटना तथा स्थिति को वह रंग देने में सफल रहते हैं, जो देना वे चाहते हैं, और 2026 के राज्य विधानसभा चुनावों के लिए वे ऐसा करना शुरु कर चुके हैं।

भारत और नेपाल के सुप्रीम कोर्ट में समझौता

नयी दिल्ली, 07 अप्रैल। भारत और नेपाल के न्यायपालिकाओं के बीच आपसी सहयोग के लिए समझौता ज्ञापन पर सोमवार को हस्ताक्षर किए गए।

शीर्ष अदालत की ओर से एक बयान जारी कर यह जानकारी दी गई।

बयान में कहा गया है,भारत के उच्चतम न्यायालय ने आज दोनों देशों के बीच न्यायिक सहयोग को विकसित करने, बढ़ ावा देने और मजबूत करने के लिए नेपाल के सर्वोच्च न्यायालय के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। बयान के मुताबिक, नेपाल के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति प्रकाश मान सिंह राउत और भारत के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति संजीव खन्ना की उपस्थिति में समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

यह भी कहा गया है कि समझौता ज्ञापन का उद्देश्य दोनों देशों तथा उनके लोगों के बीच मौजूद सौहार्दपूर्ण और मैत्रीपूर्ण संबंधों से प्रेरित होकर उन देशों की न्यायपालिकाओं के बीच सहयोग को विकसित करना, बढ़ ावा देना और मजबूत करना है। बयान के मुताबिक, यह समझौता ज्ञापन न केवल कानून और न्याय के क्षेत्र में नवीनतम विकास पर सूचनाओं के आपसी आदान-प्रदान को प्रोत्साहित करेगा, बल्कि यात्राओं के आदान-प्रदान, अल्पकालिक और दीर्घकालिक प्रशिक्षण और शैक्षिणक कार्यक्रमों जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से न्यायपालिका के विभिन्न स्तरों पर न्यायाधीशों और अधिकारियों के बीच बातचीत को भी बढ़ावा देगा।

तीन महीने में...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

बेरोजगारी की स्थानीय समस्या तथा पलायन की तरफ सरकार और जनता का ध्यान आकृष्ट किया जा सके। संयोगवश, बेगूसराय एनएसयूआई के राष्ट्रीय अध्यक्ष कन्हैया कुमार का गृह नगर भी है। जहाँ यह संभावना दिखाई दे रही है कि भाजपा आगामी चुनाव जेडी (यू) नेता तथा सत्तासीन मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में लड़ेगी, वहीं जेडी (यू) खेमे में ऐसी प्रबल शंकाएं है कि चुनावों के बाद, भाजपा नीतीश कुमार की स्थिति महाराष्ट्र के एकनाथ शिंदे जैसी बना देगी। ज्ञातव्य है कि नीतीश कुमार अब अपने पूर्व सशक्त स्वरुप के बहुत ही कमजोर संस्करण हो गये हैं। और तो और, उनके मानसिक संतुलन को लेकर भी सवाल उठने लगे हैं। इस बीच, संसद में वक्फ विधेयक पारित होने के बाद, मुस्लिम मतदाताओं का नीतीश कुमार और उनकी जेडी (यू) से मोहभंग होने की प्रबल संभावनाएं हैं। यह परिदृश्य नवम्बर में होने वाले राज्य विधानसभा चुनावों में आजेडी- कांग्रेस गठबंधन एक नई आशा का संचार करता प्रतीत हो रहा है।

तेलंगाना के ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

वन्यजीवों के प्रभाति होने वाली तस्वीरें और वीडियो वायरल हो गए थे, जिससे दिया मिर्जा, जॉन अब्राहम, रवीना टंडन जैसे कई सेलिब्रिटिज ने छात्रों के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे हैं, जिसमें कंचा गाचीबोवली की 400 एकड़ वन भूमि पर पेड़ काटकर आईटी पार्क बनाने की योजना है।

2 अप्रैल को, दिया मिर्जा ने छात्रों के समर्थन में एक्स पर एक पोस्ट साझा की और लिखा, "छात्र उस भविष्य के लिए अपनी आवाज उठा रहे हैं जहां प्रकृति फलती-फूलती है।

आईटी पार्क नहीं, जंगल युवा पीढ़ी को एक सतत स्थिर भविष्य का मौका देते हैं। जैव विविधता की कीमत पर 'विकास' असल में विनाश है। हैदराबाद के गाचीबोवली में कंचा जंगल को बचाएं।"

उनकी पोस्ट में कोई भी चित्र नहीं था। उन्होंने इस मामले में सुप्रीम कोर्ट के आदेशों का उल्लेख करते हुए भी कुछ पोस्ट साझा की थीं।

चीन, यूरोपियन यूनियन, कैनडा, मैक्सिको...

- **डीमॉन ने इसी लय में आगे कहा, अब अमेरिका में दाम बढ़ेंगे, इन्वैस्टमैंट घटेगा, व्यापार बाधित होगा और अन्ततोगत्वा अमेरिका में बेरोजगारी बढ़ेगी तथा मंदी का दौर आयेगा।**
- **पर, ट्रम्प पर इन टिप्पणियों का कोई असर नहीं है, वे अभी भी आक्रमक मुद्रा में हैं।**

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कारण चीन के उत्पादों पर अमेरिका में अंतिम शुल्क 54 प्रतिशत से अधिक हो गया है। वास्तव में, यूरोपियन यूनियन से लेकर चीन, कैनडा और मैक्सिको तक, सभी प्रमुख अर्थव्यवस्थाएँ अमेरिकी वस्तुओं पर अपने शुल्क बढ़ा रही हैं। यह कल्पना करना कठिन है कि अमेरिका इन संयुक्त शुल्क कार्रवाइयों का सामना करते हुए अपनी अर्थव्यवस्था को कैसे बनाए रखेगा।

ऐसे प्रतिकूल आर्थिक हालात का सामना करते हुए, जो महंगाई और गंभीर आर्थिक कठिनाइयों को बढ़ा रहे हैं, डॉनल्ड ट्रंप ने अमेरिकी जनता से आग्रह किया कि वे इन असुविधाओं और कठिनाइयों को अस्थायी रूप से सहन करें, ताकि भविष्य उज्ज्वल हो सके। ट्रंप ने टैरिफ को एकतरफा उपाय के रूप में सोचा था, जिसे अमेरिका लागू करे और अन्य देश उसे चुपचाप स्वीकार कर लें।

स्थिति यह है कि अमेरिका के प्रभावशाली और बहुत रूढ़िवादी व्यापारिक नेता भी अब खुलेआम डॉनल्ड ट्रंप की आर्थिक नीतियों की आलोचना कर रहे हैं। जे.पी. मॉर्गन के अध्यक्ष और प्रमुख, जैमी डीमॉन ने ट्रंप के दूसरे कार्यकाल की आर्थिक नीतियों के प्रतिकूल प्रभावों की ओर इशारा किया है।

डीमॉन ने आशंका व्यक्त की है कि अमेरिका ने अपनी आर्थिक ताकत, सैन्य शक्ति और "नैतिक मूल्यों" के आधार पर वैश्विक व्यवस्था में एक "विशेष स्थान" का आनंद लिया है, जिसमें आर्थिक और राजनीतिक स्वतंत्रता का समर्थन भी शामिल है। उन्हें डर है कि वर्तमान नीतियों के कारण यह सब खत्म हो जाएगा। डीमॉन ने बैंक के शेयरधारकों को लिखे अपने वार्षिक पत्रों में उल्लेख किया कि प्रशासन द्वारा अपनाई गई नीतियों के परिणामस्वरूप मूल्य स्तरों में वृद्धि, निवेश में कमी, व्यापार में गिरावट और अंतत: अमेरिका में बेरोजगारी और मंदी बढ़ेगी।

जब पत्रकारों ने ध्वस्त होते स्टॉक मार्केट को लेकर ट्रंप से सवाल किया, तो ट्रंप ने अपने पारंपरिक रुख से सवालों को बेवकूफी भरा बताते हुए कहा कि अन्य देशों ने वर्षों तक अमेरिका का शोषण किया है और अब उनकी नीतियाँ अमेरिका के खिलाफ हुए अन्याय को उलट रही हैं।

ट्रंप का दावा है कि उनकी नीतियों के परिणामस्वरूप अरबों डॉलर अमेरिका में आ रहे हैं और अमेरिकी अर्थव्यवस्था को मजबूत कर रहे हैं। ट्रंप ने यूरोप पर भी नाराजगी जताई, यह कहते हुए कि यूरोप ने अमेरिका के साथ बुरा व्यवहार किया है और अमेरिका का पैसा, निवेश और फैक्टरियाँ ले ली हैं।

ट्रंप के इस उन्माद के बीच, वैश्विक अर्थव्यवस्था एक विशाल भूकंप का सामना कर रही है और भविष्य अब पूरी तरह अनिश्चित है।

पुनर्गठन व परिसीमन ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

वे चुनाव कार्यक्रम पेश कर बताए कि पंचायतों के चुनाव कब होंगे। याचिकाकर्ता की ओर से अधिवक्ता प्रेमचंद देवंदा ने बताया कि पंचायत राज विभाग ने 16 जनवरी 2025 को नोटिफिकेशन जारी कर पंचायती राज अधिनियम के प्रावधानों की अवहेलना करते हुए पंचायतों के साल 2025 में होने वाले चुनावों को स्थगित कर निवर्तमान सरपंचों को प्रशासक लगा दिया है।

नोटिफिकेशन में चुनाव कराने की कोई सीमा तय नहीं है। नियमानुसार न तो पंचायतों का कार्यकाल बढ़ाया जा सकता है और न उनमें प्रशासक लगाए जा सकते हैं, जबकि राज्य सरकार ने चुनाव स्थगित कर, न केवल निवर्तमान सरपंचों को प्रशासक लगाया, बल्कि उन्हें वित्तीय अधिकार भी दे दिए।

सलेक्टिव मीडिया, कोटा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी रोड, कोटा से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा आर.एन.आई. नं. 28446/75, जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, फैक्स : 0141-2373513, बीकानेर कार्यालय : कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371, उदयपुर कार्यालय: आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, अजमेर कार्यालय: राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन226422,226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय : एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908